vk"k/kh; [kjirokj

vk"k/kh; [kjirokj

ulkekU; d fVdkÅ LokLF; d fy, mi;kxh*

y[kd

MkO fot; dekj ^mejko*

एम0 एस0–सी0 (एजी0), पीएच0 डी0

ioDrk ,o v/;{k

m|ku foKku foHkkx

चौ0 शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य (पी0 जी0) कालेज

माछरा, मेरठ (उ0 प्र0)

,o

Jhefr oUnuk mejko

एम0 एस–सी0 (वनस्पति विज्ञान)

forjd

yk;y cd fMik

ejB

idk'kd

इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

forjd %

लॉयल बुक डिपो

आर0 जी0 इण्टर कालेज रोड,

मेरठ–250001 (उ0प्र0)

फोन – 0121–2663378

प्रथम संस्करण : 2005

मूल्य : :0 70@& (सत्तर रूपये)

Vkbi&lfVx

ऊँ शिव कम्प्यूटर

47/2, जागृति विहार, मेरठ

मुद्रक :

ije iT; firk th
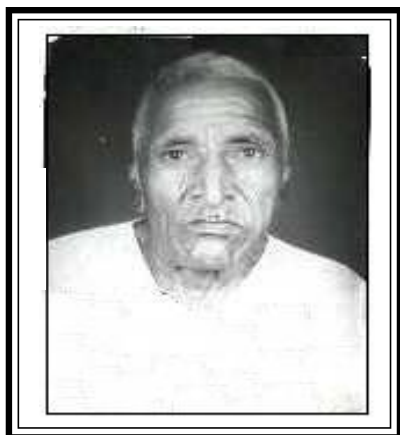
स्व0 श्री शिव लाल

की

पुण्य स्मृति में

भूमिका

पृथ्वी में जीवन विकास के विभिन्न चरणों में 'वनस्पति' का उद्भव मानव
से बहुत पहले हुआ। भोजन श्रंखला में भी ये वनस्पतियां किसी दूसरे पर
रहते हुए अपना भोजन स्वयं निर्मित करती हैं जबकि मानव सहित बाकी
पने भोजन एवं ऊर्जा के लिए पूर्णतः पेड़–पौधों पर आश्रित हैं। आदिकाल
नस्पतियों का उपयोग विभिन्न रूपों में होता आ रहा है। संस्कृति विकास
ही इनसे उत्पन्न खाद्य पदार्थों के लिए बहुत से पेड़–पौधों की बाकायदा
ने लगी। लेकिन आर्थिक या उपयोगी दृष्टिकोण से उगाये गये पेड़–
अलावा ज्यादातर वनस्पतियां अनचाहे ही जंगली रूप में चारों ओर उगी
। चाहे फसल बोयें या न बोयें फिर भी चारों तरफ हरियाली दिखायी देती
ी पर हरियाली इन्हीं जंगली वनस्पतियों के कारण ज्यादा दिखाई देती
गयी आर्थिक–उपयोगी एवं वांछित फसल या पेड़–पौधों के अलावा
रूप से अपने आप उग आने वाली ये अवांछित वनस्पतियां *'खरपतवार'*
ी हैं। ये अवांछित जंगली पौधे खेत–खलिहान, बाग–बगीचों, बंजर–परती
जाऊ–अनुपजाऊ सभी भूमियों में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये एकवर्षीय,
या बहुवर्षीय प्रकृति के होते हैं। सूखा, ज्यादा नमी, जलभराव, उच्च ताप
य विपरीत परिस्थितियों के प्रति अति सहिष्णु ये खरपतवार किसी भी
फसल के साथ पोषक तत्व व पानी हेतु अत्यधिक प्रतियोगिता करते हैं।
रूप फसलोत्पादन में विपरीत प्रभाव पड़ता है। वर्षाऋतु एवं नम जलवायु
ारों के पनपने के लिए सबसे अनुकूल होती है लेकिन खरपतवार के रूप
ये पौधे खरीफ, रबी एवं जायद सभी मौसमों में देखे जाते हैं। बागवानी
ाद्यान्न फसलोत्पादन में खरपतवारों का पनपना एक प्रमुख सस्य समस्या
अध्ययन के अनुसार प्रमुख खाद्यान्न गेहूं की एक हेक्टेयर फसल में
ारों की अनियंत्रित बढ़वार से लगभग 20 किलोग्राम नत्रजन का नुकसान
फलस्वरूप गेहूं की उपज में औसतन 12 कुन्तल की कमी आ जाती है।
रपूर फसलोत्पादन हेतु खरपतवार नियंत्रण एक अतिआवश्यक सस्य क्रिया
कन खेतों की निकाई–गुड़ाई करते समय इन्हें बिल्कुल बेकार समझकर न
जहां एक ओर ये खरपतवार हमारी वांछित आर्थिक फसलों को भारी
पहुचाते हैं वहीं इनमें से अनेक औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। अपने
एवं आरोग्यकारी प्रभावों से मनुष्य के विभिन्न विकार एवं कष्ट दूर करने
न अद्भुत वनस्पतियों को हम सभी *'जड़ी–बूटी'* कहते हैं। मानव शरीर को
रखने हेतु इन वनस्पतियों का प्रयोग सर्वथा इतर प्रभाव रहित लाभदायक

तथा सौम्य प्रभाव वाला होता है।

संस्कृति के विकास के साथ ही मनुष्य ने विभिन्न रोगों के
वनस्पतियों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था जिसका उल्लेख विभिन्न प्र
में मिलता है। लगभग 3000 ईसा पूर्व वैदिक काल में विकसित
चिकित्सा पद्धति 'आयुर्वेद' पूर्णतः जड़ी–बूटियों पर आधारित थी औ
उतनी ही प्रासंगिक है। भारतवर्ष में पौधों के औषधीय गुणों के सर्वप्र
प्रमाण 'ऋग्वेद' में मिलते हैं। 'अथर्ववेद' में 275 से अधिक पेड़–पौधों
गुणों का विस्तार से उल्लेख है। चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्धित प्रा
'चरकसंहिता' एवं 'सुश्रुत संहिता' में क्रमशः 1100 एवं 1270 पौधों
उपयोग का विस्तार से वर्णन है। इस प्रकार लगभग सभी प्राचीन
पेड़–पौधों के औषधीय उपयोग के बारे में प्रमाणिक तथ्य मिलते हैं। भ
हजार से अधिक वनस्पति प्रजातियों का उपयोग विभिन्न रोगों के उपच
जाता है। *'इण्डियन मैटेरिका–मेडिका'* के अनुसार विभिन्न बीमारियो
होने वाली लगभग 2000 औषधियों में से 1800 से अधिक किसी
वनस्पति का उत्पाद हैं। जड़ी–बूटी आधारित आयुर्वेदिक औषधियो
अनुभवी बुजुर्गों एवं वैद्यों के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित ह
लेकिन धीरे–धीरे वैद्यों व नीम–हकीमों द्वारा ऐसी अमूल्य जानकारी
को न बताये जाने और भौतिक सुख भोग में लिप्त नौजवानों द्वारा ऐसी
प्राप्त करने की रूचि के अभाव में प्रकृति प्रदत्त वनौषधियों को अब
बुजुर्ग लोग ही पहचानते हैं। इस प्रकार ये जंगली एवं अवांछित वनस्
'खरपतवार' न होकर मानव समाज के लिए औषधीय महत्व भी
गांव–नगर, खेत–खलिहान, बाग–बगीचों तथा परती व बंजर भूमिय
उगने वाले इन अवांछित पौधों को भौतिकता में व्यस्त आज का म
'खरपतवार' के रूप में पहचानता है और निकाई–गुड़ाई एवं सफाई
इन्हें उखाड़ या काटकर फेंक देता है। यदि किन्हीं पौधों को पहचानत
उनके बहुमूल्य औषधीय गुणों से अनभिज्ञता के कारण उनसे आरोग्य
उठाने में असमर्थ है। अतः निकाई–गुड़ाई एवं आसपास सफाई
खरपतवारों को बिल्कुल बेकार समझकर न फेंकें। इनका बहुमूल्य औष
जानकर आप भी इन्हें उखाड़ फेंकने के बजाय रोगोपचार में इनका
रहित सदुपयोग कर सकते हैं। प्रस्तुत ^vk"k/kh; [kjirokj*
अनुभवी ग्रामीण बुजुर्गों एवं विभिन्न प्रमाणिक पत्र–पत्रिकाओं तथा
अनेक खरपतवारों के औषधीय गुणों के बारे में प्राप्त बहुमूल्य जान
भाषा में देने का प्रयास किया गया है। विभिन्न खरपतवारों का साम

भूमिका

नस्पतिक नाम, क्षेत्रीय भाषाओं में विभिन्न नाम, उनका सरल एवं संक्षिप्त तथा रेखाचित्र देकर पुस्तक को सरल, बोधगम्य तथा अति उपयोगी गया है। पुस्तक को पढ़कर खेत–खलिहान एवं घर के आसपास उगे औषधीय खरपतवारों की आरोग्यकारी क्षमताओं का सदुपयोग करके आप बीमारियों का उपचार घर में ही करके टिकाऊ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर हैं।

जनसामान्य के लिए उपयोगी यह कृति परमपूज्य पिता जी स्व0 श्री ल के चरणों में समर्पित है जिनकी प्रेरणा से ऐसे औषधीय पौधों के बारे ने का विचार आया। इसमें उल्लिखित विभिन्न पौधों के अनेकों मौलिक गुणों की अमूल्य जानकारियां उन्हीं के द्वारा प्रदत्त हैं। हम पूजनीय ों विशेषकर डा0 ए0 आर0 सिंह के अति ऋणी हैं जिनकी शिक्षा–दीक्षा र्गदर्शन से पुस्तक लेखन तक का पायदान प्राप्त हुआ है। पुस्तक के काशन की प्रेरणा और सहयोग हेतु पूजनीय माता जी श्रीमती गोविन्दी, य अग्रज श्री कृष्णकुमार वर्मा व श्री अजयकुमार वर्मा (भाई), श्रीमती ली(बहन) का लेखक द्वय हृदय से आभारी हैं। इस दौरान प्यार–दुलार से व विचारों के लिए अपने सुपुत्र चि0 प्रखर एवं भतीजा–भतीजी –चि0 लोकेन्द्र, अजीत, प्रवीण व कु0 रश्मि पटेल को आशीर्वचन तथा सगे– यों व अभीष्ट मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हम उन लेखकों के ारी हैं जिनकी पुस्तकों/रचनाओं से प्रमाणिक जानकारी प्राप्त कर इस को मूर्त रूप मिला है। पाण्डुलिपि को शुद्ध व सुन्दर ढ़ंग से टाइप–सेटिंग लिए श्री मनीष शर्मा *(ॐ शिव कम्प्यूटर, 47/2 जागृति विहार, मेरठ)* का ार प्रकट करते हैं।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अपने विचार व सुझाव भेजने हृदय पाठकों के सदा आभारी रहेगें।

ी, 2005 y[kd};

vk"k/kh; [kjirokjksa dh lwph

औषधीय खरपतवारों की सूची

1

da?kh ;k c

vcfVyku bf.Mde t

Abutilon indicum

dqy % ekyoslh

vU; izpfyr uke

इण्डियन मेलो (अंग्रेजी), ककई, काकही (हिन्दी), कंकटी पोटरी, पेटरी (बंगाली), कंगोरी (मराठी), मदमी (पंजाबी), पनियारा टु टुट्टूरूवेन्डा (तेलगू), टुट्टी (मलयालम)

igpku

यह खरीफ मौसम में बीज से उगने वाला काष्ठीय झाड़ीनुमा खरपतवार है। खाली पड़ी भूमियों एवं सड़क व रेलपथों के किनारे पुरानी मेड़ों तथा बागों में इसे खूब देखा जाता है।

चित्र–1 d?kh ¼vcfVyku bf.Mde½
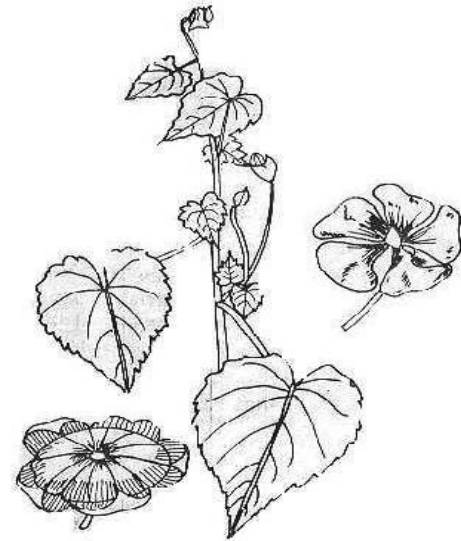
इसका पौधा सीधा, झाड़ीय एवं मखमली–धूसर तथा 60–200

। लम्बे पर्णवृन्त युक्त हृदयाकार पत्तियाँ सम्पर्ण या असमान दांतेदार एवं होती हैं। जिनकी निचली सतह सफेद ऊनी कपडे नुमा मखमली होती है। के अक्ष एवं शाखाओं के अग्रभाग पर वर्षाऋतु में पीले रंग के एकल पुष्प जो शाम को खुलते हैं। गोल फली का शीर्ष चपटा होता है जो शुरू में पतली से ढ़का रहता है तथा फटने पर कठोर बालों के गुच्छे के रूप में फैलता ी में 20 खण्ड होते हैं जिनमें बिना रोयें वाले चिकने बीज निकलते हैं।

h; mi;kx

तना, जड़ एवं पत्तियों में 'एस्परेजिन' क्षाराभ एवं श्लेष्मक पदार्थ पाया । पत्तियां मार्दवकर एवं शांति प्रदायक होती हैं। इनका काढ़ा आंवयुक्त , कास (ब्रोंकाइटिस) , सूजाक, मूत्राशय एवं मूत्रनली शोथ, बुखार एवं वक्ष में आरोग्यकारी है। दांत एवं मसूडों के दर्द में इससे कुल्ला करने पर मिलता है। वृण, फोड़ा एवं अल्सर में पत्तियों की पॉल्टिस बांधते हैं। छाल मीय क्वाथ पौष्टिक, स्तम्भक एवं मूत्र वर्धक होता है। जड़ का काढ़ा मूत्रल ार में शांति प्रदायक होता है। बीजों का चूर्ण या क्वाथ रेचक, कामोत्तेजक, र्तक तथा कफनिस्सारक के रूप में उपयोगी है। सूजाक, मूत्राशय शोथ में पस आने पर इसका प्रयोग आरोग्यकारी होता है। बच्चो के गुदामार्ग ों का धुआं करने से धागे सदृश्य कीड़े (चुन्ना) मर जाते हैं।

—o—

2

[kksdyh ;k c

,dfyQk bf.M

Acalypha in

dy % ;Qkfc,lh

vU; ipfyr uke

इण्डियन एकेलिफा, थ्री सीडेड मर्करी (अंग्रेजी), हरित मंजरी, अ (संस्कृत), मुक्तजरी, मुक्तझुरी (बंगाली), खोखाली (मराठी), इन्द्रमणीर वांची कांटो (गुजराती), कुप्पई (कन्नड़), कुप्पाई मेणि (तमिल), कुप्पामणि कुप्पाईचेट्टू (तेलगू)

igpku

यह सम्पूर्ण भारत में बाग–बगीचों, उपजाऊ खेतों व परती सड़क व रेलपथों के किनारे खाली भूमियों में वर्षा ऋतु में बीज से प एकवर्षीय खरपतवार है।

चित्र–2 [kksdyh ¼,dfyQk bf.Mdk½

इसका शाकीय पौधा सीधा तथा 50–75 सेमी0 ऊंचा होता कोमल रोयें युक्त कोणीय–लम्बी टहनियां होती हैं। पत्तियाँ एकांतर,

अण्डाकार, चिकनी, तीन शिराओं युक्त पतली तथा किनारों पर दांतेदार
। पर्णवृन्त मुलायम एवं पर्णफलक से लम्बा होता है। टहनी के शीर्ष व पत्ती
से लम्बे एवं सीधे पुष्प कणिश (स्पाइक) निकलते हैं जिनमें डण्ठल एवं
रहित एकलिंगी (नर व मादा) पुष्प अलग–अलग होते हैं। ऊपर शिखर पर
ोटे नर पुष्पों के गुच्छे तथा नीचे की तरफ 3–5 के समूहों में बिखरे हुए
ष्प होते हैं। मादा पुष्प में पत्तीनुमा कटा हुआ सहपत्र होता है। फल
का (कैप्सूल) त्रिपालीय व छोटी तथा बढ़े हुए रोमिल सहपत्र से ढ़की रहती
ुटिका के प्रत्येक कक्ष में सूक्ष्म, अण्डाकार व हल्का भूरा एक–एक बीज
।

h; mi;kx

इसका पूरा पौधा, विशेषकर पुष्पन के समय, औषधीय गुणों से भरपूर
में 'एकेलिफिन' क्षाराभ एवं 'सायनोजेनेटिक' ग्लुकोसाइड की प्रचुर मात्रा
। पुष्पन के समय जड़ सहित पूरा पौधा उखाड़कर सुखा लिया जाता है
'एकेलिफा' नामक दवा बनती है। यह कफनिस्सारक, मूत्र वर्धक, वामक
तावर होता है। पुरानी कास (ब्रोंकाइटिस), दमा, गठियावात तथा ठंड
या) में इसका चूर्ण आरोग्यकारी है। बच्चों में श्वास नली शोथ होने पर
का ताजा अर्क तीव्र वमन कराने के लिए प्रयोग किया जाता है, इससे
ंगो से स्राव बढ़ता है। कफ युक्त कास एवं दमा में इनका अर्क शहद के
ने से तुरन्त आराम मिलता है। पत्तियां दस्तावर होती हैं। बच्चों में कोष्ठ
होने पर इनका अर्क मलाशय में प्रवेश कराने से दस्त खुल जाते हैं। लहसुन
पत्तियों का अर्क या क्वाथ उदरकृमि एवं खसरा में उपयोगी है। सर्पदंश
घाव में पत्तियों का अर्क या प्रलेप लगाने से विष प्रभाव समाप्त हो जाता
ासीन रोगी में दबाव से बनने वाले पीडा युक्त घाव, पुराने अल्सर तथा
क्त घावों में पत्तियों की ताजा लेई (पेस्ट) लगाने से आरोग्य मिलता है।
दर्द एवं वात विकार में ताजी पत्तियों का अर्क तेल के साथ मालिश करने
राहत मिलती है। जड का अर्क या चूर्ण का कम मात्रा में प्रयोग कफ
क एवं उत्क्लेशक होता है जबकि ज्यादा मात्रा में प्रयोग दस्तावर एवं
होता है।

—○—

3

yVthjk ;k fpV

,dkbjUFkl vL

Achyranthus as

dqy % vejUFklh

vU; ipfyr uke

प्रिकली चैफ फ्लावर (अंग्रेजी), चिरचीरी (हिन्दी), अपामग
असमिया), अपांग (बंगाली), नायूरिवी (तमिल), उत्तरेनी (तेलगू), कुटर
अंधेड़ी (गुजराती), अघाड़ा (मराठी), उत्तरबी (कन्नड़)

igpku

लटजीरा मुख्यतः खरीफ मौसम में बीज से पनपने वाला
खरपतवार है लेकिन इसकी जड़ जमीन में गहरी जाने के कारण प्रा
पनपता रहता है। यह सम्पूर्ण भारत में बेकार पड़ी भूमियों, खेतों की
सड़कों के किनारे खूब पनपता है।

चित्र–3 yVthjk ¼,dkbjUFkl vLi¡jk½

इसका तना पेन्सिल की तरह का मोटा, गोल, धारियों यु
मुलायम होता है। तने पर स्पष्ट उभार वाली लाल रंग की गांठे होती

लग–अलग हिस्सों में बटा नजर आता है। अण्डाकार व चिकनी पत्तियाँ तने
तिर रूप में लगी रहती हैं। लम्बे व मुलायम पुष्पक्रम पर डण्ठल रहित एवं
लपत्र वाले छोटे व सफेद फूल वर्षा ऋतु में आते हैं जो मुख्यतः एकलिंगी
और शरद ऋतु में भी देखे जा सकते हैं। पुष्पों के दल चक्र नुकीले व
चिपके होते हैं। जब हम इस पौधे से सटकर निकलते हैं तो ये पुष्प कपड़ों
क जाते हैं। इसके फल छोटे व एक बीजपत्री होते हैं। फल का पतला
उतारने पर अण्डाकार, चमकीले व काले रंग के बीज निकलते हैं।

h; mi;kx

लटजीरा का पौधा मूत्रवर्धक, रेचक, पाचक, स्तम्भक, विषहारी तथा
क के रूप में बहुत उपयोगी है। जड़ का क्वाथ एवं अर्क उदर विकार,
चर्मरोग, सिफिलिस, गठिया आदि में लाभप्रद है। बिच्छू, सर्प, बर्र, ततैया
काटने पर ताजी जड़ को पीस कर डंक लगने वाले स्थान पर रखने से
रन्त उतर जाता है। नाभि उखड़ने पर नाभि पर जड़ की लुगदी रखने से
मिलता है। म0 प्र0 की कुछ जन जातियां इसकी जड़ पीसकर
शीशी सिर दर्द तथा आंख दर्द का उपचार करती हैं। पौधे का क्वाथ
कराने में सहायक है। जड़ का चूर्ण काली मिर्च के साथ बच्चों को देने
रोग दूर होता है। जड़ के टुकडे कमर में बांधने से भी आराम मिलता है।

पत्तियों का अर्क या काढ़ा भी सिफिलिस, उदर विकार, अतिसार, पेचिस,
, गठिया वात, चर्मरोग आदि में उपयोगी है। हैजा होने पर पत्तों का अर्क
साथ देना चाहिए। पौधे की राख शहद के साथ लेने से अस्थमा, पेटदर्द
कर खांसी में विशेष लाभ मिलता है। लटजीरा की टहनी की दातून करने
की दुर्गन्ध व पायरिया दूर होता है तथा दांत–मसूड़े मजबूत होते हैं। इसके
सकर खाने से डायबटीज तथा भूनकर शहद के साथ खाने से काली
में तुरन्त लाभ मिलता है। वमन कराने के लिए भी यह उपयोगी है।

—o—

4

fi;kcka ;k v

,/kkrkMk okfl

Adhatoda vasic

dy % ,dcUFkklh

vU; iapfyr uke

मालाबार नट ट्री (अंग्रेजी), वासिका, अडूलसा, बांसा (हिन्दी
(संस्कृत), बकास, वासक (बंगाली), अराथोराई, अडाडोराई (तमिल)
अल्डुसो (गुजराती), अडासरामू (तेलगू), अटलोटाकम (मलयालम), बह
(असमिया), अडुल्सा (मराठी), अडुसोगे (कन्नड़), भकर (पंजाबी)

igpku

यह शाकीय झाड़ीनुमा जंगली पौधा सड़कों व रेलपथों के
शुष्क क्षेत्रों की खाली पड़ी परती भूमियों तथा रिहायशी इलाकों के आ
ऋतु मे खूब उगता है और प्रायः सालभर देखा जाता है। जाड़े एवं
में पुष्पन के समय इसे पहचानना बहुत आसान है।

चित्र–4 vMlk ¼,/kkrkMk okfldk½

यह अत्यधिक शाखाओं युक्त घनी एवं सदाबहार शाकीय झा
सेमी0 की ऊंचाई तक फैलती है। तना में एक ही स्थान से दो या त

ी हैं। शाखाओं में गांठें मोटी व स्पष्ट होती हैं। पत्तियां चक्राकार, –हरी, 10–15 सेमी0 लम्बी व 4–6 सेमी0 चौड़ी एवं भालाकार नुकीली जिन पर शिराविन्यास स्पष्ट दिखाई देता है। पत्तियों में तैलीय पदार्थ के विशेष गन्ध आती है। शाखाओं के अग्रभाग पर मोटे व लम्बे डण्ठल युक्त ाश पर छोटे–छोटे घने सफेद पुष्प आते हैं। डण्ठल सहित पूरा पुष्पक्रम की तरह दिखता है। पुष्प द्विलिंगी एवं असमान दलपत्र वाले होते हैं। पुष्प फेद दलपत्र होते है जिनमें बैंगनी रंग की पतली शिरायें होती हैं। एक ऊपर पत्र सांप के फन की तरह फैला होता है तथा नीचे का दलपत्र होंठ की कला होता है। पुष्प के पुंकेसर दलपत्र से निकलते प्रतीत होते है। कणिश) का प्रत्येक पुष्प एक धारीदार सहपत्र ब्रैक्ट से ढ़का रहता है। फल) में चार चपटे बीज निकलते हैं।

; mi;kx

इसका पूरा पौधा औषधीय रूप से उपयोगी है। इसकी ताजी एवं सूखी से 'वसाका' नामक औषधि बनती है। पत्तियों में 'वासिसीन' नामक क्षाराभ त्रा में पाया जाता है जो तीव्र कफनाशक होता है। पुरानी ब्रोंकाइटिस, फड़ों में गाढ़ा कफ भरने, कफ के थक्के बनने तथा शरीर में ऐंठन होने पर का क्वाथ या अर्क अदरक के साथ पीने से गाढ़ा से गाढ़ा कफ पतला ाहर निकल जाता है। सूखी पत्तियो का चूर्ण शहद के साथ चाटने से खांसी, दमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों की टी. बी. तथा पीलिया आदि में शीघ्र मिलता है। पत्तियों, फूलों एवं जड़ का क्वाथ या चूर्ण मलेरिया बुखार, र, पेचिस, पेटदर्द, पीलिया तथा गठिया वात में भी बहुत फायदेमन्द होता का अर्क नाक में डालने से नकसीर तथा पत्ती की चाय पीने से बदन न, सिरदर्द एवं खांसी में आरोग्य मिलता है। पूरे पौधे के काढ़ा से कुल्ला र पायरिया, मसूड़ों की सूजन तथा मुख के अन्दर छालों में शीघ्र लाभ होता

जोड़ों के दर्द, सूजन, घाव एवं चर्म विकारों में पत्तियों का प्रलेप लगाना उदर कृमि, नियत कालिक ज्वर, ऐंठन, पुराना कफ, सूजाक एवं श्वसन रोगों में जड़ का काढ़ा बहुत असरकारी होता है। फूल एवं फलों का क्वाथ लाभदायक होता है। —o—

vk"k/kh; [kjirokj

5

egdqvk ;k vtxU/k

,thjsVe dkfutkbMl fy-

Ageratum conyzoides L.

dEikfTVh

ipfyr uke

गोटवीड, फ्लॉस फ्लावर (अंग्रेजी), सरहन्द, महकमा (हिन्दी), सहदेवि
उचुन्टी (बंगाली), घन्धाड़ी (पंजाबी), ओसारी (मराठी), पमपीलू (तमिल)

u

महकमा खरीफ ऋतु में बीज से पनपने वाला प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार
जाऊ खेतों, परती भूमियों एवं सड़क व रेलपथों के किनारे इसे आसानी
जा सकता है।

चित्र–5 egdqvk ¼,fthjsVe dkfutk;Ml½

यह 50–90 सेमी0 की ऊंचाई तक सीधा बढ़ने वाला शाकीय पौधा है।
या शाखाओं में छोटे व मुलायम रोयें होते हैं। तना की प्रत्येक गांठ से

लगभग 2–3 सेमी0 लम्बे पर्णवृन्त युक्त दो पत्तियां विपरित दिशा में नि
पत्तियां मुलायम, 5–10 सेमी0 लम्बी व 0.5–3.0 सेमी0 चौड़ी, अण्डाक
एवं किनारों पर छोटे दांतेदार तथा दोनों सतहों पर घने रोयेंदार हो
तो यह सालभर फूलता है लेकिन दिसम्बर से फरवरी तक ज्यादा संर
आते है। शाखित पुष्पक्रम टहनी के सीमाक्ष तथा पत्ती के अक्ष से नि
पुष्पक्रम की प्रत्येक शाखा पर पुष्प शीर्ष (फ्लावर हेड) में 50–70
नलिकाकार व हल्के नीले या सफेद फूल आते हैं। पुष्प 2–3 प
झिल्लीदार एवं नुकीले सहपत्रों से ढ़का रहता है। महकुआ के फूलों
तीक्ष्ण दुर्गन्ध आती है। फल कोणीय, एक बीजीय तथा काला होता
ऊपरी सिरे पर मुलायम रोयें होते है।

vk"k/kh; mi;ksx

इसकी पत्तियों तथा फूलों में तीक्ष्ण दुर्गन्ध युक्त तैलीय प
जाता है। पत्तियों एवं तना का गर्म प्रलेप खाज–खुजली, कुष्ठशोथ,
अन्य चर्म रोगों में बहुत लाभप्रद होता है। खरोंच एवं घावों में पत्तिय
लगाने से घाव जल्दी ठीक होता है। गुदा शोथ एवं खुश्की होने पर इ
लगाना हितकर होता है। प्रसूता स्त्री में गर्भाशय शोथ, मूत्रनली विकार
होने पर योनि छिद्र से इसका अर्क अन्दर पहुंचाने से शीघ्र आराम मिल
टिटनेस का भय नहीं रहता। पूरे पौधे का क्वाथ अतिसार एवं उदरशूल
के रूप में उपयोगी है। जल के साथ पत्तियाँ तीव्र वमनकारी होती है।
का अर्क मूत्राशय एवं वृक्क आदि में वृण व पथरी नहीं बनने देता।

—o—

6

toklk ;k ;oklk

,Ygxh dleykje fQ’k-

***Alhagi camelorum* Fisch.**

yX;feukIh

ipfyr uke

अरबियन मैना, कैमेल्स थार्न (अंग्रेजी), दुर्लभा (संस्कृत), दुलाल–लबाह), तेलागिनिया (तेलगू)

u

यह रबी ऋतु एवं गर्मी के महीनों में पनपने वाला प्रमुख बहुवर्षीय ार है जो भूमिगत प्रकन्दों एवं जड़ो से पनपता रहता है। पंजाब, उत्तरी कोंकण तथा उत्तरपूर्वी राज्यों के उपजाऊ खेतों तथा परती भूमियों में यह ार बहुतायत में पाया जाता है।

चित्र–6 toklk ¼,Ygxh dleykje½
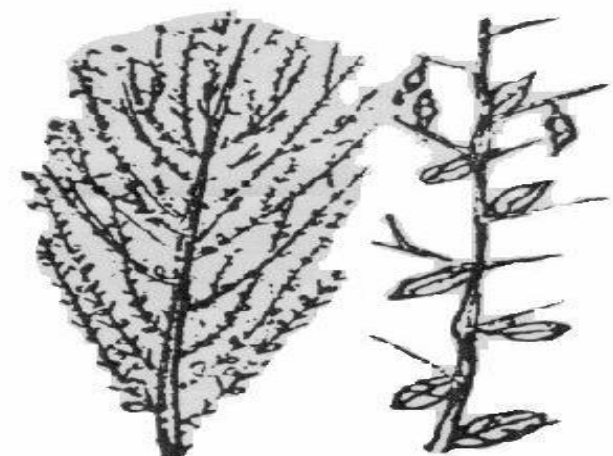
यह छोटा शाकीय पौधा है जिसमें 1.5–2.5 सेमी0 लम्बे व कठोर–मजबूत ते हैं। पत्तियाँ साधारण, मांसल, चिकनी, अण्डाकार एवं नीचे की ओर

लटकी होती हैं। कांटे के अक्ष से छोटे पुष्पवृन्त वाले 2–6 लाल रंग के फूल फरवरी से अप्रैल तक निकलते हैं जिनके दलपत्र दलचक्रों से ल फली लगभग 3 सेमी0 लम्बी, हरी–धूसर, कठोर तथा वक्राकार या सी जिसमें अनेक बीज होते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसका पौधा मूत्रवर्धक, कफोत्सारी तथा रेचक के रूप में उ मूत्रावरोध में इसका ताजा अर्क देना हितकर होता है। मोतियाबिन्द में इ लगाना चाहिए। सिर में एक तरफ बार–बार दर्द रहने पर इसका अ डालने से तुरन्त लाभ होता है। पत्ती व फूल का प्रलेप बवासीर में बहु होता है। पौधे का आसवन करके निकाले गये तैलीय अर्क की मालिस में बहुत फायदेमन्द है। इसका क्वाथ या वाष्प शांतिकर होता है और खांसी में बहुत लाभप्रद है। यह स्वेदकारी, पित्तस्रावक, कामोत्तेजक, तथा वयस्थापक के रूप में बहुत उपयोगी है। पत्तियों तथा तना से नि मृदुस्राव को ‘तरंजाबिन’ कहते हैं जो वयस्थापक, वित्तस्रावक, कफ मूत्रवर्धक, कामोत्तेजक व वीर्यस्तम्भक तथा मलभेदक होता है।

—o—

7

taxyh pkSykbZZ

vej.UFk l fLiuk l l fy-

***Amaranthus spinosus* L.**

vej.UFk lh

ipfyr uke

अमरेन्थ (अंग्रेजी), कंटीली चौलाई मरसा, जनुमा (हिन्दी), तन्दूलियाका), कांटा नोट्या (बंगाली), मुलूककिराई (तमिल), मुलाटोटा कुरा (तेलगू), (मराठी), चोलाई भाजी (गुजराती), चुण्डीसाग (पंजाबी)

यह खरीफ एवं रबी फसलों का प्रमुख एक वर्षीय खरपतवार है जो बीज ता है। यह उपजाऊ खेतों तथा खाली पड़ी एवं परती भूमियों में वर्षा ऋतु उगती है।

चित्र–7 tаxyh pkSykbZ ¼vej.UFk l fLiuk l l½

इसकी पत्तियों के डण्ठल के आधार पर लगभग एक सेमी0 लम्बे व कांटे जोड़े में होते हैं इसलिए इसे कंटीली चौलाई भी कहते हैं। इसकी

दूसरी प्रजाति (*अ0 काडेटस* लि.) में कांटे नहीं पाये जाते। बथुआ की भ की पत्तियों का साग ग्रामीण अंचलो में खूब बनता है।

चौलाई का शाकीय पौधा 50–100 सेमी0 ऊंचाई तक बढ़ जा सीधा, गोल तथा पतली पट्टियों युक्त होता है। चिकनी हरी पत्ति 3–5 सेमी0 लम्बी व 1–1.5 सेमी0 चौड़ी, नुकीली तथा अण्डाकार हो के डण्ठल के पास एक जोड़े कांटे होते हैं। पत्ती के अक्ष से लम्बे व न (मंजरी) एकल या समूह में जुलाई से नवम्बर तक निकलते हैं जिन 0.5 सेमी0 आकार के सफेद एवं एकलिंगी पुष्प लगते हैं। फल छोटा, तथा पतले सहपत्रों से ढ़का रहता है। फल लम्बवत फटता है जिसमें व चमकीला बीज निकलता है।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी पत्तियों में 'आक्जेलिक एसिड' तथा 'ल्यूटीन' की होती है। पत्तियों वाली हरी सब्जियों में चौलाई का साग बहुत प्रसि क्षुदावर्धक, कफ नाशक, मृदुरेचक तथा मूत्रवर्धक होता है। प्रदर (अतिसार, अनियमित व अत्यधिक मासिक स्राव, सूजाक, उदरशूल तथा में पूरे पौधे का क्वाथ बहुत लाभप्रद होता है। स्त्रियों में ज्यादा मासिक योनि विकार, रक्ताल्पता, स्तनों में दुग्धाल्पता तथा बन्ध्यता होने पर का अर्क बहुत फायेदेमन्द होता है। गर्भवती स्त्रियों के लिए ताजी पत्ति या साग बहुत हितकर होता है। यह गर्भपतन में भी उपयोगी है। इसक दृष्टि–क्षीणता कम करता है। अस्थमा, डिफ्थीरिया, चर्मविकार, लैप्रोसी आदि में पत्तियों का ताजा अर्क हितकर होता है। इसके बीज शीतल वीर्यवर्धक तथा कामोत्तेजक होते हैं। स्त्रियों में बन्ध्यता तथा श्वेतप्रद क्वाथ या चूर्ण बहुत लाभप्रद होता है। सर्पदंश होने पर जड़ का प्रलेप विषप्रभाव कम होता है।

—o—

8

d`".kuhy ;k tksadekjh

,ukxfy l vofll fy-

***Anagallis arvensis* L.**

fiey lh

ipfyr uke

कॉमन पिम्परनेल (अंग्रेजी), अनागेलिडे, मोर्गेलिना (गुजराती), ढ़ाबर
)

u

यह रबी ऋतु में उपजाऊ खेतों में बहुतायत में उगने वाला प्रमुख
य खरपतवार है। यह जाड़े में बीज से उगता है और फरवरी–मार्च में
है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में रबी ऋतु की फसलों, उपजाऊ परती भूमियों,
हों, बाग–बगीचों तथा घरेलू लॉन में इसे आसानी से देखा जा सकता है।
। अधिक पसन्द करता है।
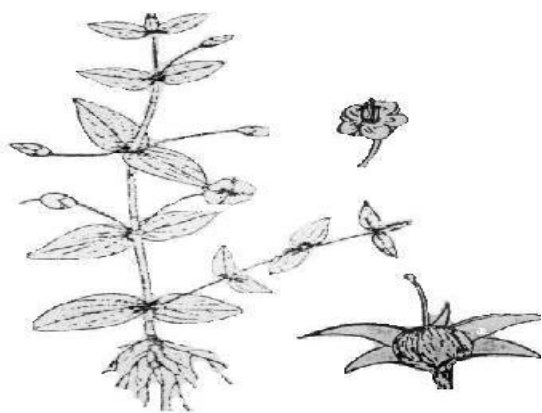
चित्र–8 d".kuhy ¼,ukxfy l vofll½

यह 10–40 सेमी0 ऊंचाई तक सीधा बढ़ता है तथा तना के आधार से

ही पतली मुलायम शाखायें निकल आती हैं। तना शाकीय, मुलायम, व
बिन्दुदार ग्रन्थियों युक्त होता है। जड़ें रेशेदार–पतली होती हैं। पर्ण
पत्तियां तना से जुडी हुई एक दूसरे के विपरीत जोडे में निकलती
अण्डाकार, भुथरी नुकीली, हल्की हरी, चिकनी एवं 0.5 से 2.5 सेमी0
है। पत्ती की निचली सतह पर काले रंग की बिन्दुवार ग्रन्थियां होती
अक्ष से 1–5 सेमी0 लम्बे पुष्पवृन्त वाले नीले रंग के पुष्प एकल रूप
है। फल सम्पुटिका झिल्लीदार गोल एवं 3–5 मिमी0 आकार की वक्र
है। इसमें लगभग एक मिमी0 लम्बा व भूरे रंग का त्रिकोणीय बीज नि
एक पौधे से करीब 800 से अधिक बीज उत्पन्न होते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसमें 'सैपोनिन' एवं 'साइक्लामिन' क्षाराभ पाये जाते हैं
खोदकर रखने से विशेष गन्ध उत्पन्न हो जाती है। यह ग्रन्थिवात, जल
मिरगी, पागलपन, जलभीति एवं सर्पदंश में बहुत उपयोगी है। पाग
काटने से होने वाले जलातंक या जलभीति (हाइड्रोफोबिया), मिरगी व
के दौरे, लैप्रोसी, जलोदर एवं गठिया वात होने पर पौधे का ताजा अव
तुरन्त लाभ प्रदान करता है। सर्पदंश, ग्रन्थिवात एवं कुष्ठरोग में जड़
का प्रलेप लगाने से आरोग्य मिलता है।

—o—

0

fpjk;rk ;k dqYQuFk

,.MkxkfQl ifudykVk uhl-

***Andrographis paniculata* Nees.**

,dUFk lh

ipfyr uke

क्रेट रूट (अंग्रेजी), भू निम्ब, किराता (संस्कृत), कालमेघ, अलुई (बंगाली), किरातू, करियातू (गुजराती), नेलावेमू (तमिल, तेलगू), नेलावेपू (मलयालम), केरायत (मराठी), नेलावेबू (कन्नड़)

u

कालमेघ सीधा बढ़ने वाला शाकीय खरपतवार है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष नी इलाकों तथा परती भूमियों में जंगली रूप में बहुतायत में उगता है। गुणों से भरपूर होने के कारण लोग इसकी खेती भी करते हैं।
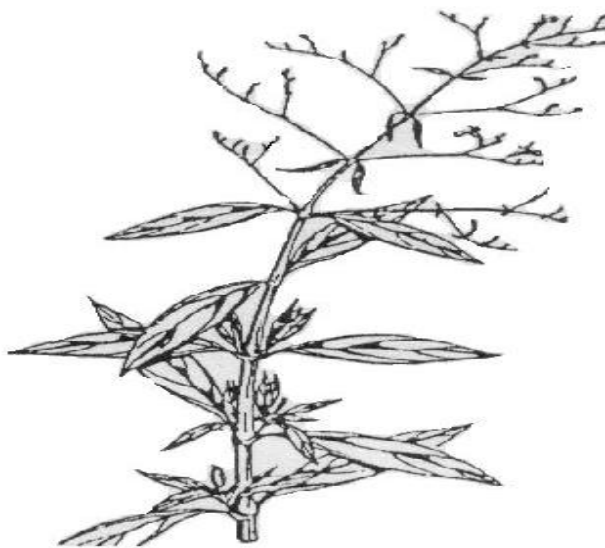
चित्र–9 dkye?k ¼,.MkxkfQl ifudykVk½

पौधा सीधा, चिकना तथा शाखायें चतुष्कोणीय होती हैं। पत्तियां सम्पूर्ण,

दोनों किनारों पर नुकीली तथा लगभग 7 सेमी0 लम्बी व 1.5 सेमी0 हैं। लम्बे असीमाक्ष पुष्पक्रम पर गुलाबी व छोटे पुष्प गुच्छे में आते दलपत्र द्विहोष्ठीय एवं सफेद धब्बेदार तथा दलचक्र चिपके हुए व ग्रन्थि हैं। फली (सम्पुटिका) 1.5–2 सेमी0 लम्बी व अर्द्धबेलनाकार होती है दर्जन छोटे–छोटे बीज होते है। इसका प्रसारण बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;kx

इसमें 'कालमेगिन' तथा 'एण्ड्रोग्राफोलाइड' नामक कटु क्षाराभ हैं और पूरा पौधा औषधीय गुण वाला होता है। इसका स्वाद कडुवा हो पौधा टॉनिक, ज्वरनाशी, कृमिहारी, क्षुदावर्धक तथा उदरवायुहारी के उपयोगी है। पेट में अधिक गैस बनने, भूख की कमी, पेचिस, अतिसार में ज्वरावस्था में पत्तियों का अर्क देना चाहिए। बच्चों को इसका स्वर साथ देने से उदरकृमि बाहर निकल जाते हैं। जहरीले कीड़ों के घमोरियों में पत्तियों का प्रलेप हितकर है। पुरानी पेचिस, मलेरिया बु विकार, मंदाग्नि, उदरकृमि तथा कमजोरी होने पर जड़ का चूर्ण पत्तियों का काढ़ा पीने से तुरन्त लाभ मिलता है।

—o—

0

lR;kuk'kh ;k HkjHk.M

vkft.ekuu efDl dkuk fy-

***Argemone maxicana* L.**

iikoj.lh

ipfyr uke

प्रिकली पॉपी, मैक्सिकन पॉपी (अंग्रेजी), घमोइया, भरभर (हिन्दी), श्रीगल (संस्कृत), सियाकांटा (पंजाबी), शियालकांटा (बंगाली), ब्रम्हडण्डी (तेलगू), हू (तमिल), योनुम्मटम (मलयालम)

u

यह बीज से उगने वाला रबी ऋतु का प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है सामान्यतः यह सालभर देखा जाता है। गेहूं, जौ, चना, अरहर, सरसों आदि के साथ यह खूब उगता है। खाली पड़े उपजाऊ खेतों, परती एवं शुष्क तथा सड़क व रेलपथों के किनारे यह आसानी से देखा जा सकता है।

चित्र–10 lR;kuk'kh ¼vkft.ekuu efDl dkuk½
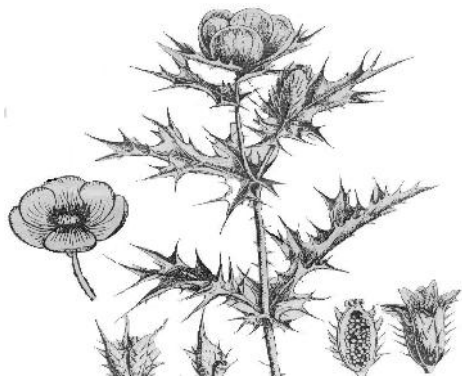
इसकी लम्बाई 60–90 सेमी0 तथा तना चिकना, मॉसल–मुलायम एवं होता है। डण्ठल रहित 10–20 सेमी0 लम्बी व 5–8 सेमी0 चौड़ी एवं –हरी पत्तियां तना से चिपकती हुई बाहर की ओर फैलती हैं जिनके किनारे

पर असमान कटाव एवं नुकीले कांटे होते हैं। पत्ती की ऊपरी सतह पर शिरायें स्पष्ट दिखाई देती हैं। पौधे को तोड़ने पर पीले रंग का द्रव नि इसे पशु भी नहीं चरते। पोस्ता (पॉपी) की तरह के बिल्कुल पीले रंग रहित पुष्प शाखाओं के सीमाक्ष पर निकलते हैं। पुष्प में पीले रंग के 3 कांटेदार दलचक्र एवं अनेक पुंकेसर होते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल व लगभग 2–2.5 सेमी0 लम्बी होती है जिसके ऊपर गोल टोपी जै होती है। स्फुटनशील पकी सम्पुटिका को छूने से कैप्सूल फट जाती है में सरसों की तरह काले–भूरे या पीले रंग के स्पष्ट हाइलम युक्त संख्या में बीज होते है। बीजों में सरसों की तरह तेल निकलता है। सर इसके बीज मिला देने से पहचानना कठिन है।

vk"k/kh; mi;kx

सत्यानाशी में 'बरबेरिन' तथा 'प्रोटोपाइन' नामक क्षाराभ प्रचु पाये जाते है। इसके तेल को 'कटकर तेल' कहते हैं जिसमें 'सेग्विनी एल्केलाइड होता है। आंतरिक रूप से इसका प्रयोग जहरीला हो पौधे का पीला अर्क मूत्रवर्धक एवं पुनर्नवीकरण गुण वाला होता है अ कामला, चर्म विकार एवं सूजाक में उपयोगी है। वात दर्द, अल्सर, खर एवं घमोरी में इसका प्रलेप हितकर होता है। जड़ उत्तेजक एवं रसाय है। इसका क्वाथ सूजाक, मूत्रांग से श्लेष्मा स्राव, गर्भाशयिक स्राव, कठोर पथरी तथा पुराने चर्म विकारों में बहुत लाभप्रद होता है। पेट में होने पर इसका चूर्ण लेना चाहिए। जलन, फोड़ा एवं सूजन में ताजी ज लगाना हितकर है।

इसके बीज मदकारी, वामक, विरेचक, कफनिस्सारक, शां उद्दीपक तथा उदरवेगकारी होते हैं। कफ, कुकरखांसी, अस्थमा, फेफड़ों से सम्बन्धित विकारों में बीजों का चूर्ण नियंत्रित मात्रा में लेना उपदंश, बिच्छूदंश एवं सर्पदंश होने पर बीज एवं जड़ का प्रलेप विष कम करता है। इसका तेल (कटकर ऑयल) सरसों के तेल में मिलाव लाभ कमाने की कोशिश करते है। इसमें 'बरबेरिन' एवं 'सेग्विनेरि नुकसान देह क्षाराभ पाये जाते हैं जिसके कारण इसे खाने से जलोव बीमारी हो जाती है। नियंत्रित मात्रा में इसका तेल मल भेदक व रेचक मार्दवकर तथा उत्क्लेशक के रूप में उपयोगी है। कोढ़, गरमी, खुजली एवं अन्य चर्मरोगों में तेल का प्रलेप लगाने से शीघ्र लाभ मि

1

dhM+kekj

,fjLVksykfd;k czfDVvkVk fjV~t-

***Aristolochia bracteata* Retz.**

,fjLVksykfd,lh

ipfyr uke

वर्मकिलर (अंग्रेजी), कीड़ामारी (बंगाली), धूम्रपत्र (संस्कृत), कालागुर्की , कीड़ामार (गुजराती), गरोरी गुर्पा अर्कू (तमिल), अदूथिन पलाई (मलायलम), टाडा–गिडा (तेलगू)

u

यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जो भूमि के सहारे फैलता है। यह पूरे ारत में मुख्यतः काली मिट्‌टी एवं रेगुर मिट्‌टी वाली भूमियों में खूब उगता
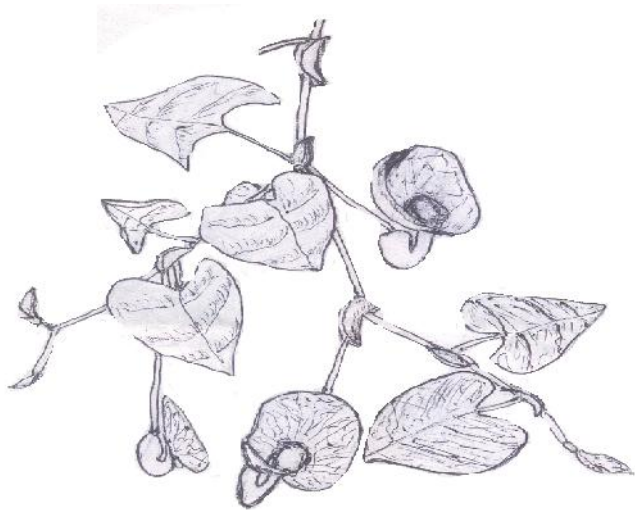
चित्र–11 dhMkekj ¼,fjLVksykfd;k czfDVvkVk½

इस शाकीय झाड़ीनुमा पौधे का निचला हिस्सा कठोर तथा ऊपरी भाग

नरम व मुलायम होता है। पत्तियां वृक्काकार या हृदयाकार तथा चौड़ी व नुकीली होती हैं। गोल सहपत्र वाले एकल पुष्प पत्तियों निकलते हैं। पुष्प के गहरे बैंगनी दलपत्र नलिका के रूप में ऊप द्विहोष्ठीय दिखते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) लगभग 5 सेमी0 6–कोष्ठीय होती है जिसमें 12 धारियां स्पष्ट होती हैं। सम्पुटिका नीच से 5–6 खण्ड़ों में फटती है जिसमें अनेक पतले एवं हृदयाकार बीज f

vk"k/kh; mi;kx

इसका पूरा पौधा औषधीय गुणों से भरपूर है जो आंत्र नियतकालिक ज्वरनाशक, मृदुरेचक तथा आर्तव जनक के रूप में बहु है। सूखी पत्तियों का अर्क या पत्तियों का चूर्ण दुर्गन्ध एवं कीड़ों (मैग घावों में लगाना चाहिए। बच्चों के पैरों मे उकवत एवं चर्मरोग होने पत्तियों को अरण्डी के तेल के साथ पीसकर लगाना चाहिए। स्त्रियों धर्म खोलने एवं नियंत्रित करने तथा अत्यधिक थकान भरे कार्य के ब में संकुचन लाने हेतु पत्तियों का ताजा अर्क बहुत उपयोगी है। निय ज्वर, गरमी (सिफिलिस) एवं सूजाक में पत्तियों का अर्क दूध के साथ ले होता है। पेटदर्द एवं बदहजमी में पत्तियां चबाना चाहिए।

पेट से गोलकृमि नष्टकर बाहर निकालने के लिए इसकी जड़ रामबाण औषधि है। स्त्रियों में कठिन परिश्रम के बाद गर्भाशय में सं हेतु जड़ का चूर्ण प्रयोग हितकर है। फलों को दूध के साथ उबालकर से वात विकार, सूजाक एवं दमा में आराम मिलता है।

—o—

2

fdjeyk ;k fdjeuh vtokbu

vkVhZehfl ;k ejhfVek fy-

***Artemisia maritima* L.**

dEikftVh

ipfyr uke

वर्मसीड, मदरवर्ट (अंग्रेजी), गन्धा, गदाघार (संस्कृत), मुरनी (कश्मीरी), (पंजाबी), किरमनी ओबा (मराठी), छरा, छुहरी अजमूद (बंगाली)

u

यह झाड़ीनुमा शाकीय पौधा उत्तरी भारत में कश्मीर से लेकर कुमांऊ के क्षेत्रों में 2000–3000 मीटर की ऊंचाई पर जंगली अवस्था में खूब पाया है।
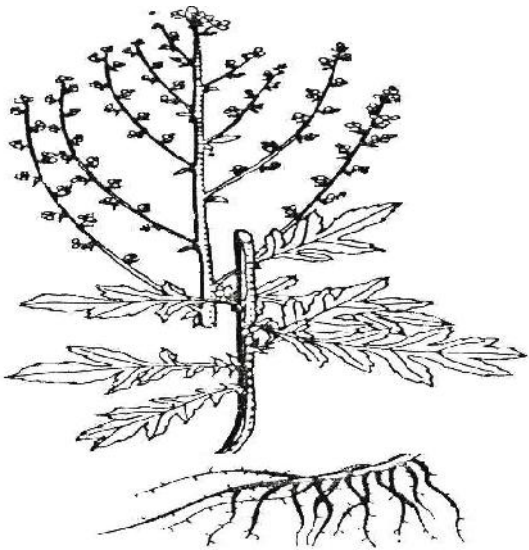
चित्र–12 fdjeyk vtokbu ¼vkVhZehfl ;k efjfVek½

इसका सीधा एवं रोमिल शाकीय पौधा 15 से 45 सेमी0 या अधिक ऊंचा

बढ़कर अन्य पौधे में लिपटकर या भूमि के सहारे बढ़ता है और बहुवर्षी भूमिगत तना काष्ठीय एवं शाखित होता है। इसके पौधे से विशेष सु है। डण्ठल रहित या मुलायम पर्णवृन्त युक्त हल्की हरी–सफेद पत्तियां लम्बी, अण्डाकार एवं द्विपंखीय होती हैं। छोटे पुष्प कणिश (स्पाइक) पर लालाभ पुष्पशीर्ष गुच्छे में सजे होते है। फल (एकीन) एकबीजीय एवं है।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी पत्ती व तना में 'सन्टोनिन' नामक सुगंधित तेल एवं 'अ नामक कटु रसायन के अलावा 'सैपोनिन' एवं 'कैल्सियम आक्जेलेट' मे मिलता है। इसकी पत्तियां एवं पुष्पशीर्ष औषधीय रूप से उपयो नियतकालिक ज्वरनाशी, पाचनाग्नि उद्दीपक, मृदुरेचक, पौष्टिक, उद तथा श्वास एवं हृदयोत्तेजक होता है। उदरकृमि निकालने के लिए सू एवं पुष्पों का क्वाथ या चूर्ण बहुत उपयोगी है। बार–बार समयान्तराल आने, जलोदर तथा कोष्ठबद्धता होने पर पत्तियों का काढ़ा बहुत हितक पत्तियों का प्रलेप चर्मरोग, वातविकार एवं सिरदर्द में भी आरोग्यकारी अन्य प्रजाति नागदामिनी या नागदोना *(आ0 वुल्गेरिस लि.)* की पत्ति स्त्रियों में मासिक स्राव बढ़ाने एवं गर्भपात कराने में उपयोगी है। *अ एनुआ* लि. से प्राप्त *'आर्टिमीसिन'* नामक दवा मलेरिया बुखार में बहुत है।

—o—

3

lrkoj

vLijxl jlhekl l okbYM-

***Asparagus racemosus* Wild.**

fyfy, lh

ipfyr uke

अस्परेगस फर्न (अंग्रेजी), शतमूली, शतावरी (संस्कृत, बंगाली), सतवारी
, शतमूमि (कन्नड), शतवाली (मलयालम), शतवारो (गुजराती,) शदवारी
, चलगड्डा (तेलगू), हटमूलि (असमिया)

यह बहुवर्षीय आरोही लतानुमा पौधा देशभर में उष्ण एवं उपोष्ण
ीय क्षेत्रों में जंगली रूप में उगता है। बाग–बगीचों एवं छायादार स्थानों
खूब देखा जाता है। इसे अलंकृत वाटिकाओं में दरवाजे पर चढ़ाने एवं
के लिए भी उगाया जाता है।

चित्र–13 lrkoj ¼vLijxl jlhekl l½

इसकी आरोही लता लम्बी व कोमल तथा तना सीधा, काष्ठीय एवं
त्रिकोणीय व कांटेदार होती हैं। कांटे गुलाब के कांटे की तरह नीचे की

ओर मुड़े होते हैं। इसकी शाखायें भूमि के समीप से ही समानांतर फै
है जिनमें अनेक उपशाखायें (फिलोक्लेड) निकलती हैं जिनके सहारे यह
या आधार पर फैलता है। तार के समान पतली हरी शाखाओं में हरे व
होते हैं। इसमें पत्तियां नहीं पायी जाती। हरी पत्तियों के समान वि
मुलायम गोल व पतले धागे जैसी वक्रीय संरचनायें (क्लेडोड) 2–6
होती हैं और फर्न की तरह सुन्दर दिखती हैं। इसकी जड़ें प्रकन्द की
होती हैं और जमीन के अन्दर समानांतर लम्बी बढ़ती हैं। असीमाक्ष
छोटे, सुगन्धित एवं सफेद रंग के फूल आते हैं। रसभरी (बेरी) छोटी, गो
होती है जो पकने पर लाल हो जाती हैं। यह भूमिगत प्रकन्दीय जड़ों
है।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी मांसल जड़ें औषधीय होती हैं। इसमें 'अस्परेजिन'
सारभूत तैलीय पदार्थ पाया जाता है। इसकी जड़ें दाहप्रशमक, शां
मूत्रवर्धक, मृदुरेचक, क्षुदावर्धक, कफनिस्सारक, शीतल, बलवर्धक, वि
स्राव वर्धक, वीर्य स्तम्भक एवं कामोत्तेजक होती हैं। जड़ों का क्वाथ
अतिसार, क्षयरोग, लेप्रोसी, व्रणशोथ, मंदाग्नि, मूत्राशय स्राव, रतौंधी
वृक्क एवं पित्त विकारों में बहुत लाभप्रद है। जड़ का चूर्ण ठंडे पानी के
से मूत्र अधिक एवं साफ होता है। शहद के साथ जड़ का अर्क लेने से
एवं पित्त विकार में शीघ्र आराम मिलता है। जड़ का चूर्ण दूध व शक्क
लेने से शक्ति एवं कामोत्तजना बढ़ती है तथा स्त्रियों में दुग्ध स्राव
है।

—o—

4 rkye[kkuk ;k dqfy;k dkaVk

,LVjkdUFkk ykxhQkfy;k uhl-

***Asteracantha longifolia* Nees.**

,dUFkslh

ipfyr uke

काकी लक्ष, इक्षुर (संस्कृत), कोकीभेला (हिन्दी), कुलिया खर (बंगाली), कांटा (राजस्थानी), इखरू (गुजराती), तालीमखाणा (मराठी), निरमल्ली, ली (मलयालम), कुडेवाणके (कन्नड़), नीरमुली (तमिल), नीरू गुब्बी (तेलगू)

u

यह कंटीला एकवर्षीय खरपतवार पूरे भारतवर्ष में सड़कों एवं रेलपथों ारे पानी भराव वाले उथले गढ़ढों तथा नम एवं दलदली भूमियों में खूब ै। ताल–पोखरों एवं गढ़ढ़ों में पशुओं के घुसने पर इसके कांटे उनके शरीर क जाते है।

यह शाकीय पौधा लगभग 60–150 सेमी0 ऊंचाई तक सीधा बढ़ता है। अशाखित तना सीधा, चतुष्कोणीय, रोयेंदार तथा गांठों पर फूला हुआ होता की प्रत्येक गांठ में 6 भालाकार पत्तियाँ चक्राकार रूप में लगी होती हैं अक्ष पर पीले रंग के नुकीले कांटे होते हैं। पौधे के सीमाक्ष एवं पत्तियों के चमकीले नीले व वृन्तहीन आठ पुष्प चक्राकार रूप में आते हैं। लगभग 3 म्बा पुष्प द्विपालीय होता है जिसका होंठनुमा दलपत्र मुड़ा होता है जिसमें ा धब्बा होता है। द्विपालीय फल में काले–भूरे रंग के कठोर बीज निकलते

vk"k/kh; mi;ksx

इसका पूरा पौधा औषधीय गुण वाला होता है जो जलोद गठियावात तथा जननांग एवं मूत्रविकारों में उपयोगी है। पत्तियां कफ मूत्रवर्धक, कमोत्तेजक तथा रक्त शोधक होती हैं। वातविकार, सूज (सिफिलिस), कामला तथा ड्राप्सी में इनका क्वाथ या सुखे पौध लाभदायक होता है। जड़ें तीव्र मूत्रल, वीर्य प्रवर्तक, उत्तेजक, शांतिप्र निद्राकारी होती हैं। सूजाक, जलोदर, वातविकार, मूत्राशय व वृक्क अनिद्रा, पीलिया तथा जननांग विकारों में जड़ों का काढ़ा बहुत फायद है। बीजों को पानी में घोलने से लिसलिसापन उत्पन्न होता है। ये बल कमोत्तेजक होते हैं। मूत्राशय एवं जननांग विकार तथा सूजाक में बीज या गर्म पानी बहुत लाभप्रद होता है। बीजों में लाइपेज एवं प्रोटिएज की प्रचुरता होती है।

—o—

5

czkãh ;k 'osr dEeh

cdkik ekfu,jh fy-

***Bacopa monnieri* L.**

LØkQyfj,lh

ipfyr uke

थिमीलीफ्ड ग्रेसिओला (अंग्रेजी), बिरहमी, लोनिका (हिन्दी), सौम्यलता,
मी (संस्कृत), ब्रहमीसक (बंगला), जल ब्राहमो (गुजराती), नीरब्राहमी
लम, तमिल), सोमब्रानी चेटू (तेलगू), घोला (मराठी), ब्रहमी (कन्नड़)

u

यह सदाबहार बहुवर्षीय शाक है जो भूमि के सहारे फैलती है। यह
तः सम्पूर्ण भारतवर्ष में नम एवं जलभराव वाले छायादार स्थानों, सिंचित खेतों,
नालियों, नहरों एवं नदियों के नम किनारों पर साल भर पनपती है।
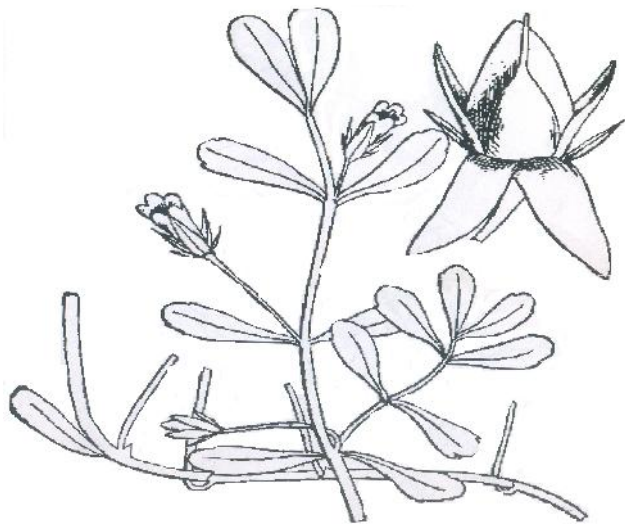
चित्र–14 czkãh ¼cdkik ekfu,jh½

इसका पौधा मांसल, मुलायम, चिकना, अत्यधिक शाखित तथा भूमि में

चारों तरफ फैलता है। पत्तियां सम्पूर्ण ,पर्णवृन्त विहीन, वृक्काकार,
नोंक पर गोलाई लिए हुए चौड़ी होती हैं और निचली सतह बिन्दीदा
तना की प्रत्येक पर्व से पतले धागे सदृश्य जडें निकलती हैं जो पौधे
एवं प्रसारण प्रदान करती हैं। तना की गांठों में पत्ती के अक्ष से छोटे
नीलाभ श्वेत रंग के द्विलिंगी पुष्प बसन्त ऋतु में आते हैं। पुष्प के पां
में से एक सबसे बड़ा व अलग दिखता है। दल पत्र लगभग एक सेमी
हैं। पुष्प में चार पुंकेसर दलपत्र से जुड़े रहते हैं। फल (कैप्सूल) अण्डा
एवं द्विनालीय होता हैं जिसमें अनेक बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

प्राचीन काल से ज्ञात इस जड़ी–बूटी में 'ब्राम्हीन' एवं 'हर्पेस्
क्षाराभ पाये जाते हैं इसके अलावा 'हाइड्रोकेटिलिन' एवं 'एसिया
ग्लुकोसाइड्स तथा एस्कार्बिक एसिड, सेन्टेलिक एसिड व उड़नशी
प्रचुर मात्रा होती है। यह बुद्धिवर्धक, बल्य, ज्वरनाशक, शीतल त
तंत्रिकातंत्र के लिए बलवर्धक (टॉनिक) होती है। अपतंत्रक (हिस्टीरिया)
मिरगी, अनिद्रा , उच्चरक्तचाप, अस्थमा, सूजाक, गला बैठना तथा बुखा
कुचल कर पीने से आरोग्य मिलता है। यह स्वप्नदोष, गरमी, वमन त
में भी अतिलाभदायक है। तीव्र कास (ब्रोंकाइटिस), अपस्मार, कफ
वक्ष रोग होने पर पत्तियों का गर्म प्रलेप फायदेमन्द होता है। गठियावा
का अर्क पेट्रोलियम के साथ मलने से आरोग्य मिलता है। गला बैठने
के भारीपन में पत्तियां चबाना हितकर है। बच्चों में कास, मूत्रावरोध, स
एवं अतिसार होने पर पत्ती का ताजा अर्क देना चाहिए। स्त्रियों में
बेहोसी आने एवं तंत्रकीय अवसान होने पर ब्राम्ही और आंवले का रस
दूर होती है। सूखी पत्तियों का चूर्ण या क्वाथ अस्थमा, कास, खांसी
तथा कब्जियत में लाभप्रद होने के साथ–साथ 'नर्वाइन टॉनिक'
टॉनिक' के रुप में बहुत उपयोगी है। पत्तियों का अर्क या काढ़ा प्रति
करने से बुद्धि एवं स्मरणशक्ति में आशातीत वृद्धि होती है। इससे बैक
एवं 'बी' नामक दो स्मरण शक्ति वर्धक दवायें बनाई गयी हैं। तना एवं
अर्क तथा प्रलेप सर्पदंश में लाभप्रद है।

16

njgYn ;k j
cjcfjl vfjLVkVk
Berberis arista

dqy % cjcjhMhl h

vU; i zpfyr uke

इण्डियन बरबेरी (अंग्रेजी), कासमल, दारू हरिद्र (संस्कृत), (बंगाली), दारु हल्द (मराठी), कशमल (पंजाबी), रसवत (कश्मीरी) (तमिल), मगद रिसिनास (मलयालम)

ifjp;

यह झाड़ीनुमा कंटीला–बहुवर्षीय पौधा मुख्यतः समशीतोष्ण लेकर नीलगिरि एवं उत्तरांचल की पहाड़ियों में खूब पाया जाता है
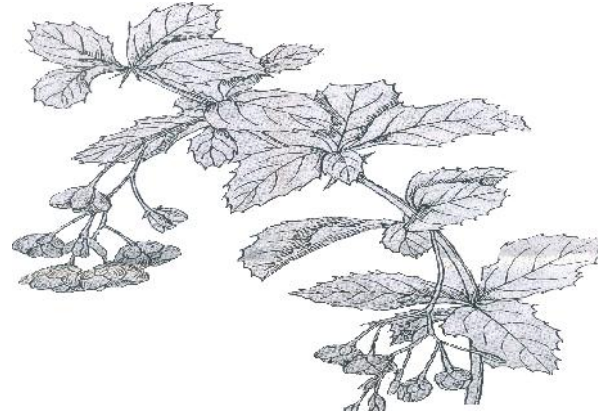
चित्र–15 njgYn ¼cjcfjl vfjLVkVk½

इसका पौधा सीधा, कांटेदार, झाड़ीनुमा, 2–2.5 मीटर ऊंचा पीताभ भूरी एवं लकड़ी पीली होती है। इसकी दूसरी प्रजाति कि

(*ब. एसियाटिका* रॉक्स.) उत्तरांचल की पहाडियों में खूब मिलती है जिसे ी कहते हैं। कांटों के अक्ष से निकलने वाली 8–10 सेमी. आकार की ार लम्बी पत्तियां किनारों पर नुकीली, दांतेदार तथा शीर्ष पर चौड़ी होती ट शिराविन्यास युक्त पत्तियाँ ऊपर हरी तथा नीचे कत्थई भूरी होती हैं। ीन छोटे–छोटे पीले रंग के फूल 5–7 सेमी. आकार के गुच्छे में आते हैं की ओर झुके रहते हैं। सरस फल (बेरी) अण्डाकार एवं बैंगनी काला होता में अनेकों बीज होते हैं।

h; mi;kx

इसमें 'बरबेरिन' नामक कटु क्षाराभ पाया जाता है। पौधे एवं जड़ का 'रसौत' या 'रसांजन' के नाम से जाना जाता है। इसकी लकड़ी, जड़ की ं रसांजन अवरोधनाशक, स्तम्भक, नियतज्वरनाशी, स्वेदक एवं पुनर्नवीकारक । इसका अर्क या क्वाथ नियतकालिक ज्वर में सन्निपात एवं जूड़ी बुखार ा) का आवेग कम करने में कुनैन की तरह ही बहुत प्रभावकारी है। तीव्र , पुरानी पेचिस, हैजा, ज्वर, क्षयरोग, दिल की तीव्र धड़कन एवं खांसी में छाल का काढ़ा आरोग्यकारी होता है यह दस्तावर, पौष्टिक, रक्तशोधक रोधनाशी होता है। और कामला (पीलिया), चर्मविकार तथा स्त्रियों में य अधिक मासिक धर्म में बहुत उपयोगी है। बवासीर, अल्सर, खुले घाव थल शोथ धोने के लिए इसका पतला काढ़ा प्रयोग किया जाता है। में इसका प्रलेप विषप्रभाव कम करता है। आंख आने पर रसांजन को मिलाकर लगाने से शीघ्र फायदा होता है। पीतज्वर (पीलिया) में पत्तियों या क्वाथ हितकर है।

—o—

17 dqdqjkSa/kk ;k dd

Cyfe;k cky lehQjk

Blumea balsamife

dqy% dEikfTVh

vU; izpfyr uke

ब्लूमिया कम्फूर प्लांट (अंग्रेजी), कुकुराद्रू (संस्कृत), कुकुरसुंग कालाहद (गुजराती), भंगरुदा, निमरुदी (मराठी), नरक्करन्दई (तमिल), (तेलगू)

igpku

यह उपजाऊ खेतों एवं खाली पड़ी भूमियों में सालभर पाया द्विवर्षीय खरपतवार है जो मुख्यतः बीज से पनपता है। खरीफ ऋतु देखा जाता है।

चित्र–16 dqdqjkS/kk ¼Cyfe;k cky lehQjk½

इसका पौधा 1–1.5 मीटर ऊंचा हो जाता है जिसका तन खुरदुरा होता है। इसकी दूसरी प्रजाति *ब्लूमिया लसेरा* डी.सी. का पौ

होता है। जो सम्पूर्ण भारत में सामान्यतः पाया जाता है। पत्तियां मुलायम, ार, नुकीली, 7–20 सेमी. लम्बी एवं किनारों पर दांतेदार होती हैं। पत्तियां ा मसलने पर कपूर की तरह तेज गन्ध आती है। पत्ती के छोटे डण्ठल के न की तरह दो–तीन पत्रक जुड़े रहते हैं। फरवरी–मार्च में लम्बे डण्ठल ' मिमी0 आकार के पीले रंग के फूल गुच्छे में आते हैं। पुष्प के दलचक्र ले एवं रोयेंदार होते हैं। फल छोटा, चिकना, एकबीजीय एवं अस्फुटनशील जिस पर धारियां होती हैं।

h; mi;kx

इसकी पत्तियों एवं तना में 'सेपोनिन' तथा 'कैल्सियम आक्जेलेट' पाया । पत्तियों से 'ब्लूमिया कर्पूर' नामक क्रिस्टलीय व सुगन्धित तेल निकलता का नरम हरा तना, पत्तियां एवं जड़ औषधीय गुण वाले होते हैं। इसका रनाशी, कृमिनाशी, उत्तेजक, ग्राही तथा स्वेदक होता है। पत्ती का कटु ाला नमक के साथ पीने से जुकाम, पेचिस, अतिसार, गेस्ट्रिक, पेट में ऐंठन, मि तथा बुखार में आरोग्य मिलता है। इसकी पत्ती की गर्म चाय स्वेदकारी, क एवं मूत्रवर्धक के रूप में उपयोगी है। जले– कटे, खरोंच, घाव एवं दुःखी पत्ती का ताजा अर्क या प्रलेप फायदेमन्द होता है, इससे घावों में मक्खियां हीं बैठतीं । प्रसूता स्त्री को पत्ती के गुनगुने पानी से स्नान कराने से में राहत मिलती है और स्फूर्ति आती है। इसकी जड़ का क्वाथ ज्वर एवं बहुत लाभप्रद है। इसका तेल उच्च रक्तचाप एवं उत्तेजना कम करता है।

— o —

18 iFkjpVk ;k

ckgifo;k fM¶;

Boerhavia di

dly% fuDVkftulh

vU; ipfyr uke

हॉगवीड, पिगवीड (अंग्रेजी), रवपरा, गदहपर्णी (हिन्दी), पुनर्नवा, शिवाटिका (संस्कृत), गन्धपूर्ना, पुनर्नावा (बंगाली), पुनर्नवाई, घेपुल इतसिट, खट्टम (पंजाबी), सातोड़ी, सातादी (गुजराती), तेलुटामा, (तमिल), अंतातममिदी, अटकामानिडि (तेलगू), तजुतामा, तमिलाम सन्डिक गोंजलि, विलीय (कन्नड़)

igpku

यह भूमि के सहारे फैलने वाला वर्षा ऋतु का प्रमुख खरपत बीज से पनपता है। अपने अत्यधिक विसर्पी शाखाओं एवं बढ़वार से को बिल्कुल ढ़क लेता है।

चित्र–17 iFkjpVk ¼ckgifo;k fM¶;tk½
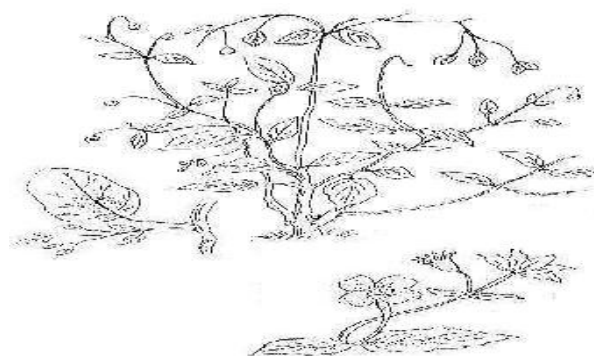
यह समस्त भारतवर्ष में उपजाऊ खेतों, सड़क व रेलपथ के

खाली पड़ी भूमियों में बहुतायत में देखा जाता है। पत्तियों के आकार एवं के अनुसार इसकी अनेक प्रजातियां होती हैं। इसकी भुथरी जड़ जमीन जाती है जिसको कुचलने से दूध जैसा सफेद पदार्थ निकलता हैं। इसकी ाखायें भूमि से थोड़ा ऊपर चारों ओर फैलती हैं। असमान आकार वाली ार या गोलाकार पत्तियाँ जोड़े में निकलती हैं। पत्ती की लम्बाई 2.5 से तथा चौड़ाई 2–3 सेमी. होती है। ऊपरी सतह चिकनी तथा नीचे सफेद ी हैं। पत्तियाँ किनारों पर लहरदार तथा लाल होती हैं। लम्बे पुष्पवृन्त एवं ुड़ियों वाले सफेद या रक्ताभ पुष्प पत्ती के अक्ष से गुच्छे में आते हैं। फल ोलाकार तथा ग्रन्थियुक्त धारीदार होते हैं।

h; mi;kx

सांठ में 'पुनर्नवीन' नामक प्रमुख क्रियाशील क्षाराभ पाया जाता है। अपने ी शरीर को पुनः नया सा बनाने के गुण के कारण ही इसे पुनर्नवा कहते की पत्तियों का प्रलेप वृण, फोड़ा–फुन्सी में लगाने से फोड़ा जल्दी पककर है जिससे दर्द एवं सूजन से राहत मिलती है। इसका काढ़ा वमनकारी, क तथा ज्वरनाशक होता है। बच्चों में बलगम बनने, कामला (पीलिया) एवं ता होने पर पत्ती एवं जड़ का अर्क नारियल पानी के साथ देने से तुरन्त ता है। मूत्रण में कठिनाई, ड्राप्सी तथा वृक्क शिथिलता में इसका अर्क गाय के साथ लेने से विशेष लाभ होता है। बिच्छूदंश में डंक वाले स्थान पर तों व जड़ का प्रलेप लगाना हितकर होता है। कान में अर्क डालने से में लाभ होता है। सूखी खांसी, अस्थमा, कब्ज, ब्रोंकाइटिस, पीलिया, , उदरशूल, सुजाक आदि में पुनर्नवा की जड़ बहुत उपयोगी है। पेचिस, ान्य शोथ व शिथिलता, उदरकृमि तथा जटिल मूत्रण में इसकी जड़ का ा चूर्ण शहद के साथ लेने से तुरन्त आराम मिलता है। प्रसूता स्त्री में तनाव, ता, खांसी तथा शोफ की स्थिति में इसका ताजा क्वाथ बहुत लाभप्रद । सर्पदंश में जड़ का पेस्ट (लेई) घाव में लगाने से विष प्रभाव कम होता ्वा (पैरालिसिस) होने पर जड़ का चूर्ण काली मिर्च के साथ प्रलेपने से ायदा होता है।

—o—

19

enu

ckjfjvk fgfLiMk ¼fy-½

***Borreria hispida* (L.) K.**

dly½ #fc,lh

vU; iapfyr uke

बटन वीड(अंग्रेजी), मदनघांटी (संस्कृत), नादना (तेलगू), (तमिल), घन्टाचीबाजी (मराठी)

igpku

यह हिमालय की निचली पहाड़ियों तथा उत्तरपूर्वी राज्यों के अधिक वर्षा एवं आर्दृता वाले क्षेत्रों में बीज से उगने वाला प्रमुख पौधा है। यह चाय के बागानों में अत्यधिक उगने वाला प्रमुख चौड़ खरपतवार है। पूरा पौधा रोमों से ढ़का रहता है।
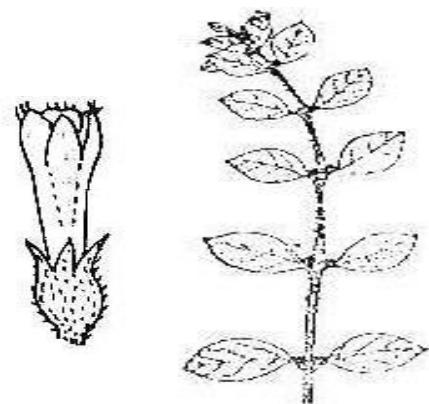
चित्र–18 enu?kVh ¼ckjfjvk fgfLiMk½

इसका तना चतुष्कोणीय, अत्यधिक शारिवत, घने रोयेंदार त सेमी. लम्बा होता है। पौधा देखने में बड़ी दुद्धी के समान किन्तु आव

। यह कम पी.एच. मान वाली अम्लीय मृदाओं में बहुत पनपता है। तना
पर्णवृन्त वाली सम्पूर्ण, अण्डाकार, नुकीली ,घने रोयेंदार पत्तियाँ एक दूसरे
ीत जोड़े में निकलती हैं। पत्ती 3–5 सेमी. लम्बी व 2–3 सेमी. चौड़ी, घनी
एवं स्पष्ट शिरा विन्यास वाली होती हैं। पौधा जुलाई से अक्टूबर के
लता है। छोटे–सीमाक्ष पुष्पक्रम पत्ती के अक्ष से निकलते हैं जिसमें सफेद
छोटे–छोटे पुष्प होते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) गोल एवं रोयेंदार होती
में अनेक बीज होते हैं।

; mi;kx

इसकी जड़ का काढ़ा शरीर की धातुओं का पुनर्नवीकरण कर बुढ़ापा,
दि से दूर रखने वाले रसायन के रुप में बहुत उपयोगी है। कीड़े पड़ने पर
जड़ एवं पत्ती की भाप मुख के अन्दर खींचने से दांत– मसूड़ों के कीड़े मर
। इसके बीज तीव्र उत्तेजक होते हैं।

—o—

20

dlkSanh ;k dlk

dfl ;k vkDlhMsVfy

Cassia occiden

dqy% yX;qfeukslh

vU; izpfyr uke

नीग्रो काफी प्लांट (अंग्रेजी), कसिंदा, गजरसाग (हिन्दी),
कासारि (संस्कृत), कसंदी, कसोन्द्री (गुजराती), कसेन्दा, कालकसुन्
कासविन्दा, नट्टामटकारा (मलयालम), कासिन्दा (तेलगू), नट्टम टक

igpku

कसौंदी वर्षा ऋतु में सर्वत्र उगने वाला प्रमुख एकवर्षीय खर
गांव एवं सड़क किनारे खाली पड़ी भूमि, उपजाऊ खेतों तथा जंगलों
उगती है। यह दो प्रकार की होती है–एक हरी कसौंदी तथा दूसरी का
के नाम से पहचानी जाती है।
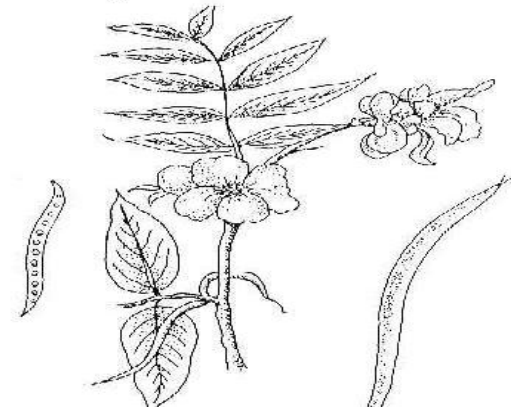
चित्र–19 dlkSnh ¼dfl;k vkfDlMsVfyl½

अत्यधिक शाखाओं युक्त इसका पौधा 1.5–2 मीटर ऊंचाई
है। संयुक्त पत्ती में 10 भालाकार पत्रक जोड़े में एक दूसरे के विपरीत
पत्तियाँ 3–10 सेमी. लम्बी तथा 3–7 सेमी. तक चौड़ी व गहरी हरी हो

के पांच दलपत्रों वाले पुष्प संयुक्त पत्ती के अक्ष से लम्बे डण्ठल पर लगते
ारण चौडी, पतली व चपटी फली 7–10 सेमी0 तक लम्बी होती है। रोम
म्बी फली में टिकिया की तरह चपटे व पीले 10–15 बीज निकलते हैं।
न से पनपती है।

h; mi;kx

इसकी पत्तियों में 'कैथार्डिन' नामक विरेचक द्रव्य तथा बीजों में 'इमोडिन'
सीन' क्षाराभ पाये जाते हैं। इसका पूरा पौधा औषधीय गुण वाला होता
रकृमि, पीलिया, बलगम युक्त खांसी, हिचकी, जलोदर तथा आमवातिक
ने पर इसकी पत्तियों का अर्क या काढ़ा बहुत लाभप्रद रहता है। यह
क, मृदुरेचक, ज्वरनाशक तथा मूत्रवर्धक होता है। रतौंधी, आंख आने, दाद,
तथा संधि शूल पर पत्तों का स्वरस एवं प्रलेप लगाना हितकर होता है।
बिच्छू दंश तथा अन्य विषैले कीड़ों के काटने पर ताजी जड़, नई कोपलें
पकी फलियों का प्रलेप डंक वाले स्थान पर लगाने से विष उतर जाता
–खाज तथा सेहुंआ में पत्ती एवं बीजों को पीसकर लगाना चाहिए। मसूड़ो
द व खून आने पर पूरे पौधे के क्वाथ से कुल्ला करना चाहिए। सूखा रोग
लपांव होने पर जड़ का अर्क गाय के घी के साथ पीना चाहिए। इसके
चने तथा इनका अर्क नाक में डालने से मिरगी का दौरा खुल जाता है।
ा स्वरस पीने तथा आंखो में आंजने से रतौंधी एवं अन्य नेत्रविकार दूर होते
की जड़ घर में रखने से सर्प का भय नहीं रहता।

—o—

21 pdq.Mk ;k pdk

dfl ;k Vk

Cassia

dqy% lhlyihfu,lh

vU; ipfyr uke

फटिड केसिया (अंग्रेजी), चकौर, चाकुड़ा, चकवड़, पंवाड़ (हिन्दी
दादमारी, प्रपुन्नाड (संस्कृत), चकुन्दा (बंगाली), कुंबाडियो, पुंवाडियो
पंवार, चकुन्दा (पंजाबी), टकला (मराठी), टगरई, उसिहगरई (तमि
(कन्नड़), लगीरिस, टंटेमू (तेलगू)

igpku

चकौड़ा खरीफ मौसम में बीज से बहुतायत में पनपने वाल
खरपतवार है। इसके क्षुपनुमा पौधे समूहों में खेत, मैदान, कूड़ा–करक
सड़क व रेलपथों के किनारे तथा अन्य खाली पड़ी भूमियों में खूब उगते
पत्तों में विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आती है। पत्तियाँ सूर्यास्त होते ही ज
दूसरे से चिपक जाती हैं और प्रातःकाल सूर्योदय पर फिर खुल जात

चित्र–20 pdoM+ ¼dfl ;k Vkjk½
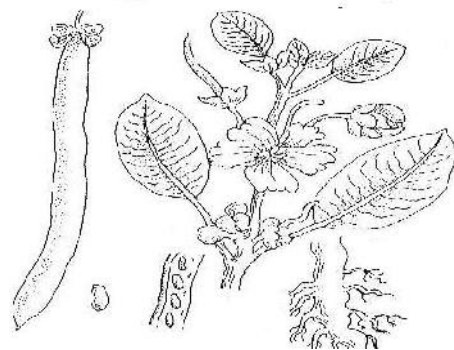
संयुक्त पत्ती में 3 जोड़े लगभग 4–5 सेमी. लम्बे व 3–4

ार पत्रक एक दूसरे के विपरीत लगे होते हैं। पत्रकों के फलक में
छोटी ग्रन्थियां पायी जाती हैं। जड़ भूमि में काफी गहरी जाती है। छोटे
रंग के फूल पत्ती के अक्ष से जोडों में निकलते हैं। इनमें तितलियां खूब
। फली मुलायम, 15–20 सेमी0 लम्बी, चतुष्कोणीय वक्राकार तथा नुकीली
। फलियां पकने के साथ पौधे भी सूखने लगते हैं। फली में मेंथी दाना की
ले और उनसे दुगुने आकार के 20–25 बीज निकलते हैं।

; mi;kx

चकवड़ का पूरा पौधा औषधीय रूप से उपयोगी है। पत्तियों में 'कैथर्टिन'
जों में 'इमोडिन' व 'क्राइसोफेनिक एसिड' की प्रचुर मात्रा पायी जाती है।
नाशक, कृमिहारी, दर्दहारी तथा दाद–खाज विनाशक होता है। सर्पदंश,
ंश तथा ददोड़ों में ताजी जड़ का प्रलेप अति लाभप्रद होता है। पत्तियों
थ मलेरिया ज्वर, उदरकृमि तथा पेट साफ रखने में उपयोगी है।
सी' होने पर पत्तियों का प्रलेप कपाल में लगाना चाहिए। तंत्रिका विकार
का अर्क व उनकी सुगन्ध लेना चाहिए। शरीर में दाद, अकौता, चकत्ता,
चमौरी आदि चर्म रोगों में ताजी पत्तियों तथा बीजों का प्रलेप रामबाण
है। फोड़ा न पकने पर पत्तियों व फूलों का गर्म प्रलेप बांधने से फोड़ा
फूट जाता है। किटिभि (सोरिआसिस), शीतपित्त, कण्ठमाला, सिरदर्द,
आदि में बीजों का प्रलेप लगाना हितकर होता है। स्त्रियों में श्वेत प्रदर होने
ों का चूर्ण लाभप्रद है। पीलिया एवं डायबटीज रोगों में बीजों का चूर्ण
चाहिए। यह बल्य एवं पाचक होते हैं।

—o—

22

lQsn eqxZ ;k fp

flykfl vk vtifU

Celosia arge

dy% vejUFkl h

vU; ipfyr uke

काक्स काम्ब (अंग्रेजी), सरवारी, सरहवारी, सुरवारु (हिन्दी
(बंगाली),कुरडू (मराठी), सरवली (पंजाबी), विटुन्ना (संस्कृत), गुरुगू (

igpku

खरीफ मौसम में बीज से उगने वाला मुर्गकेश एकवर्षी
खरपतवार है। यह मूंगफली, ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, मूंग आदि के
खाली पड़ी भूमियों में बहुतायत में उगता है।

चित्र–21 lQnexi ¼flykfl ;k vtifUl ;k½
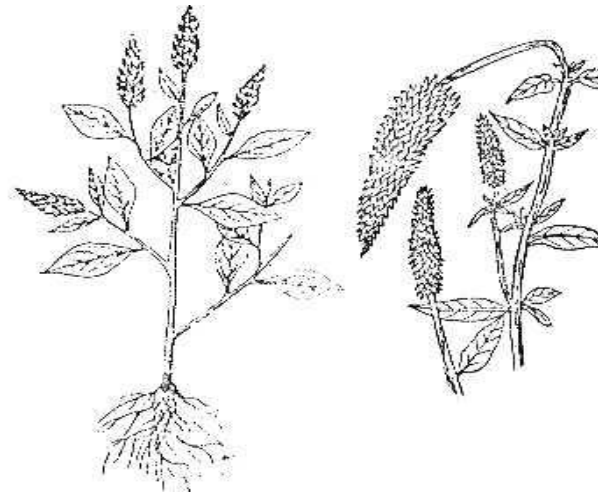
इसका पौधा सीधा, चिकना तथा लालाभ तना युक्त 1–1.5
होता है। पत्तियाँ एकान्तर, साधारण, अशाखित एवं 5–10 सेमी0 लम

। तना एवं शाखाओं की सीमाक्ष से गुलाबी–सफेद पुष्पक्रम सितम्बर– में आते हैं और दिसम्बर–जनवरी तक पौधा सूखने लगता है। अपने की अलग पहचान से यह दूर से ही दिखयी देता है। पुष्प में काले– रंग के छोटे–छोटे सैकड़ों बीज निकलते हैं। आग में इसके बीज डालने आवाज के साथ फूटते हैं। इसकी एक किस्म मयूर शिखा या लाल मुर्गा फूलों के लिए अलंकृत वाटिकाओं में खूब उगायी जाती है।

h; mi;kx

इसमें 'बिटेनिन' नामक रसायन एवं बीजों में वसीय तेल निकलता है। फूल स्तम्भक एवं पौष्टिक होते हैं तथा अतिसार एवं स्त्रियों में अत्यधिक स्राव होने पर बहुत फायदेमन्द हैं। इसके बीजों का चूर्ण या क्वाथ जक, वीर्य प्रवर्तक एवं वीर्यशोधक होता है। पुराना अतिसार एवं रक्तविकार बीजों का काढ़ा पीना चाहिए। मुख में छाले होने पर इसके क्वाथ से करने से तुरन्त आरोग्य मिलता है। बीजों का तेल आंख की रोशनी बढ़ाता

—o—

23

cFkqvk ;k c

phukikfM;e ,

Chenopodium a

dqy% phukikfM,lh

vU; ipfyr uke

हाइट गूजफुट, पिगवीड, लैंब्स क्वार्टर्स (अंग्रेजी), वास्तूक बाथूसाग, चन्दनबेतू (बंगाली), बाथू (पंजाबी), चाकवत, चिविल (मरा चीला, टांको (गुजराती), पारुपुक्करी (तमिल), पापूकुरा (तेलगू)

igpku

यह बीज से पनपने वाला रबी ऋतु का प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। मक्का, गेहूं, जौ, सरसों के खेतों, बाग–बगीचों तथा उपजाऊ भूमियों में यह खूब पनपता है।

चित्र–22 cFkvk ¼phukikfM;e ,Yce½
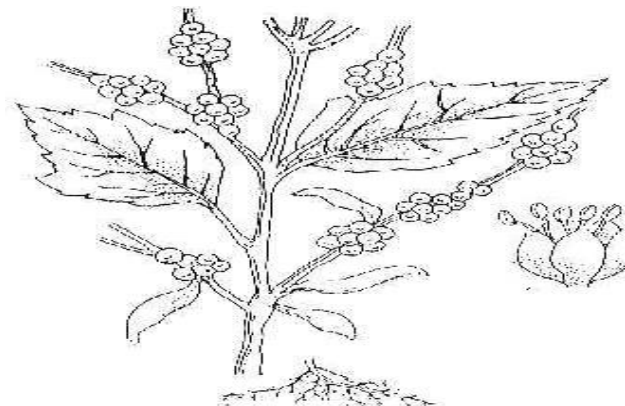
अपनी तीव्र बढ़वार के कारण यह मुख्य फसल को ढ़क लेत

पत्तियों का साग बनाकर खाते हैं। इसमें विटामिन–सी तथा आयरन प्रचुर पाया जाता है। इसका पौधा 50–150 सेमी. तक बढ़ता है। लम्बे डण्ठल ांतर पत्तियां बड़ी, मांसल, खुरदुरी, ताम्रलाल–हरी तथा भालाकार व पर बड़े दांतेदार होती हैं। नई पत्तियों में भूरे–सफेद रंग के मुलायम रोयें ते हैं जो सफेद कणों (क्रिस्टल) की तरह चमकते हैं। पत्तियों के अक्ष तथा ों के अग्रभाग पर लम्बे डण्ठल युक्त पुष्पक्रम (मंजरी) में दलपत्र रहित छोटे छों में लगते हैं। एक पौधे से हजारों सूक्ष्म बीज उत्पन्न होते हैं। इसकी य प्रजाति खरबथुआ या खरतुआ (*ची. म्यूरेल* लि.) भी खरपतवार के रूप उगती है।

h; mi;kx

इसकी पत्तियों में कैल्सियम, आयरन, फास्फोरस तथा प्रोटीन की ा होती है। इसमें 'ल्यूटीन' एवं 'जिआजेन्थीन' एल्बुनाइड्स भी पाये गये ों में 'सैपोनिन' तथा 'विटामिन–सी' की प्रचुरता होती हैं। इसका साग क, क्षुदा–वर्धक, रक्तशोधक, उदरकृमिनाशक तथा नेत्र दृष्टि वर्धक होता पित्त, क्षयरोग, कुष्ठ, कालाजार, मलेरिया, सुजाक, कब्ज आदि में इसका त्तम पथ्य है। आग से जलने, दुर्गन्धित घाव, नासूर एवं फोड़ों पर बथुआ यम पत्तों का गर्म प्रलेप या पाल्टिस बांधना चाहिए। बथुआ का स्वच्छ अर्क ं डालने से रतौंधी तथा आंख दर्द में फायदा होता है। पेशाब में जलन, वं प्लीहा की सूजन, पथरी तथा कामला होने पर पत्तों का क्वाथ लेना होता है। पीलिया तथा रक्तपित्त होने पर इसके बीजों का चूर्ण शहद के टना चाहिए। पशु के जेर (प्लेसेन्टा) न डालने की स्थिति में बीजों का वाथ पिलाने से गर्भाशय साफ हो जाता है। बीजों का तेल श्वेत कुष्ठ में होता है। इसकी जड़ की दातून करने से दांत व मसूड़े स्वस्थ रहते हैं तथा ा ठीक होता है।

— o —

24 gqjgqj ;k gq

Dy:vkeh foLd

Cleome vis

dqy% dSifjsMslh

vU; izpfyr uke

वाइल्ड मस्टर्ड (अंग्रेजी), कनफुटिया (हिन्दी), अर्ककंटा (संस्कृत तिलपर्णी (बंगाली), आरियविला (मलयालम), नयिक्का डुगु (तमिल), कु (तेलगू)

igpku

यह वर्षा ऋतु में उपजाऊ खेतों एवं परती भूमियों में बीज वाला प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है।

चित्र–23 gqygqy ¼Dyh;kseh foLdkslk½

इसका शाकीय पौधा सीधा एवं 30–90 सेमी0 ऊंचा होता है तरह की संयुक्त पत्ती में 3–5 अंगुली नुमा व रोयेंदार पत्रक होते हैं। पुष्प लम्बे व असीमाक्ष पुष्पक्रम पर आते हैं। फली (सम्पुटिका) पतल

मी. लम्बी, द्विपालीय तथा दोनों छोरों पर पतली–नुकीली होती है। फली
भूरे रंग के वृक्काकार एवं झुर्रीदार बीज निकलते हैं। बीजों में सरसों की
ल निकलता है।

h; mi;kx

इसकी पत्तियों एवं ग्रन्थियों से 'विस्कोसिन' क्षाराभ एवं चिपचिपा पदार्थ
ा है। पेट फूलने एवं मंदाग्नि में पत्तियां सब्जी के रूप में खाते हैं। ज्यादा
इसका प्रयोग तीव्र दस्तावर होता हैं। पत्तियों का ताजा अर्क स्वेदक एवं
नक होता हैं। तवचा पर पत्ती रगड़ने से लाल चकत्ते उत्पन्न होते हैं। फोड़े
ा प्रलेप मवाद नहीं बनने देता। कान से मवाद आने एवं दर्द होने पर पत्ती
गर्म तेल के साथ डालने से शीघ्र आरोग्य मिलता है। यह वृण एवं घावों
क करने के लिए भी उपयोगी है। बीजों में 'विस्कोसिक अम्ल' एवं तैलीय
ोता है। बीजों का काढ़ा वातानुलोमक, उत्तेजक, स्तम्भक एवं उदरकृमिहारी
। बच्चों में गोलकृमि होने पर बीजों का चूर्ण शहद के साथ देना चाहिए।
काढ़ा कीड़े युक्त घावों एवं पीड़ा युक्त फोड़ा साफ करने में भी उपयोगी
ड़ों के पुराने दर्द एवं वृण में इनकी पॉल्टिस बांधने से आराम मिलता है।
तरल लेई (पेस्ट) सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं।

—०—

25

dks;y ;k vijk

fDyVkfjvk Vuf

Clitoria tern

dqy% yX;qfeuks lh

vU; izpfyr uke

बटरफ्लाई पी (अंग्रेजी), कालीजर, धनन्तर (हिन्दी), अपराजिता,
विष्णुक्रांता (संस्कृत), अपराजित (बंगाली), गरणी, कोली (गुजराती
कक्कनम (मराठी), गिरिकर्णिके (कन्नड़), काकणनकोटी (तमिल), दिन

igpku

यह एकवर्षीय लता है जो भूमि या किसी दूसरे पौधे के स
चढ़ती है। बाग–बगीचों तथा खेतों की मेड़ों पर इसे खूब देखा जाता
श्वेत और नीले सुन्दर फूलों के कारण यह अलंकृत उद्यानों में भी सामान
जाती है।
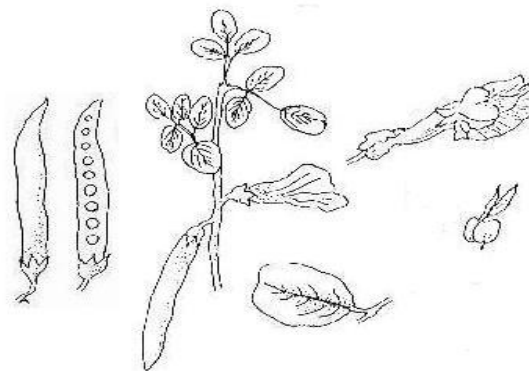
चित्र–24 dkyhtj ¼fDyVkfjvk Vufl;k½

इस लता की संयुक्त पत्ती में 5–7 जोड़े अण्डाकार पत्रक हो
के अक्ष से सीप या गाय के कान सदृश्य सुन्दर नीले या सफेद पुष्प

हैं। मटर की तरह के पुष्प का मानक (स्टैण्डर्ड) दलपत्र का केन्द्र नारंगी
द होता है। मटर की फली जैसी किन्तु चपटी एवं पतली फली में काले
ो तरह 5–10 चपटे–गोल बीज निकलते हैं। इसका प्रसारण बीज से होता

; mi;kx

इसकी जड़ तथा बीज की छाल में 'टैनिन' एवं 'स्टार्च' तथा बीजों में तेल
ान की प्रचुर मात्रा होती है। इसका प्रयोग कभी असफल नहीं होता
इसे अपराजिता कहा गया है। तपेदिक बुखार में अधिक पसीना निकलने
के पत्तों का अर्क अदरक के साथ लेने से तुरन्त लाभ मिलता है। सिर दर्द,
थियों की दर्द भरी सूजन तथा कर्ण शूल में पत्तियों का प्रलेप तुरन्त फायदा
है। इनका काढ़ा घाव व अल्सर धोने में प्रयोग किया जाता है। सर्पदंश
पूरे पौधे की लेई का प्रलेप लगाने से विष प्रभाव कम होता है। इसकी
दरकृमि नाशक, मूत्रवर्धक, शांतिकर, मृदुरेचक तथा कफनाशक होती है।
छाल दस्तावर होती है। इसके प्रयोग से उल्टी (वमन) करने की इच्छा
। जड़ की छाल या पत्तियों का चूर्ण शहद के साथ खाने से गर्भपतन रुक
। श्वास नली शोथ, कण्ठमाला, चेहरे पर झुर्रियां तथा सुजाक होने पर जड़
प लगाने से शीघ्र फायदा होता है। अनवरत हिचकी आने पर इसके बीजों
ान करने से तुरन्त लाभ होता है। इसके बीज मृदुरेचक तथा कफोत्सारक
बच्चों में सर्दी, खांसी तथा कब्ज होने पर बीजों का चूर्ण गुड़ या शहद
देना हितकर है। इसके पत्तों को किताबों, अनाज एवं कपड़ों में रखने से
हीं लगते। प्रसववेदना एवं गुद (कांच) निकलने पर इसकी जड़ कमर में
ने लाभ होता है।

—o—

26 iFkjpwj ;k vej

dkfyvl ,Eck;fud

Coleus amboinicu

dy % yfc,lh

vU; ipfyr uke

इण्डियन बोरिज (अंग्रेजी), पाषाणभेदी, सुगन्धा (संस्कृत), पत
कुची (बंगाली), पथरकुची (पंजाबी), कर्पूरवल्ली (तमिल), पानांचा ओ

igpku

यह 30–60 सेमी. ऊंचाई तक सीधा बढ़ने वाला बहुवर्षी
पौधा है जो बरसात में पनपता है। इसकी जड़ बहुत गहरी जाती है।
व रेलपथों के किनारे तथा अन्य खाली पड़ी कंकरीली–पथरीली
बाग–बगीचों में खूब उगता है।

चित्र–25 iFkjpj ¼dkfyvl ,Eck;fud l½
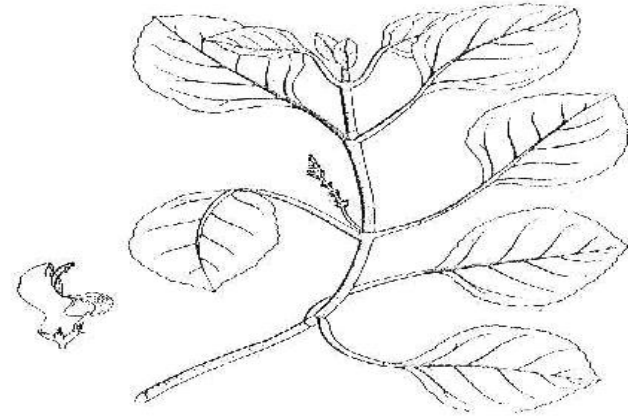
इसका तना व शाखायें पीताभ–हरी, 0.5 से 1 सेमी. मोटी,
रोमिल होती हैं। इसकी वानस्पतिक वृद्धि खरीफ मौसम में तीव्र गति

पूरा पौधा ताम्र आभा वाला दिखता है। लम्बे व मांसल पर्णवृन्त युक्त एक दूसरे के विपरीत चक्राकार निकलती हैं। पत्तियां मांसल, मुलायम, एवं हृदयाकर या अण्डाकार तथा 4–5 सेमी. लम्बी होती हैं जिनके दांतेदार कटाव युक्त होते हैं। पत्तीं की ऊपरी सतह पर शिरायें धंसी हुई ोती हैं। पत्ती या पूरे पौधे को मसलने पर अजवाइन की तरह मनमोहक आती है। शाखाओं के सीमाक्ष से फरवरी–मार्च में लम्बी पुष्प मंजरी ी हैं जिनमें हल्के नीले या बैगनी रंग के छोटे–छोटे पुष्प लगे रहते हैं। पुष्प चक्र दांतेदार एवं घंटी के आकार वाले होते हैं। बैंगनी रंग के दलपत्र से काफी बड़े होते हैं।

h; mi;kx

सुगन्धा के मांसल तना व पत्तियों में 'कैल्सियम आक्जेलेट', 'ग्लुकोसाइड्स' गन्धित तैलीय पदार्थ पाया जाता है। जलने, सिरदर्द तथा कनखजूरा के पर पत्तियों को मसलकर लगाने से आराम मिलता है। पत्तियों का काढ़ा ारों, योनिगत स्रावों, आंत्रशोथ, मंदाग्नि तथा वातविकार में बहुत लाभप्रद । बच्चों में कफ, ब्रोंकाइटिस, पेटदर्द, मंदाग्नि तथा मूत्रविकार होने पर का सुगंन्धित अर्क चीनी या शहद के साथ देने से तुरन्त आराम मिलता की कन्दीय जड़ें रक्तचाप कम करने में उपयोगी होती हैं।

—o—

27 dudkSvk ;k du'

dkefyuk cxkyf

Commelina benghal

dqy% dkefyulh

vU; ipfyr uke

डे फ्लावर, वेन्डरिग ज्यु, स्पाइडर वर्ट (अंग्रेजी), कैना, का कंचटा, कोषपुष्पी (संस्कृत), कनचारा (बंगाली), कनवझाई, कनंगकरा वेन्नाडीविकूरा (तेलगू), वेझापज़ाटी (मलयालम)

igpku

यह खरीफ ऋतु की फसलों के खेतों में बहुतायत में उगने खरपतवार है। यह जलभराव, दलदली एवं नम भूमियों तथा वर्षाऋ पड़े उपजाऊ खेतों में खूब पनपता है। यह बीज से उगने वाला एकवर्ष पौधा है।
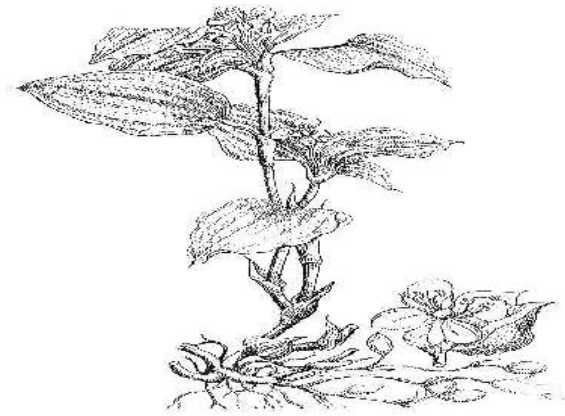
चित्र–26 dudkvk ¼dkefyuk cxkyfIl½

इसका शाकीय–मुलायम व मांसल तना 30–40 सेमी० ल बढ़ता है। ज्यादा बढ़वार होने पर मुलायम तना जमीन पर गिर जाता

रे बढ़ता हैं। इस चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार की एकांतर, साधारण एवं ार पत्तियों में समानांतर शिराविन्यास तथा किनारे चिकने व पूर्ण होते हैं। का किनारा आधार की ओर सिकुड़ कर पतला होता जाता है जो पर्णवृन्त ह दिखता है। पत्ती का पतला आधार तने को आवरण (शीथ) के रूप में है। तना टूटकर जमीन में छूने से नई जड़ें फूट आती हैं। इस तरह नम में इसे सालभर देखा जाता है। तना व पत्ती के अर्क में चिपचिपाहट होती के अग्रस्थ भाग पर पत्ती के अक्ष से बैंगनी–सफेद पुष्प आते हैं। छोटी कई एकबीजपत्री बीज निकलते हैं।

h; mi;kx

इसका पौधा कटु, मार्दवकर, शांति प्रदायक, दाहप्रशमक, कुष्ठनाशक दुरेचक होता है। इसका अर्क शरीर में शीतलता एवं मृदुता उत्पन्न करता र में घमौरी, घाव, फोड़ा, खरोंच एवं लोप्रोसी होने पर पत्तियों का अर्क से शीघ्र लाभ होता है। सर्पदंश में जड़ का प्रलेप हितकर है। बुखार एवं जलन होने पर जड़ का काढ़ा उपयोगी है।

—o—

28 fgju[kqjh ;k fgj

dkuokYoqyl voif U

Convolvulus arv

dqy% dkuokYoqyl h

vU; izpfyr uke

मार्निंग ग्लोरी, फील्ड बिन्ड वीड (अंग्रेजी), भद्रबाला (संस्कृ (बंगाली), हिरनपद्‌दी (पंजाबी), हिरनपग (मराठी)

igpku

यह बीज एवं प्रकन्दीय मूसला जड़ से सालभर पनपने वाल खरपतवार है। यह गेहूं, जौ, सरसों, दलहनी फसलों एवं अन्य पौधों मे या भूमि के सहारे बढ़ने वाली शाकीय लता है। उपजाऊ खेतों, बाग– मक्का, धान व सब्जियों के खेतों में इसे आसानी से देखा जा सकत

चित्र–27 fgju[kqjh ¼dkuokYoqyl voifll½

इसका तना मुलायम, चिकना एवं पौधों में लिपट कर बढ़ने हैं। अपनी अत्यधिक वृद्धि के कारण यह मेजबान पौधे को पूरी तरह

एकांतर, सम्पूर्ण, साधारण, चिकनी तथा 3.5 –5 सेमी0 लम्बी व 2–3
चौड़ी होती हैं। लम्बे पर्णवृन्त वाली पत्तियां आधार पर चौड़ी व ऊपर
होती है और हिरन के खुर के समान दिखती हैं। इसमें पुष्पन जून से
के बीच होता है। पत्ती के अक्ष से लम्बे व पतले पुष्पवृन्त युक्त गुलाबी
ते हैं। कीप के आकार के पुष्प लगभग 3 सेमी० लम्बे होते हैं। फली
का) में अनेक छोटे–छोटे काले–भूरे रंग के बीज होते हैं।

; mi;kx

इसके पौधे में 'कनवाल्वुलिन' रसायन तथा जड़ में राल (रेजिन) की प्रचुर
ती है। इसकी जड़ का चूर्ण या क्वाथ तीव्र विरेचक तथा वातानुलोमक
में बहुत उपयोगी है। उदरस्फीति, जलोदर एवं मलबन्धता होने पर जड़
(रेजिन) शीघ्र आरोग्य देती है। पत्तियों का प्रलेप या अर्क खुश्क त्वचा,
एवं वृण में हितकर है।

—o—

29 psap lkx ;k taxyh

dkjdkjl ,D;Vxy

Corchorus acutangulu

dqy % fVfy,lh

vU; izpfyr uke

ज्यूज मैली वीड (अंग्रेजी), बफूली, पटुवा (हिन्दी), कालासाक
(संस्कृत), तीतापट, नारचा (बंगाली), बहुफली, चुन्चडी (गुजराती), बाबुन
कडूचुन्च (मराठी), टीटमारा (असमिया), पिरट्टी (तमिल)

igpku

यह खरीफ ऋतु में बीज से उगने वाला एकवर्षीय खरपतव
वर्षा ऋतु में उपजाऊ खेतों तथा रास्तों के किनारे खाली जगहों पर
है। जड़ गहरी होने के कारण यह सालभर हरा बना रहता है। गावों
की पत्तियों का साग बनाकर खाते हैं। कुछ प्रजातियों की पत्तियां स्वा
होती हैं। पत्तियों को पानी में धोने से लिसलिसाहट उत्पन्न होती है

चित्र–28 iVok ¼dkjdkjl ,D;Vxyl½
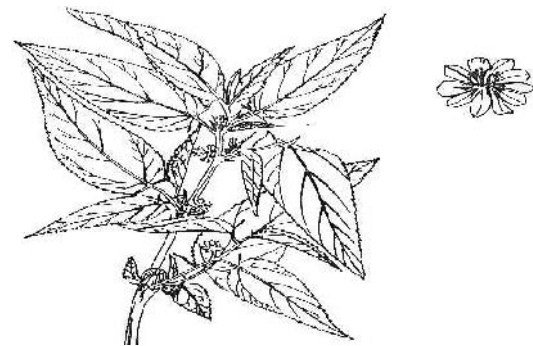
इसका तना सीधा, चिकना, बेलनाकार तथा शीर्ष पर अत्यधि
होता है। पौधा 0.75–1.25 सेमी० मीटर ऊंचा हो जाता है। पत्तियां

5–10 सेमी0 लम्बी व 2– 5 सेमी0 चौड़ी, हल्की हरी, खुरदुरी तथा पर दांतेदार होती हैं। पत्ती के दो सबसे निचले दांत लम्बे व वक्राकार न्तु में परिवर्तित हो जाते हैं। पर्णवृन्त छोटा व रोयेंदार तथा शिराविन्यास निचली रोमिल सतह पर होता है। मोटे पुष्पवृन्त वाले पीले रंग के छोटे कल या 3–4 के गुच्छे में आते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) सीधी, ार, 5–8 सेमी0 लम्बी एवं पंचपालीय होती है जिसका अग्रसिरा चपटा हो । फली में 10 झुर्रीदार, लम्बवत व उभरी धारियां होती हैं तथा फली को ग पर पांच नुकीले बिन्दु होते हैं। फली लम्बवत् फटती है जिसमें प्रत्येक ाल्व) में अनेक बीज निकलते हैं।

h; mi;kx

इसकी पत्तियों में 'कॉरकोरिन' एवं बीजों में 'कारकोरिटिन' नामक कटु ाइड्स पाये जाते हैं। इसकी पत्तियां वातानुलोमक, मार्दवकर, मृदुरेचक, नि उद्दीपक, क्षुदावर्धक, पौष्टिक, ज्वरनाशक, कृमिहारी एवं आंत्र अपूतिक ष्टिक) होती हैं। सुजाक, मंदाग्नि, यकृतविकार, पेचिस, पित्तविकार तथा पत्तियों का क्वाथ बहुत लाभदायक होता है। बच्चों में बुखार, चिड़चिड़ापन, मि, डायरिया, आंत्रशूल, सर्दी–जुकाम एवं चर्मविकारों में सूखी पत्तियों का क्वाथ या ताजी पत्तियों का अर्क देना आरोग्यकारी होता है। पत्तियों के या पानी में भिगोने से लसदार पदार्थ बनता है जो पेचिस, आंत्रकृमि, कार एवं मंदाग्नि में बहुत लाभप्रद है। सूखी जड़ एवं अपरिपक्व फली) का काढ़ा अतिसार एवं बुखार में बहुत फायदेमन्द होता है। सूजन एवं कुंसी में कच्ची फलियों का प्रलेप लगाना चाहिए। चेंच के बीज उदर अपच एवं न्यूमोनिया में बहुत फायदेमन्द होते हैं।

— o —

30 vkdk'kcsy ;k ve

dLdqVk fj¶yDl

Cuscuta reflex

dqy% dkuokYoqyl h

vU; izpfyr uke

डोडर (अंग्रेजी), अमरबेल (संस्कृत), अलगुसी (बंगाली), निर्मू अमिल (पंजाबी), सितम्मा पोगू (तेलगू)

igpku

यह पूर्णतः तना परजीवी खरपतवार है जो दूसरे पौधों एवं व व शाखाओं में लिपटकर अपना भोजन प्राप्त करता है। क्लोरोफिल की के कारण यह अपना भोजन स्वयं बनाने में अक्षम है। यह दलहनी फस बबूल आदि का बहुत हानिकारक परजीवी खरपतवार है। इसके सुन्द के कारण लोग इसे घरों की बाड़ (हेज) में फैला लेते हैं। बीज एवं भाग से पनपने वाला यह खरपतवार मुख्यतः एकवर्षीय परजीवी पौ इसे हर समय देखा जा सकता है।

चित्र–29 vejcsy ¼dLdqVk fj¶yDl k½
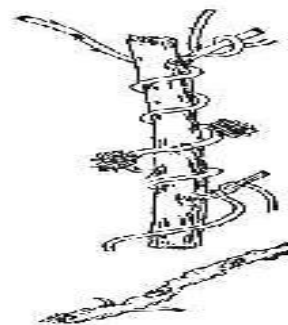
पौधे में लिपटकर फैलने वाले इस परजीवी पौधे में पत्तियां एवं

फिल) नहीं पाया जाता। इसका तना व शाखायें मुलायम, मांसल, मोटे समान गोल व लम्बी तथा पीले रंग की होती हैं। तना व शाखाओं से विशेष अंगों के सहारे यह पूरे पौधे में लिपटकर फैल जाता है और य पौधे का रस चूस कर पनपता रहता है। इस तरह आतिथेय पौधा होकर सूख जाता हैं। बबूल एवं अन्य पौधों में फैली अमरबेल देखने में न्दर लगती है। तना में वक्राकार छोटे पुष्पवृन्त युक्त सफेद पुष्प एकल या आते हैं। इनके सहपत्र छोटे व मांसल तथा दलपत्र त्रिपालीय होते हैं। टा, गोल व धंसा हुआ होता है जिसमें 2–4 बीज निकलते हैं।

; mi;kx

इसमें 'कस्कुटिन' एवं 'कस्कुटेलिन' नामक क्षाराभ पाये जाते हैं। यह ाक, स्तम्भक, मृदुरेचक तथा पुनर्नवीकारक होता है। पौधे का क्वाथ मि, अतिसार, ज्वर, उदरवायु तथा पित्तविकारों में बहुत लाभप्रद होता है। गर्म पानी घाव एवं घमौरियों को धोने में उपयोगी है। इसके बीज ो, पथ्यजनक, वातानुलोमक तथा पाचाग्नि प्रदीप्तक के रूप में बहुत हैं। बीजों का प्रलेप दर्दनाशक या वेदनाशामक का कार्य करता है। सूखे चूर्ण जख्मों में लगाने से शीघ्र आराम मिलता हैं।

—o—

31 nwc?kkl ;k gfj

lk;ukMku MDVkby

Cynodon dactyl

dqy% xzfeuh

vU; iz pfyr uke

बरमूडा ग्रास, दूबग्रास (अंग्रेजी), दूर्वा, हरितली (संस्कृत), (बंगाली), हरयाली (मराठी), हरवाली (तेलगू), अरुगम्पुलू (तमिल), (पंजाबी)

igpku

यह वर्षभर पनपने एवं उपलब्ध रहने वाली बहुवर्षीय घ उपजाऊ खेतों एवं खाली पड़ी भूमियों में बहुतायत में पनपती है भूमिगत भूस्तारी से पनपने वाली दूब घास विश्व के सर्वाधिक खरपतवारों में से एक है। इसकी अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं। जि अलंकृत हरियाली (लॉन) बनाने के लिए उगायी जाती हैं।

चित्र–30 nc?kkl ¼lk;ukMku MDVkbykku½
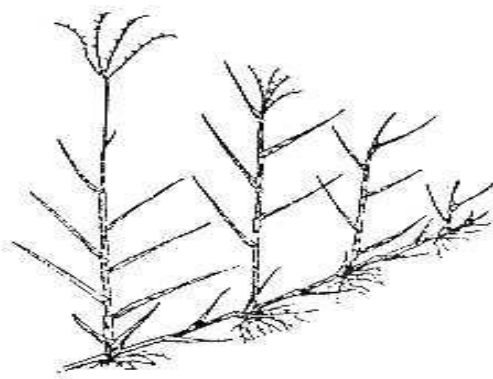
यह चिकनी पत्तियों वाली बहुवर्षीय घास है जिसका तना मु

तना के प्रत्येक गांठ से जड़ें निकलती हैं। इस तरह यह भूस्तारी के द्वारा पनपती रहती है और चटाई की तरह फैल जाती है। शाखायें छोटी व ढ़ती हैं और मिट्टी के सम्पर्क में आते ही प्रत्येक गांठ (नोड) से जड़ें निकल । तना से चिपकती हुई दो पंक्तियों में चपटी, पतली व चिकनी पत्तियां सेमी. लम्बी होती हैं। इसी की एक प्रजाति की पत्तियां सफेद होती है जिसे दूब' कहते हैं। यह औषधीय रूप से ज्यादा उपयोगी है। पुष्पक्रम का 5–50 सेमी. तक लम्बा होता है जिसमें लगभग 10 सेमी. लम्बे, मुलायम भ हरे कणिश (स्पाइक) 4–5 की संख्या में लगते हैं। बीज छोटे व काले होते हैं।

h; mi;kx

दूब का पूरा पौधा औषधीय गुण वाला होता है। यह मूत्रल, ग्राही, न्दक तथा वमनरोधी होता है। जलोदर, वमन, तेज व पुरानी पेचिस एवं र, बवासीर में रक्तस्राव, गर्मी (सिफिलिस) व दौरा पड़ने में पूरे पौधे का देना बहुत हितकर होता है। घाव, खरोंच, बवासीर तथा नाक से खून ा पर इसका अर्क या प्रलेप हितकर है। मूत्रांगों में जलन व पुराना स्राव, या तथा उल्टी में पौधे का अर्क दही के साथ लेना चाहिए। ग्रन्थिवात एवं के दर्द में इसकी मालिस फायदेमन्द होती है।

ड्राप्सी, मूत्राशय जलन, बवासीर में रक्तस्राव तथा मूत्रनली में पथरी होने का काढ़ा बहुत लाभदायक होता है। मूत्रांग से अत्यधिक स्राव होने पर अर्क दही के साथ सेवन करने से शीघ्र आराम मिलता है। आंख आने तियाबिन्द में इसका अर्क बहुत उपयोगी है।

—o—

32 eksFkk ;k ukxj ek

lkbij l jkV.

Cyperus rotu

dqy% lkbijlh

vU; izpfyr uke

नट ग्रास, पर्पिल नट सेज (अंग्रेजी), मुस्त (संस्कृत), मुथा, (बंगाली), मुन्तंगई, कोराई (तमिल), मुतंग (मलयालम), बारिक मुथा तगहुल्लू (कन्नड़), मोधी (मराठी), तुंगमुस्ते (तेलगू)

igpku

मूलतः भारत का यह पौधा विश्व के 90 से अधिक देशों में है और संसार का सर्वाधिक खतरनाक खरपतवार माना गया है। उप में बीज एवं भूमिगत प्रकन्द से वर्षभर पनपता रहता है। उष्ण कटिबन्धीय जलवायु की यह शाकीय घास लगभग सभी प्रमुख खरपतवार के रूप में उगती है। इसे शुष्क नम एवं गर्म जलवायु पस छायादार स्थानों में नहीं उगता।
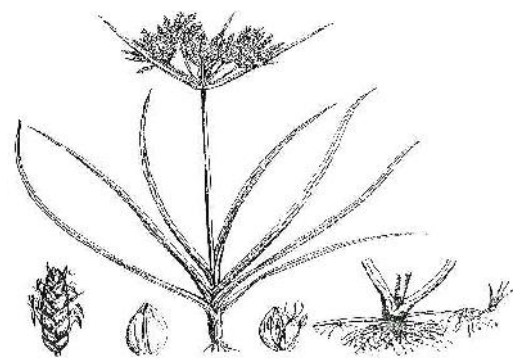
चित्र–31 ukxjeksFkk ¼lkbijl jkV.Ml½

इस घास का तना आधार पर फूला हुआ, मोटा, त्रिविमीय

। पत्तियां घास की तरह, चिकनी, चमकीली तथा सीधी धारवाली होती हैं ार पर तना को ढ़के रहती हैं। लगभग 15–60 सेमी0 ऊंची इस घास के तना के आधार के नीचे लगभग गोलाकार या अण्डाकार भूमिगत प्रकन्द । बिल्कुल ठोस ये प्रकन्द विशेष सुगन्धित तथा 2 सेमी0 तक लम्बे होते न्द गहरे भूरे रंग के पत्रों (स्केल्स) से ढ़का रहता है जिस पर रेशेदार व लम्बी जड़ें निकलती हैं। तिकोने डण्ठल युक्त लम्बा पुष्पक्रम पौधे के आध निकलता है जिसके ऊपर गहरे–भूरे या काले, घने एवं दलपत्रहीन पुष्प । फूल मुख्यतः जाड़े में आते हैं। कठोर सतह वाले चपटे फल में काले रंग बीजपत्रीय बीज निकलते हैं।

h; mi;kx

मोथा के गहरे भूरे रंग के सुगन्धित प्रकन्द (नट) में 'पाइनीन' रसायन ाता है। यह प्रकन्द औषधि के रूप में बहुत उपयोगी है। यह तीक्ष्ण, सुगन्धित, स्वेदकारी, मूत्रवर्धक, स्तम्भक, आंत्रकृमि नाशक, उदर दर्दहारी, पेट साफ करने तथा घाव ठीक करने के लिए बहुत उपयोगी है। प्रकन्द प फोड़ा–फुंसी, अल्सर, सूजन एवं घाव में अतिलाभकारी है। इससे घाव ख्यां नहीं बैठती और घाव जल्दी भरता है। इसकी प्रकन्दीय जड़ का अर्क अतिसार, मंदाग्नि, कालरा, ज्वर तथा उल्टी आने में फायदे मन्द होता है। भूख की कमी, अपच, वमन, अतिसार एवं ज्वर की दशा में इसका काढ़ा के दूध के साथ लेने से तुरन्त आराम मिलता है। जड़ का चूर्ण या अर्क शहद लेने से हैजा, वमन, बुखार तथा अन्य उदर एवं आंत्रविकारों में शीघ्र लाभ है। सूखा रोग एवं घिनौरी से ग्रसित बच्चों को मोथा की जड़ें बांधी जाती दा मात्रा में इसका काढ़ा पीने से पेट से गोलकृमि निकल जाते हैं। इसकी ड़ों की लेई प्रसूता स्त्री के स्तनों में लगाने से दूध अधिक आता है। स्तनों न तथा मलिन दूध आने पर इसका क्वाथ लाभप्रद होता है।

—o—

33 /krwjk ;k /k

MVjk e

Datura

dqy % lksykuslh

vU; ipfyr uke

ग्रीन थार्न एपिल (अंग्रेजी), कनक, शिव शेखरम्, धुस्तूर (संस्क धत्तूरा (पंजाबी), उमात्तई, उन्मात्तम (मलयालम), वेलू मत्तई, उन्मत्त धुन्तूरम, उम्मेत धतूरामू (तेलगू), मदकुणिके (कन्नड़), धोत्रा (मराठी), (बंगाली), धंतूरो, धंतूर (गुजराती)

igpku

शिवजी को अतिप्रिय धतूरा छोटी शाकीय झाड़ीनुमा पौधा है भर में सामान्यतः पाया जाता है। भारत में यह वर्षा ऋतु में खूब उग सड़कों के किनारे, परती भूमियों तथा कूड़ा–करकट के ढेरों में आसा जा सकता है।

चित्र–32.1 gjk /krwjk ¼MkVwjk eVsy½

यह विषैला व मादक पौधा है अतः इसे पशु भी नहीं खाते। जाता है कि भगवान शंकर नशा हेतु धतूरा का फल सेवन करते थे। अ

समय इसके पत्ते व फल अर्पित किये जाते हैं।

धतूरा की अनेक प्रजातियां हैं जिनमें हरा धतूरा *(ड. मेटल),* काला धतूरा *र्मोनियम)* तथा धूसर धतूरा *(डा. इनॉक्सिया)* प्रमुख हैं। इन्हें अलग–अलग ना आसान नहीं है। सभी का प्रसारण बीज से होता है। *ड. मेटल* खदानों पास, *ड. स्ट्रॅमोनियम* सर्वत्र तथा *ड. इनॉक्सिया* शुष्क भूमियों में ज्यादा ाता है।

चित्र–32.3 'or /krjk ¼MkVjk vYck½

2 /kl j /krjk ¼MkVjk bukfD l ;k½
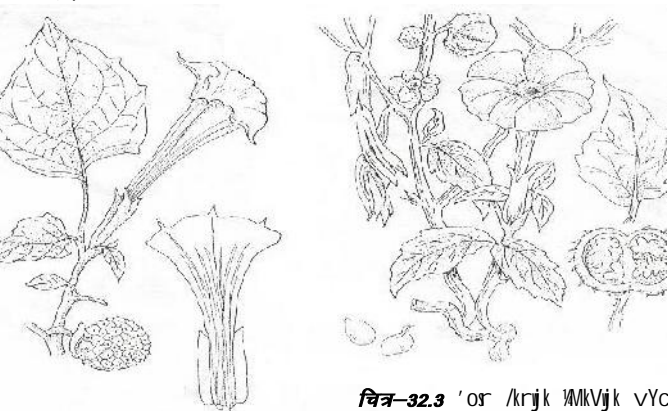
हरा धतूरा का तना खुरदुरा,सीधा एवं शाखायें रोमिल व जोड़े में होती 1–2 मीटर ऊँचा बढ़ता है। पत्तियां त्रिकोणीय अण्डाकार या आयताकार, 9–18 सेमी. लम्बी, असमान आधार तथा अनियमित व कम कटाव वाली । इन पर शिराविन्यास उभरा व बिल्कुल स्पष्ट होता है। पुष्प एकल, बड़े, सफेद तथा कीप के आकार के होते हैं और पत्ती के अक्ष से निकलते हैं। हरे, लगभग 6 सेमी. लम्बे तथा शिखर पर दांतेदार कटाव युक्त होते है। करीब 15 सेमी. लम्बे होते हैं जो गोलाई में 6–8 सेमी. व्यास के मुखवाली समान संरचना बनाते हैं। लगभग 3.5 सेमी. व्यास का फल अण्डाकार रा, अन्दर से चार भागों में विभक्त तथा ऊपर छोटे–छोटे हरे कांटों से ढका । जो सूखने पर अनियमित रूप से फटता है। इसमें हल्के भूरे रंग के चपटे व चिकने बीज होते हैं। *ड. इनॉक्सिया* की पहचान इसकी कांटे युक्त कार पत्तियों, घने मृदुरोमिल 10–कोणीय दलपत्र तथा लम्बे व नरम से करते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

धतूरा की हरी–सूखी पत्तियां, पुष्पकलियां तथा बीज औषधीय होते हैं। यह अत्यधिक नशीला और विषैला पौधा है अतः इसके अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। इसकी पत्तियों में 'कैल्सियम आक तना व पत्ती में 'हायोसिन', 'हायोसाइमिन', 'डाटूरिन' तथा 'एट्रोपीन' जाते हैं। इसके फूल तथा फल में 'स्कोपोलमीन' तथा 'एट्रोपीन' नामक ज्यादा मात्रा में होते हैं जिससे इन्हें खाने से ज्यादा नशा होने पर प लक्षण आ जाते हैं।

ताजी हरी पत्तियों का गर्म प्रलेप दर्द भरी चोट, जोड़ों की स बवासीर, पकनी खाज, करवारी तथा हाथ–पैरों की बिवाई में बहुत पत्तियों का अर्क सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं। आंख आने पर प कान में डालने से लाभ मिलता है। घाव व फोड़े–फुन्सी ठीक होने के बाद (स्कॉर) में वैसलीन के साथ इसका रस लगाने से दाग मिट जाते हैं। स्त्रि शोथ (मेस्टाइटिस) तथा पुरुषों में अण्डकोष (टेस्टीज) की दर्द भरी सूज का गर्म पत्ता बांधने से तुरन्त आराम मिलता है। ताजी पत्तियों का अर्क र तेल में उबली पत्तियां बवासीर में उपयोगी हैं। पत्तियों एवं फूलों को जल धुआं या सूखी पत्तियों की सिगरेट बनाकर पीने से दमा (अस्थमा), ब्रोंका कुकरखांसी में अतिशीघ्र आराम मिलता है। पागल कुत्ता के काटने पर अर्क गुड़ के साथ लेना चाहिए तथा काटे हुए स्थान पर बीजों का महीन के साथ लगाने के श्वान विष का असर बहुत कम होता है।

फलों का रस घाव एवं फोड़े–फुन्सी के दाग मिटाने, बालों के सिर की रूसी समाप्त करने हेतु उपयोगी है। छाती में दर्द भरी सूज इसका अर्क हल्दी के साथ लगाना चाहिए। धतूरा के बीज दर्दनाश ग्राही, विकासी, कामोत्तेजक, प्रदीप्तक तथा वादी–हारी होते हैं। मदकारी होने के कारण इसके बीजों को खाने के बजाय केवल वा प्रयोग की संस्तुति की जाती है। शरीर में अत्यधिक ऐंठन, बवासीर, सड़न, व्रण, सूजन आदि में बीजों का प्रलेप लगाना हितकर होता है

—o—

4

Å¡VdVkjk ;k ygS;k

bdhukIl bdhukVl jkDl-

***Echinops echinatus* Roxb.**

dEikfTkVh

ipfyr uke

कैमल्स थिसिल, ग्लोब थिसिल (अंग्रेजी), उतकंटा, गोकरू, घोढ़ा (हिन्दी), क, उत्कंटक, कंटालू (संस्कृत), उताण्डी, ऊटकटरी (मराठी), उत्कंटो, (गुजराती), उटांटी, ठाकुरकांटा (बंगाली)

यह खरीफ एवं रबी ऋतु का एकवर्षीय खरपतवार है। उपजाऊ खेतों ती भूमि में खूब उगता है। इसे ज्वार, बाजरा, सरसों, अरहर आदि के खेतों नी से देखा जा सकता है। शुष्क व रेगिस्तानी भूमि में यह ज्यादा पनपता पौधे में कांटे होते हैं। इसे ऊंट बड़े चाव से खाता है।
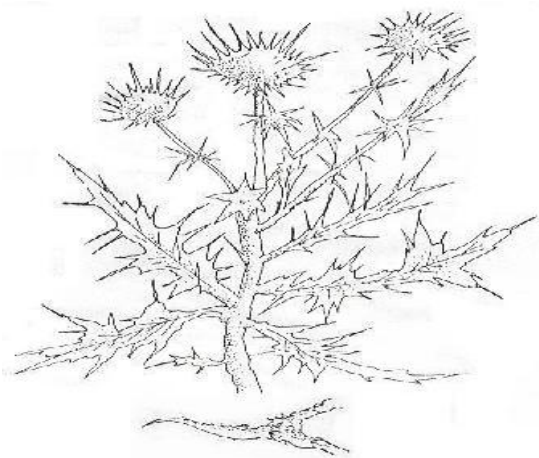
चित्र–33 ygl;k ¼bdhukIl bdhukVl½

इसके डण्ठल रहित पत्ते सत्यानाशी के पत्तों की भांति लम्बे व हथेली

के पंजे की तरह होते हैं। पत्तियों में श्वेत रोयें तथा किनारों के अनियि पर नुकीले कांटे होते हैं। तना व शाखाओं में भी तारे सदृश्य मजबूत कांटे होते हैं। जड़ 10–15 सेमी. लम्बी एवं अंगुली जैसी मोटी होती ऊपर भूरे रंग की पतली छाल होती है जो खुरचने से अलग हो जा के अन्दर की लकड़ी स्पंज की तरह छोटे –छोटे छिद्र युक्त एवं खुश्ब जड़ स्वाद में तीखी, चटपटी तथा उग्र गन्ध वाली होती है। टहनी ए के अग्रस्थ हिस्से में लगे सितारे सदृश्य कांटों के अक्ष से नीम के फूलों पांच पंखुड़ियों वाले पीताभ सफेद फूल निकलते हैं। धतूरा या फरफेंदुअ कांटेदार फल टहनी की सीमाक्ष पर लगते है। फल लगभग 2.5 से 3 के गोल या अनियमित आकार के होते हैं। फलों के कठोर और अत्यधि कांटों की लम्बाई लगभग 2–3 सेमी0 होती है। फलों का छिलका अन्दर स्पंज की भांति छिद्र दिखते हैं। सूखे फल अनियमित रूप से फट रूई जैसे रेशे निकलते हैं। इसी रूई में अनेकों छोटे तथा लम्बे बी

vk"k/kh; mi;kx

लहैया के सभी भाग (जड़, पत्ते, छाल, पुष्प और फल) औषध उपयोगी हैं। यह तंत्रिका बल्य, मूत्रवर्धक,प्रस्वेद हारी, कफ नाशक, वा तथा ज्वर नाशक होता है। पूरे शरीर तथा हथेली व तलवों में अत्यधि आने, कुष्ठ रोग, अकौता, श्वास व कुकर खांसी, मधुमेह, प्रमेह तथा मि पड़ने पर उत्कंटक की ताजी जड़ का अर्क या सूखी जड़ का चूर्ण गोदु के साथ लेना चाहिए। मंदाग्नि, सुजाक, धातु स्राव तथ मिरगी रोग में का अर्क रामबाण औषधि है। इसका प्रलेप हथेली व तलवों में लगाने की अधिकता बिल्कुल कम हो जाती है। कुकर खांसी तथा श्वास कांटेदार ताजी पत्तियों का अर्क शहद के साथ लेने से तुरन्त आराम दाद–खाज, गलकण्ठ तथा स्त्रियों में गर्भाशय शोथ होने पर ताजे पत्तों सरसों या अरण्ड के तेल में पकाकर प्रलेप लगाने से अतिशीघ्र लाभ पूरे पौधे की लुगदी का तेल शिश्न पर मलने से नपुंसकता दूर होती है जानवर द्वारा शीघ्र जर (प्लेसेन्टा) न डालने पर इसे बांस के पत्तों खिलाने से पशु जेर तुरन्त गिरा देता है। स्त्रियों में गर्भाशय का अप

ी पर ताजे फलों को गुड़हल के पुष्पों के साथ पीसकर नाभि के नीचे लेपने
आराम मिलता है। फलों का प्रलेप योनि शैथिल्य दूर करने में भी उपयोगी
त्र में फुन्सी होने तथा रतौंधी होने पर फूलों तथा फलों का अर्क आंखों में
से लाभ होता है।

vk"k/kh; [kjirokj

35

भंगरा या घमिरा

bfDyIVk vYck gLd-

***Eclipta alba* Hassk.**

d|y ½ dEikftVh

vU; izpfyr uke

भांगरा, भंगरैया, घमरा (हिन्दी), भृंगराज, केशराज (संस्कृत), केसुरिया,केसुती, भीमराज (बंगाली), माका (मराठी), भांगरो (गुजराती), गरूगा, करीशल कन्नि (तमिल), गलगारा, गुंतकलु (तेलगू)

igpku

भंगरा बीज से पनपने वाला खरीफ एवं रबी ऋतु का प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। उपजाऊ खेतों तथा खाली व परती भूमियों में यह खूब पनपता है। धान, जूट, मेस्टा, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के खेतों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। इसके पौधे के पास पहुँचने से एक विशेष गन्ध का अनुभव होता है।
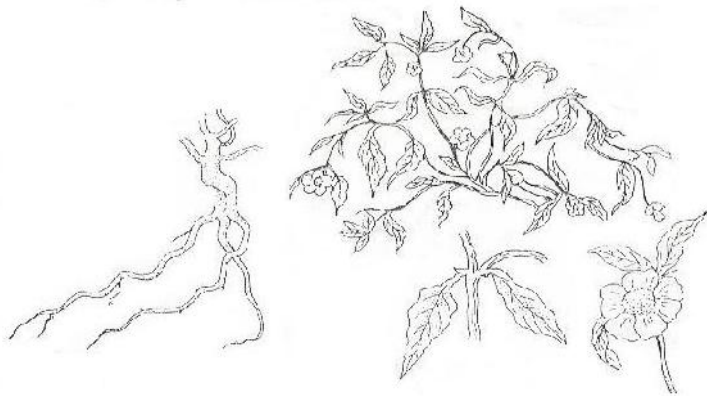
चित्र–34 Hkxjk ¼bfDyIVk vYck½

भंगरा का पौधा जमीन पर फैलते हुए 50–75 सेमी. ऊँचाई तक बढ़ता

है। पूरे पौधे में घने रोयें होते हैं और शाखाओं का रंग हरा, काला या बैंगनी होता है। शाखाओं की पर्व सन्धियों पर पतली मूल जैसी रचनायें दिखती है। पर्णवृन्त रहित अनियमित आकार वाली पत्तियां नुकीली व रोयेंदार होती हैं जो टहनी में एक दूसरे के विपरीत निकलती हैं। पत्तियों को मसलने से हरा अर्क निकलता जो शीघ्र ही काला हो जाता है। इसका स्वाद कडुवा तथा चटपटा होता है। पुष्प पत्तियों के अक्ष से चक्राकार रूप में आते हैं। पुष्पशीर्ष छोटे, सफेद तथा दलचक्र बड़े होते हैं।

vk"k/kh; mi;ksx

इसमें 'एक्लिप्टिन' तथा 'बीटा एमाइरिन' नामक क्षाराभ पाये जाते हैं। यह अल्सर, कैंसर, जलन, चर्मविकार, कायाशोथ, यकृतविकार, पीलिया, दांत व सिरदर्द, श्लीपाद (फीलपांव) तथा धनुष्टंकार रोगों में बहुत लाभप्रद है। इसका क्वाथ या अर्क बलवर्धक (टॉनिक) तथा अवरोधनाशक के रूप में अति उपयोगी है। यकृत वृद्धि, पुराने चर्मविकार, पीलिया, अतिसार, अपच, दृष्टिहीनता आदि में इसका काढ़ा पीना चाहिए। बच्चों में पुराना ज्वर होने पर गुनगुने दूध के साथ जड़ का चूर्ण हितकर होता है। खांसी, आधा सीसी सिर दर्द, रक्त चाप वृद्धि, मंदाग्नि, दांत दर्द आदि में इसका अर्क शहद के साथ लेना चाहिए। जोड़ों में सूजन, फीलपांव, चर्मरोग तथा सिर में गंजापन होने पर इसका प्रलेप तिल के तेल के साथ लगाना चाहिए। बालों को काला करने के लिए यह प्रमुख जड़ी –बूटी है। घुटे हुए सिर या गंजी जगह में इसका अर्क तेल की तरह लगाने से बाल काले होते हैं तथा झड़ना बन्द हो जाते हैं। बिच्छू दंश होने पर जड़ व पत्तियों का अर्क डंक वाले स्थान पर लगाने से विष का प्रभाव कम होता है। जड़ों का अर्क वमनकारी, रेचक तथा ज्वरनाशी के रूप में उपयोगी है।

—o—

36

थोर या त्रिधारी सेंहुड़

;Qkfcl;k ,.Vhdkje fy-

Euphorbia antiquorum L.

dqy % ;Qkfcl,l h

vU; ipfyr uke

स्पर्ज कैक्टस (अंग्रेजी), वज्रकंटका (संस्कृत), तिक्ता (बंगाली), नारस्य (मराठी), वचीरम (तमिल), बोमाजेमाडू (तेलगू), चाडुराकली (मलयालम)

igpku

नागफनी से मिलते–जुलते इन जंगली पौधों को सड़क के किनारे खाली पड़ी शुष्क भूमि तथा खेतों की पुरानी मेंड़ों पर तथा आजकल गृहवाटिका के चारों ओर सुरक्षा बाड़ (हेज़) के रूप में खूब देखा जा सकता है।

चित्र–35.1 f=/kkjh lsgqM ¼;Qkfcl;k ,UVhdkje½
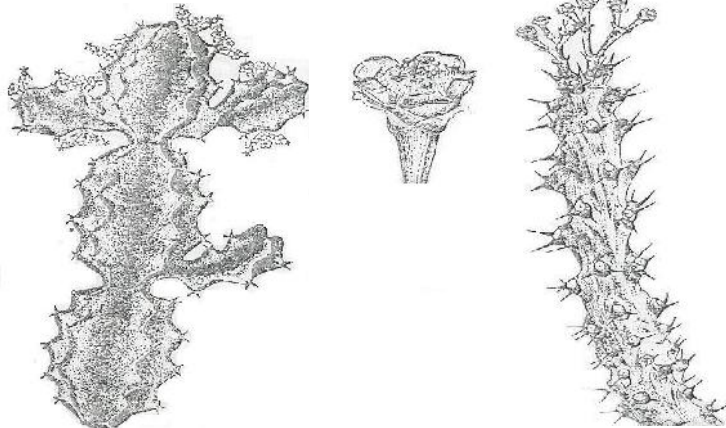
चित्र–35.2 ip/kkjh lsgqM ¼;Qkfcl;k ujhQkfy;k½

कैक्टस की तरह दिखने वाले सेहुंड़ा की अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं जिन्हें उनकी बनावट के आधार पर भिन्न–भिन्न नाम से जानते हैं जैसे–गोल

सेहुंड़ *(यू० निवुलिया)*, पंचधारी सेहुंड़ *(यू० नेरीफोलिया)* आदि। सभी प्रकार के सेहुंड़ मुख्यतः शुष्क, रेगिस्तानी तथा पठारी क्षेत्रों में खूब पनपते हैं।

झाड़ी के आकार के इस पौधे का तना मोटा, नरम, गूदेदार मांसल, शाखित, गोल या 3–5 कोणदार धारी युक्त तथा रस्सी की तरह ऐंठा हुआ होता है। कोणदार धारियों में स्थित प्रत्येक गांठ (अक्ष) पर छोटे व मजबूत दो–तीन कांटे होते हैं। पत्तियां प्रायः अनुपस्थित या बहुत छोटी होती हैं जो जल्दी ही गिर जाती हैं। इसकी जड़ पतली होती है और भूमि में बहुत गहरी जाती है। तना खुरचने या तोड़ने पर सफेद दूध निकलता है जो तीखा व जहरीला होता है और त्वचा में छूने पर खुजली उत्पन्न करता है। पीले रंग के छोटे–छोटे फूल तना व शाखाओं की धारियों में ऊपरी हिस्से में निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसका दूध तीखा एवं विषैला होता है फिर भी नियंत्रित मात्रा में इसका प्रभाव औषधीय गुणों से भरपूर होता है। पूरे तने का क्षारीय अर्क जीवाणु नाशक होता है और दस्तावर या रेचक तथा पाचक होता है। पौधे का अर्क या दूध घावों में पड़े कीड़े मारने, चर्म रोगों तथा मस्सा में लाभकारी होता है। उंगलियों की पोर में विषहरी होने पर सेहुंड़ा के तने का पोला (नली) बनाकर उसे हल्दी और तेल में पकाकर ग्रसित उंगली में पहनने से तुरन्त आराम मिलता है।सभी थुहारों (सेहुंड़ा) का अर्क फोड़े–फुन्सी, चर्म विकारों, दांत दर्द तथा कान दर्द व बहरापन दूर करने में उपयोगी होता है। गठियावात, ड्राप्सी (जलोदर) तथा तंत्रिका विकारों में इसका अर्क नियंत्रित मात्रा में पीने से टॉनिक के रूप में उपयोगी है। इसकी मालिश करने से जोड़ों के दर्द, फोड़े–फुंसी, चर्म विकार आदि में लाभ मिलता है। छाल रहित तने का अर्क अस्थमा में लाभप्रद होता है। सूजाक होने पर इसके दूध और चना के आटे से गोली बनाकर खाना चाहिए। इसकी अन्य प्रजातियों का उपयोग भिन्न–भिन्न विकारों में सामान्यतः किया जाता है।

—o—

37 cM+h nqn~/kh ;k yky nqn~/kh

;Qkfc;k fgjVk fy-

***Euphorbia hirta* L.**

dqy % ;Qkfc,lh

vU; ipfyr uke

अस्थमा वीड, गार्डेन स्पर्ज (अंग्रेजी), पुसितोआ, नागार्जुनी (संस्कृत), बड़ाकेरू (बंगाली), मोती दुद्धी (मराठी), दुधेली (गुजराती), नानबाला (तेलगू), अमामपचाई (तमिल), नेलापलई (मलयालम)

igpku

वर्षा ऋतु में खेतों में बहुतायत से उगने वाली दुद्धी एकवर्षीय छोटी शाक है। यह उष्ण एवं उपोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों की नम एवं शुष्क जोताऊ भूमियों, बागो, घरेलू लॉन तथा खाली पड़ी भूमि में खूब पनपती है। भारत में यह मूंगफली पतवार है।
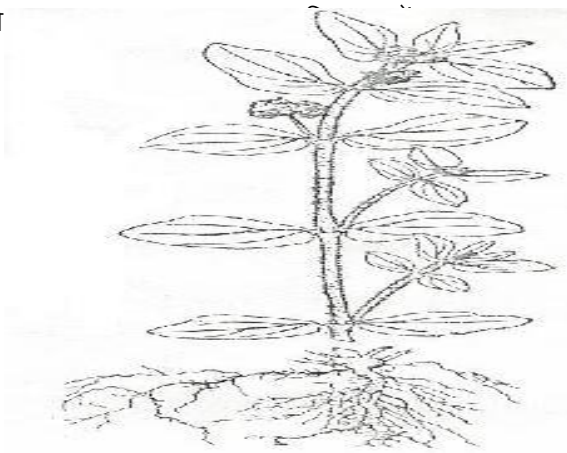
चित्र–36 cMh nqn/kh ¼;Qkfc;k fgjVk½

यह शाकीय खरपतवार जमीन के सहारे बढ़ता है। इसका मुलायम तना अत्यधिक शाखित, लालिमा लिए हुए ताम्र रंग का तथा लगभग 15–30 सेमी0 लम्बा होता है। तना पर छोटे–छोटे पीताभ–भूरे रंग के रोम तथा किनारों पर बहुत महीन कटाव वाली 3–5 सेमी0 लम्बी व 1 सेमी0 चौड़ाई वाली पत्तियां होती हैं। दो साधारण पत्तियां छोटे डण्ठल में तना की प्रत्येक गांठ पर निकलती हैं। इसका तना तोड़ने से दूध जैसा सफेद पदार्थ निकलता है जो इसकी मुख्य पहचान है। ताम्र–लाल रंग के पुष्प छोटे, गोल, घने तथा डण्ठल रहित होते हैं जो पत्ती के अक्ष से निकलते हैं। फल (कैप्सूल) में भूरे रंग के तीन छोटे–छोटे बीज निकलते हैं। इसका प्रसारण मुख्यतः बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;kx

पुष्पन के समय पूरा पौधा औषधीय गुणों से भरपूर होता है। फलत अवस्था में पूरा पौधा सुखाकर विभिन्न रोगों में उपयोगी है। यह श्वास रोग (अस्थमा), ब्रोंकाइटिस, ह्रदय स्पन्दन, कफ, खांसी तथा उदरशूल में लाभप्रद होता है। लाल दुद्धी की मूसला जड़ें सूजाक, मूत्राशय सम्बन्धी अन्य विकार तथा वमन रोकने में बहुत उपयोगी हैं। पौधे का दूध दाद–काट तथा अन्य चर्मरोगों में फायदेमन्द होता है। पेट दर्द, खांसी, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस तथा बच्चों में उदरकृमि होने पर पूरे पौधे का काढ़ा पीना बहुत लाभप्रद होता है। प्रायोगिक तौर पर इसका दूध व अर्क क्षय एवं जीवाणु नाशक पाया गया है।

—o—

38

शंखपुष्पी या नीलपुष्पी

,okYoy l vfYluk;M l fy-

***Evolvulus alsinoides* L.**

dqy % dkuokYoqy:lh

vU; izpfyr uke

विष्णुगन्धी (संस्कृत), विष्णु क्रांथा (तेलगू) विष्णुकरांड़ी (तमिल),विस्टनाक्लेंडी (मलयालम), संखौली (पंजाबी), शंखावली (मराठी), विष्णुकरांटा (तमिल)

igpku

यह शाकीय लतानुमा एकवर्षीय या द्विवर्षीय खरपतवार वर्षा ऋतु तथा जाड़े में परती भूमियों में खूब उगता है। उपजाऊ खेतों तथा सड़क व रेलपथों के किनारे एवं जंगलों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। हिरन खरी की तरह यह भी दूसरे
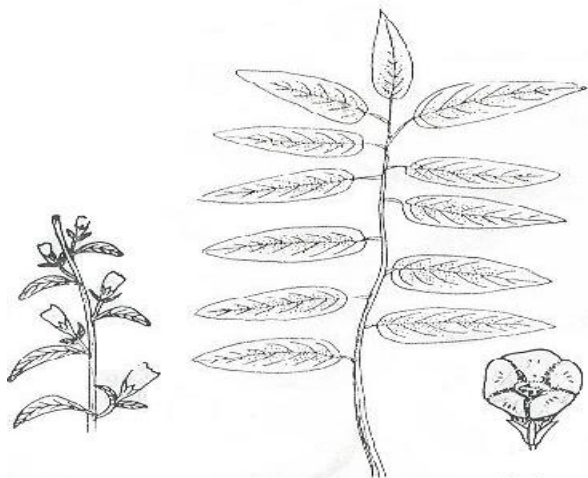
चित्र–37 'k[kiq"ih ¼,okYoqy l vfYluk;M;½

लतानुमा मुलायम तना में पत्तियां एकांतर, सम्पूर्ण, भालाकार तथा भूरी रोमिल होती हैं जिनके आधार पर एक जोड़ी नुकीले खण्ड निकले होते हैं। इसमें शंख के आकार के कीपनुमा बड़े पुष्प आते हैं जिनका आधार नलिकाकार होता है। पुष्प नीले रंग के सुन्दर होते हैं। छोटे–छोटे द्विकोणीय फलों (कैप्सूल) में काले या भूरे रंग के बीज निकलते हैं। प्रत्येक कोष में 2–5 बीज होते है। इसका प्रवर्धन बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;kx

इसका पौधा कटु पौष्टिक, बलवर्धक, पाचक, कृमिहारी, दाहप्रशमक, दमाहारी तथा ज्वरनाशक होता है। पुरानी पेचिस, उदरकृमि, कमजोरी एवं बुखार में पूरे पौधे का अर्क या क्वाथ आरोग्यकारी होता है। पत्तियों को सिगरेट की तरह पीने से पुरानी कास (ब्रोंकाइटिस) तथा अस्थमा में आशातीत लाभ मिलता है। शरीर में गर्मी बढ़ने पर इसकी ताजी पत्तियां पीसकर पीना चाहिए।

—o—

39

करेलिआ या कनफुटी

xk;uUMªkfIll iUVkfQyk Mh- lh-

Gynandropsis pentaphylla D.C.

dqy % dSIijhMslh

vU; izpfyr uke

बसटार्ड मस्टर्ड, करवला सीड (अंग्रेजी), हुलहुल, अजगन्धा (हिन्दी), सुरजावर्ता (संस्कृत), हुरहुरिया (बंगाली), तिलवाणा (मराठी), तायवेला (मलमालम), काडुगू (तमिल), वमिन्टा (तेलगू)

igpku

यह बरसात में उपजाऊ खेतों एवं परती भूमियों में बीज से उगने वाला प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। इसका शाकीय पौधा तीक्ष्ण गंध छोड़ता है। पूरे पौधे में ग्रन्थियों के कारण चिपचिपापन होता है।

चित्र–38 djsfy;k ¼xk;uUMªkfIll iUVkfQyk½
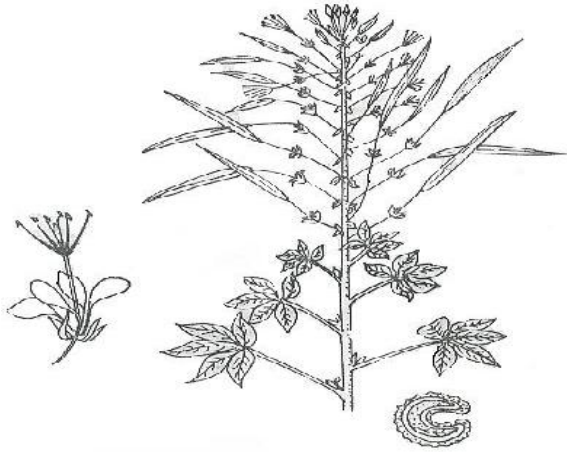
तना सीधा एवं 25–75 सेमी. ऊँचा होता है जिसमें लम्बे डन्ठल युक्त

पांच पत्रकों वाली संयुक्त पत्तियां होती है। पर्णवृन्त विहीन 5 पत्रकों में से बीच वाला पत्रक सबसे लम्बा होता है। मुलायम पुष्पवृन्त वाले सफेद या बैंगनी रंग के फूल असीमाक्ष पुष्प क्रम पर आते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) 5–10 सेमी. लम्बी, पतली, चिकनी एवं धारीदार होती है जिसमें भूरे या काले रंग के वृक्काकार एवं झुर्रीदार बीज निकलते हैं। बीजों में तेल निकलता है।

vkS"k/kh; mi;ksx

इसके बीजों में 'क्लिओमिन' नामक रसायन पाया जाता है तथा ग्रन्थियों में चिपचिपा पदार्थ निकलता है। पत्तियां स्फोट जनक एवं स्वेदकारी होती हैं। इन्हें लम्बे समय तक त्वचा में लगाने से लाल रंग के चकत्ते व फफोले पड़ जाते है। गठियावात, सिरदर्द, पेशीय दर्द एवं गर्दन में सख्ती होने पर इसकी पत्तियों की लेई (पेस्ट) आरोग्यकारी होती है। कान से मवाद आने एवं कान दर्द में पत्तियों का गर्म अर्क बहुत फायदेमन्द है। इसके बीज वातानुलोमक, स्फोटजनक, कृमिनाशक एवं ग्राही होते हैं। बीजों का चूर्ण या क्वाथ लेने से पेट के गोलकृमि बाहर निकल जाते हैं। बीजों का तेल शरीर में लगाने से लालिमा उत्पन्न होती है। सर्पदंश एवं बिच्छू के डंक मारने के स्थान पर पौधे का चिपचिपा प्रलेप विष का असर कम करता है। जड़ का काढ़ा ज्वरनाशक होता है।

40 rewy ;k dkyh nqn~/kh

gfeMLe l bf.Md l vkj- ch- vkj-

***Hemidesmus indicus* R.Br.**

dly % ,LDyhfiMlh

vU; ipfyr uke

इण्डियन सर्सपरीला (अंग्रेजी), मगराबू, हिन्दसलसा (हिन्दी), अनन्ता, नागजीवा, शारीवा (संस्कृत), नन्नारि (तमिल), नरूतंडी (मलयालम), गदिसुगन्धी, सुगन्धिपाल (तेलगू), नमदाबेरू (कन्नड़), दुरिवेल (गुजराती), अनंतामुल (पंजाबी), अनंतमूल (उड़िया, बंगाली, मराठी)

igpku

यह भूमि पर फैलने वाली बहुवर्षीय छोटी लता है जो जंगली तौर पर उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों, बंगाल, केरल, महाराष्ट्र आदि के बाग–बगीचों में खरपतवार के रूप में बहुतायत में उगती है। इसमें अनेकों मांसल जड़ें होती है जिनकी लम्बाई 15–30 सेमी. तक होती है। नई जड़ें हरी होती हैं और सूखने पर लाल हो जाती हैं '
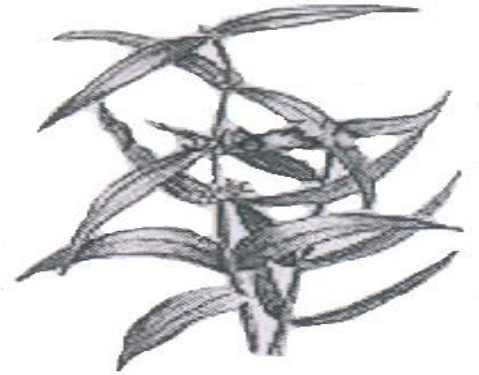
चित्र–39 vuUrey ¼gfeMLe l bf.Md l½

तना मुलायम,आरोही, रोम रहित चिकना तथा गांठों पर फूला हुआ होता है। पत्तियाँ छोटी, 5–10 सेमी. लम्बी व 4–5 सेमी. चौड़ी, गहरी हरी–चमकीली तथा सफेद धब्बेदार होती हैं जिनकी निचली सतह रोयेंदार होती है। फूल छोटे व गुच्छे में आते है जो बाहर की तरफ हरे व अन्दर बैंगनी रंग के होते हैं। फल 10–15 सेमी. लम्बे, हरे, पतले, गोल, नुकीले तथा मुलायम होते हैं जो प्रायः जाड़े में आते हैं। काले रंग के छोटे बीजों में सफेद रोमों का गुच्छा होता है। पौधा तोड़ने से सफेद दूध (लैटेक्स) निकलता है।

vk"k/kh; mi;kx

मगराबू की जड़ें औषधीय गुणवाली होती हैं। यह सर्सपरीला के विकल्प के रूप में उपयोग करने के लिए आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इनमें 'सैपोनिन' रसायन पाया जाता है। इसकी मीठी जड़ें पौष्टिक, बलवर्धक, मूत्रवर्धक तथा स्वेदकारी होती हैं जो भूख की कमी, ज्वर, चर्मरोग, वमन, प्रदर, सिफिलिस एवं अन्य मूत्र विकारों के उपचार तथा खून साफ करने के लिए बहुत उपयोगी हैं। पुराना कफ, शरीर में गर्मी तथा जननांग रोगों के उपचार में इसका काढ़ा पीना चाहिए। बाजार में यह 'अनन्त मूल' के नाम से बिकती है। सूखी जड़ के चूर्ण को रातभर नारियल के पानी में भिगोकर पीने से मूत्र के साथ रक्त आना तथा महिलाओं में प्रदर ठीक होता है। नई–हरी ताजी पत्तियां चबाने से शरीर में ताज़गी आती है। इसका प्रलेप गठियावात, फोड़े–फुंसी तथा अन्य चर्मविकारों में हितकर होता है बच्चों के चर्म उद्‌भेदों व ददोड़ो में इसकी जड़ का चूर्ण हल्दी व तिल का तेल मिलाकर लगाना चाहिए। महिलाओं में गर्भावस्था के समय कुछ विषाक्त अवस्थाओं तथ वमन में जड़ों को चूसना या इनका क्वाथ पीना हितकर होता है। बिच्छू व सर्पदंश में ताजी जड़ों का प्रलेप या क्वाथ फायदेमन्द होता है।

—o—

41

[kqy[kqjh ;k czãe.Mwdh

gkbMªksdksVkby jksV.MhQksfy;k jkDl-

***Hydrocotyle rotundifolia* Roxb.**

dqy % vEcsyhQsjh

vU; izpfyr uke

इण्डियन पेनिवर्ट (अंग्रेजी), मण्डूक पर्णी (संस्कृत), गिमासक, थोलखुरी (बंगाली), करिवाना, बल्लरीकराई (मराठी), वल्लराई (तमिल), ब्राम्ही (तेलगू)

igpku

ब्राम्ही से मिलता–जुलता यह शाकीय जंगली पौधा समस्त भारत वर्ष में आर्द्र नम, दलदली एवं छायादार स्थानों तथा सिंचाई की नालियों में खूब उगता है। वर्षा ऋतु में यह सर्वत्र देखने को मिलता है और लोग इसे ही ब्राम्ही समझ बैठते हैं। इसके पत्तों को सूंघने से तीव्र गन्ध आती है। नम स्थानों में यह साल भर हरी–भरी रहती है और भूमि के सहारे फैलती है। इसकी दूसरी प्रजाति ब्रम्हमण्डूकी (*हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका* लिन.) भी खूब मिलती है।

चित्र–40.1 [kqy[kqjh ¼gkbMªksdksVkby jksV.MhQksfy;k½
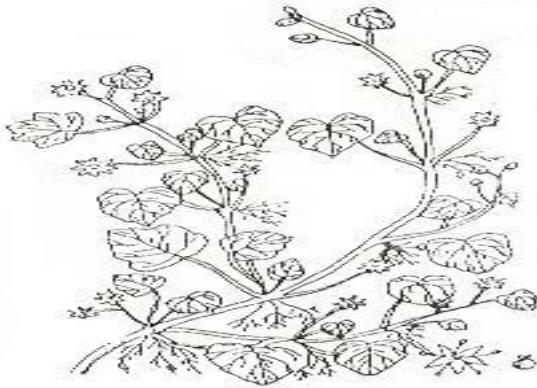
ब्राम्ही लता के समान ही मण्डूक पर्णी की लता भी भूमि के सहारे चारों ओर फैलती है और मुलायम तना की प्रत्येक गांठ (पर्व) से महीने जड़ें निकलती है। प्रत्येक पर्व से ब्राम्ही से बड़े आकार की कई पत्तियां निकलती हैं। लगभग 8–16 सेमी. लम्बे पर्णवृन्त युक्त वृक्काकार गोल पत्तियां 5–6 सेमी. लम्बी होती है और मेढ़क की बनावट की दिखती हैं।

चित्र–40.2 czãe.Mwdh ¼gkbMªksdksVkby ,fl;kfVdk½
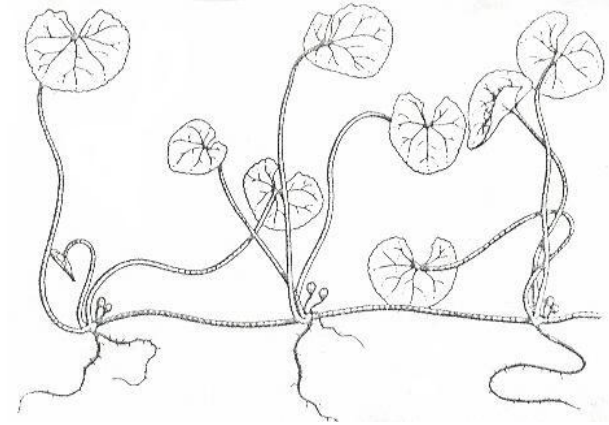
ब्राम्ही के चिकने पत्रों के विपरीत खुलखरी के पत्र खुरदुरे, रोयेंदार, लालाभ–हरे तथा किनारों पर महीन दांतेदार होते हैं। पत्तियों में हस्तरेखाओं की तरह नलिकाकार शिराविन्यास होता है। पत्तों को सूंघने से तीव्र गन्ध आती है। पत्तियों के अक्ष से लम्बे डण्ठल में पुष्पछत्रक आते हैं। प्रत्येक पुष्प छत्रक में 3–4 छोटे व लाल–श्वेत पुष्पों का गुच्छा होता है। फल छोटा एवं महीन बीज युक्त होता है।

vk"k/kh; mi;ksx

इसकी ताजी पत्तियों में 'एशियाटिकोसाइड' नामक कटु ग्लुकोसाइड तथा शुष्क पौधे में 'हाइड्रोकोटाइलीन' एवं जड़ में 'एमीलिन' रसायन पाये जाते हैं। पत्तियों में उड़नशील तैलीय रसायन 'वेलरिन' के कारण तीव्र गन्ध आती है। इसका पौधा शक्तिवर्धक (टॉनिक), पुनर्नवीकारक, मूत्रवर्धक, रक्तशोधक, मन्द रेचक तथा सूजन हारी होता है। यह तंत्रिका व रक्तविकारों, पुरानी एक्जिमा,

लेप्रोसी, व्रण, ग्रन्थिशोथ, बवासीर, गठियावात एवं महिलाओं में मासिक धर्म की आकस्मिक रूकावट में बहुत उपयोगी है। पुराने जुकाम (पीनस), जलोदर, रक्तविकार, गण्ठमाला, गरमी, कुष्ठरोग, श्लीपद एवं अन्य चर्मविकारों में पत्तियों या पूरे पौधे का अर्क या क्वाथ शीघ्र आरोग्यकारी होता है। इसकी ताजी जड़ व पत्ती का प्रलेप मस्सा, लेप्रोसी, ग्रन्थिवात, हाथीपांव, तंत्रिकाविकार तथा सिफिलिस में बहुत लाभप्रद होता है। त्वचा में खरोंच, पपड़ी, अल्सर एवं कुष्ठ धब्बे होने पर सूखे पौधे का पाउडर प्रलेपने से फायदा होता है। इसका चूर्ण दूध के साथ पीने से दिमागी कमजोरी तथा रक्त विकार दूर होते हैं और याददाश्त बढ़ती है। इसकी जड़ दाहक एवं मदकारी होती है। ज्यादा मात्रा में प्रयोग से बेहोसी भी आ सकती है।

ब्रम्हमण्डूकी (*हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका*) के पूरे पौधे का क्वाथ मूत्रवर्धक, टॉनिक एवं उत्तेजक होता है। यह अतिसार, पेचिस तथा सुजाक में बहुत उपयोगी है। इसकी पत्तियों को लोग खाने में प्रयोग करते हैं। इसमें विटामिन, खनिज लवण, कार्बोहाइड्रेट एवं प्रोटीन की प्रचुर मात्रा होती है।

—o—

dkyknkuk ;k fepZbZ

vkbikfe;k fuy ¼fy-½ jkFk-

***Ipomoea nil (L.)* Roth.**

dqy&dkuokYoqyl h

vU; izpfyr uke

नीलकालमी, भरोदा (हिन्दी), कृष्ण बीज (संस्कृत), कालादाना (बंगाली), नीलपुष्पी (मराठी), ककट्टम,सिरिक्की (तमिल), खानीखाड़ो (उड़िया), गनेरीबीज (कन्नड़), काल कुम्पन (गुजराती), कपरूसाग, विलडी (पंजाबी)

igpku

कालादाना खरीफ मौसम का बीज से पनपने वाला प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। ज्वार, बाजरा, सनई ढ़ेचा, अरहर, गन्ना, मक्का आदि फसलों तथा उपजाऊ परती भूमियों में यह खूब उगता है और अन्य पौधे के तना में लिपटकर ऊपर चढ़ता है।
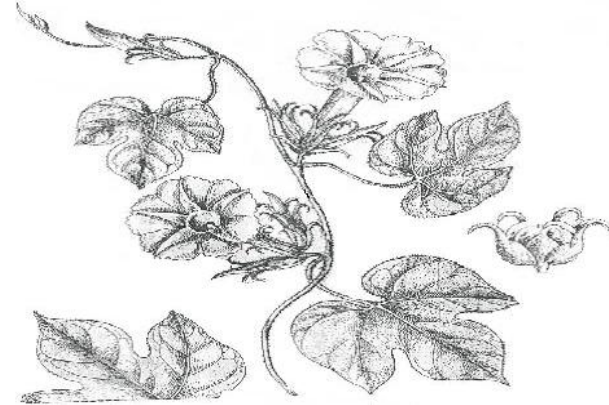
चित्र–41.1 dkyknkuk ¼vkbikfe;k fuy½

मुख्य फसल के तना में लिपटकर ऊपर चढ़ने वाली इस शाकीय बल्लरी

के तना में मुलायम रोयें होते हैं। पत्तियां एकांतर, हथेली के आकार की त्रिपालीय, नुकीली अण्डाकार एवं 5–12 सेमी. चौड़ी होती हैं। पत्ती के अक्ष से लम्बे पुष्पवृन्त युक्त 4–5 सेमी. लम्बे एवं कीप के आकार के चटक नीले रंग के सुन्दर फूल गुच्छे में आते हैं। पुष्प के सहपत्र पतले, लम्बे एवं रोमिल होते हैं तथा दल पत्र आपस में कीप के मुख की तरह गोलाई में जुड़े हुए पांच पालियों वाले होते हैं।

चित्र–41.2 f?k;k ckrh ¼vkbikfe;k iLVhfxfMl½

फूल तोड़ने के थोड़ी देर बाद गुलाबी–बैंगनी हो जाता है। प्रौढ़ पुष्प लाल होते हैं और 1–5 पुष्पों वाले छत्र की ससीमाक्षों पर पाये जाते हैं। फली (सम्पुटिका) लगभग एक सेमी. लम्बी, अंडाभ गोल व चिकनी होती है जिसमें छोटे–छोटे चिकने व बिल्कुल काले रंग के 4–6 बीज निकलते हैं। बाजार में इसके बीज कालादाना नाम से बिकते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसके बीजों में एक विशेष प्रकार का रेजिन पाया जाता है जो विरेचक गुणधर्म वाला होता है। इसके बीजों का चूर्ण या काढ़ा दस्तावर या विरेचक के रूप में बहुत उपयोगी है। अधिक मात्रा में बीजों का सेवन सन्ताप पैदा करता है।

इसकी ताजी फलियों की सब्जी खाने से उदरव्याधियों में आराम मिलता है। पत्ती का अर्क आंख की लालिमा काटने में सहायक है। जड़ बलवर्धक, मृदुरेचक एवं कामोत्तेजक होती है। बिच्छू दंश में जड़ का प्रलेप लगाना हितकर है। इसकी अन्य प्रजाति *आ. पेस्ट्रीग्रिडिस* लिन. (टाइगर फुट) घियाबाती, पंचपत्री या लांगुलीलता के नाम से जानी जाती है। इसकी पत्तियां चीता के पंजे की तरह कटी एवं गोलाई में फैली होती हैं। इसकी कन्दीय जड़ें तीव्र विरेचक होती हैं। कुत्ता के काटने, फोड़े–फुंसी एवं त्वचा में धब्बेदार सूजन में इनका प्रलेप लगाना हितकर होता है।

—o—

43 ykbZdUn ;k fcnkjhdUn

vkbikfe;k ifudykVk vkj- ch- vkj-

***Ipomoea paniculata* R. Br.**

dy & dkuokYoyyl h

vU; ipfyr uke

भू–कुष्माण्डा, क्षीर–विदारी (संस्कृत), भूमि कूमरा (बंगाली), भुईकोहला (मराठी), पाल्मूलुक्किन पालमुटक्कू (मलयालम), विदारीकन्दो (गुजराती), नीलपुचानी, पालमोदिक (तमिल), पालमुडिक्कू नीलगुम्मदू (तेलगू), नदकुम्बाला (कन्नड़) भूमिकुमार (उड़िया)

igpku

यह भारत के समूचे उष्णकटिबन्धीय भागों में विशेषकर नमी वाले क्षेत्रों में जंगली रूप में उगने वाला बहुवर्षीय आरोही पौधा है। यह बिहार, पश्चिम बंगाल एवं उत्तर–पूर्वी राज्यों के वनों में खूब पनपता है और अन्य पौधों व वृक्षों में लिपटकर ऊपर चढ़ता है। बाग–बगीचों में इसे सजावटी लता के रूप में भी उगाया जाता है।

चित्र–42 fcnkjhdUn ¼vkbikfe;k ifudykVk½

यह बहुवर्षीय शाकीय बल्लरी भूमिगत प्रकन्दों से पनपती है। तना मुलायम एवं ताम्र रोमिल होता है। पत्तियां एकान्तर, पांच पालियों वाली बड़ी तथा लालाभ–कत्थई होती हैं। नई पत्तियों का रंग हरा होता है। गुलाबी रंग की पुष्पकलियां, ससीमाक्षों पर गुच्छे में लगती हैं। पूर्ण खिला हुआ कीप के आकार का गुलाबी पुष्प बहुत सुन्दर होता है। फली (सम्पुटिका) अण्डाभ व चिकनी एवं रोयेंदार होती है जिसमें काले–भूरे रंग के 5–6 छोटे बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

बिलाई कन्द की प्रकन्दीय जड़ औषधीय गुण वाली होती है। इसके रेजिन युक्त प्रकन्द विरेचक, दस्तावर, बलवर्धक, क्षुदावर्धक, पित्त विरेचक, शांति प्रदायक, कामोत्तेजक एवं वीर्यवर्धक होते हैं। गर्भिणी स्त्री द्वारा जड़ का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से जच्चा–बच्चा का वजन बढ़ता है और मां के स्तनों में दुग्ध स्राव अधिक होता है। जड़ का क्वाथ दूध व शक्कर के साथ सेवन से स्त्री के बांझपन एवं अपरिपक्व गर्भपतन से बचाव होता है। इसकी जड़ का सेवन प्रतिदिन करने से वीर्य की मात्रा बढ़ती है और शरीर शक्तिशाली होता है। सर्पदंश एवं बिच्छू के डंक मारने पर इसकी जड़ का काढ़ा पीना चाहिए एवं इसका ताजा प्रलेप घाव में लगाने से विष उतर जाता है। पौधे से निकलने वाला दूध (रेजिन) दाद–खाज एवं अन्य चर्म विकारों लाभप्रद होता है।

—o—

44 djkeh'kkd ;k ujdqy

vkbikfe;k fjIVUl ¼fy-½ ikj-

***Ipomoea reptans* (L.) Poir.**

dqy % dkuokYoqyl h

vU; ipfyr uke

स्वाम्प कैबेज (अंग्रेजी), कालमीशाक, जलकर्मीसाग, नारी (बंगाली), कलम्बी (संस्कृत), नाली चिबाजी (मराठी), सरकरीवली (तमिल), तूतीकुरा (तेलगू), गंठियान, सोरनालिका साग (पंजाबी)

igpku

यह मुख्यतः खरीफ मौसम में नम एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में बीज से पनपने वाला एकवर्षीय खरपतवार है। यह गांवों में पानी के गढ्ढ़ों एवं तालाबों के किनारे खूब पाया जाता है।

चित्र–43 djeh'kkd ¼vkbikfe;k fjIVUl½

इसकी एक अन्य प्रजाति *आ0 एक्वेटिका* फोर्क. सदाबहार, बेशर्म या बेहया नाम से जानी जाती है जो बहुवर्षीय होती है और वानस्पतिक भागों से

पनपती रहती है। इसकी अत्यधिक बढ़वार से तालाब व पानी के गढ़ढ़े पूरी तरह ढ़क जाते है।

नरकुल का तना मुलायम–खोखला तथा सदाबहार का तना बांस के डण्डे की तरह सीधा, ठोस व मोटा होता है। पत्तियां एकांतर, लम्बे पर्णवृन्त युक्त हथेली की तरह चौड़ी एवं भलाकार नुकीली होती हैं। जिनमें शिरा विन्यास स्पष्ट होता है। सदाबहार की पत्ती 8–12 सेमी. लम्बी होती है। तना के अग्रस्थ भाग में पत्ती के अक्ष से लम्बे पुष्पवृन्त वाले कीप के आकार के बैंगनी–सफेद पुष्प एकल रूप में निकलते हैं। पुरानी पत्तियां गिरने के बाद तना में 6–10 सेमी. की दूरी पर कलिकायें गहरी धंसी होती हैं जो स्पष्ट नजर आती हैं। नम मिट्टी के सम्पर्क में आने पर इसकी प्रत्येक गांठ से जड़ें निकल आती हैं। फली में काले रंग के अनेक चिकने बीज होते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

नरकुल की पत्तियों का अर्क दस्तावर एवं वमनकारी होता है तथा अफीम का नशा उतारने के लिए उपयोगी है। स्त्रियों में तंत्रिका एवं सामान्य दुर्बलता होने पर पूरे पौधे का काढ़ा हितकर होता है। इसके बीज तीव्र विरेचक होते हैं। मघ्यप्रदेश की कुछ जनजातियां इसके फूलों का अर्क का प्रयोग सूजन भरी दुःखी आंख ठीक करने के लिए करती हैं। बेशर्म की पत्तियों को देशी घी एवं हल्दी लगाकर गर्म करके अण्डकोषों (टेस्टीज) एवं हांथ–पांव की गांठो में चोट के कारण दर्द भरी सूजन में बांधने से तुरन्त आराम मिलता है। नई–मुलायम पत्तियों का अर्क मृदुरेचक एवं दस्तावर होता है।

—o—

45

xqek ;k gydqlk

Y;dkl vLijk LiUx

***Leucas aspera* Spreng.**

dqy % yfc,lh

vU; izpfyr uke

गुम्मा, गुमास, छोटा हलकुसा, डुलुफ, महकुआ (हिन्दी), द्रोणपुष्पी (संस्कृत) तम्बा (मराठी), तुमनी, तुम्बई (तमिल), मलडोडा (पंजाबी), तुम्माचेटू (तेलगू), हलकसा (बंगाली)

igpku

यह बरसात में बीज से पनपने वाला एकवर्षीय खरपतवार है जो उपजाऊ खेतों तथा परती भूमियों में खूब पाया जाता है। इसमें विशेष गन्ध आती है अतः इसे महकुआ भी कहते हैं। यह गन्ना, अरहर, मक्का आदि के खेतों में खूब उगता है।

चित्र–44 xqek ¼Y;dkl vLijk½

तुलसी कुल के इस पौधे का तना चतुष्कोणीय होता है। तना, पत्ती एवं फूलों में विशेष महक आती है। पत्तियां साधारण, भालाकार नुकीली, विपरीत एवं किनारों पर दांतेदार होती हैं। लम्बी पुष्प मंजरिका में द्विहोष्ठीय व असामान्य गोल गुच्छे में पुष्प लगते हैं। द्विलिंगी पुष्प पत्ती के अक्ष के चारों ओर गुच्छे में दिखते हैं। पुष्प में 5 दलचक्र एवं पांच दलपत्र होते हैं जिनमें कुछ पंखुड़ियां होठ की तरह रचना बनाते हैं। फूल का रंग सफेद या धूसर सफेद होता है। पुष्प मुख्यतः शाखाओं या तना के सिरों पर आते हैं। फल सम्पुटिका में चार शुष्क एवं एक बीजीय छोटे–छोटे फल होते हैं जिनमें भूरे–काले रंग के बीज निकलते हैं। इसका प्रवर्धन बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी पत्तियों में 'अस्पेरिन' क्षाराभ एवं सुगन्धित तैलीय रसायन पाया जाता है। यह उत्तेजक, स्वेदक, ज्वरनाशक तथा कीटनाशक होता है। पत्तियों एवं फूलों का क्वाथ ज्वर तथा सर्दी–जुखाम में अतिलाभप्रद है। नाशा छिद्र में श्लेष्मा के सूखने , सूजन एवं खून आने पर पत्तियों का अर्क डालना चाहिए। त्वचा के चटकने, सोरिआसिस एवं खसरा में पत्तियों का अर्क लगाने से आरोग्य मिलता है। सिरदर्द, पुराना गठियावात एवं सर्पदंश में पत्तियों का प्रलेप हितकर है। स्त्रियों में बांझपन के लक्षण दिखने पर जड़ एवं पत्ती का क्वाथ फायदेमन्द होता है। पौधे को जलाकर धुआं करने से मच्छर भाग जाते हैं। सांप के काटने पर पौधे का रस देने से जहर का असर उतर जाता है।

—o—

46 NqbZeqbZ ;k ykTtoUrh

feeklk ifMdk fy-

Mimosa pudica **L.**

dqy % yxqfeukslh

vU; izpfyr uke

सेंसिटिव प्लांट, टच–मी–नॉट प्लांट (अंग्रेजी), लज्जा (संस्कृत), लजक (बंगाली), लजवन्ती (पंजाबी), लज्जालू (मराठी), टोटालवड़ी (तमिल), पेड्डानीद्राकान्ती (तेलगू)

igpku

यह बीज से उगने वाला बहुवर्षीय खरपतवार है जो सड़क व रेलपथों के किनारे, खेतों की पुरानी मेड़ों तथा बंजर व परती भूमियों में सालभर देखा जाता है। इसकी अजूबी संवेदनशीलता व हरकत के कारण लोग इसे गृह उधानों में भी लगाते हैं।

चित्र–45 NbZeqbZ ¼feeklk ifMdk½
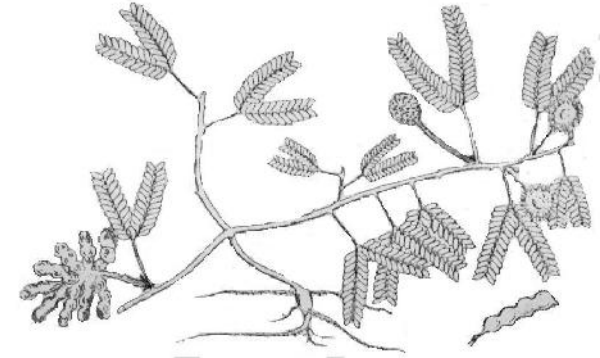
यह जमीन पर अत्यधिक फैलने वाला शाकीय झाड़ीनुमा पौधा है जो करीब एक मीटर तक बढ़ जाता है। अत्यधिक शाखित तना में छोटे–छोटे घने

कांटे होते हैं। मजबूत कंटीले रोयें युक्त लगभग 2.5–5 सेमी. लम्बे पर्णवृन्त में 5–8 सेमी. लम्बी दो पंखाकार संयुक्त पत्तियां होती हैं। प्रत्येक संयुक्त पत्ती (पिन्नी) में डण्ठलहीन, मांसल व 1–1.5 सेमी. लम्बे पत्रक (लीफलेट) 24–40 की संख्या में सजे रहते हैं जिनकी निचली सतह हल्की हरी व मजबूत रोयेंदार तथा ऊपरी सतह गहरी हरी व चिकनी होती है। इसकी पत्तियां रात में ऊपर की ओर सिकुड़कर एक–दूसरे से चिपक जाती हैं और सूर्योदय होते ही यथावत खुल जाती है। खुली हुई पत्तियों को छेड़ने या स्पर्श करने पर पत्रक ऊपर की ओर सिकुड़ कर आपस में चिपक जाते हैं और पूरा पौधा मुरझाया सा प्रतीत होता है। खतरा टलने के थोड़ी देर बाद पत्तियां पुनः खुल जाती हैं। बच्चे इससे खूब खेलते हैं। पत्ती के अक्ष से छोटे एवं कंटीले पुष्पवृन्त वाले लगभग एक सेमी. व्यास के एक–दो गुलाबी रंग के पुष्पशीर्ष निकलते हैं। गोलाकार पुष्पशीर्ष में गुलाबी रंग के घने पुंकेसर रोयें सदृश्य दिखते हैं। रोयेंदार, चपटी एवं 1–2 सेमी. लम्बी फलियां गुच्छे में लगती हैं जो पकने पर काली हो जाती हैं। प्रत्येक फली में 3–5 तक एक–एक बीज अलग–अलग जुड़े प्रतीत होते हैं। जो फली पकने पर कवच सहित एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी पत्तियों मे 'सैपोनिन' की प्रचुर मात्रा के अलावा 'मिमोसिन नामक क्षाराभ पाया जाता है। लाजवन्ती का पूरा पौधा औषधीय गुण वाला होता है। पत्तियों तथा तना का क्वाथ मूत्राशय पथरी, वृक्क विकार, वेदनाशील मूत्रण, बवासीर तथा पेचिस में उपयोगी है। हाइड्रोसील, अण्डकोष सूजन तथा ग्रन्थि शूल में पौधे के अर्क का प्रलेप लगाने से शीघ्र लाभ होता है। इसके गर्म पानी से स्नान करने पर पुठ्ठों तथा वृक्क शूल में आराम मिलता है। बिच्छू के डंक मारने पर पौधे का प्रलेप लगाने से विष का असर कम होता है। जड़ एवं पत्ती का चूर्ण या जड़ का काढ़ा दूध के साथ सेवन से वृक्क एवं मूत्रविकार तथ बवासीर में आरोग्य मिलता है। पेट में भारीपन, बदहजमी, दमा तथा कण्ठपीड़ा में पौधे का चूर्ण शहद के साथ लेना हितकर है। पत्ती एवं फूलों की लेई (पेस्ट) बदन में मलने से त्वचा मुलायम व कांतिमय होती है। ज्यादा मात्रा में जड़, पत्ती एवं फूलों का उपयोग वमनकारी तथा विषैले प्रभाव वाला होता है। नियंन्त्रित मात्रा में जड़ों एवं बीजों का काढ़ा मूत्रल, दमाहारी तथा कामोत्तेजक होता है।

47 ccqbZ ;k ou rqylh

vkfIee xzfVfIee fy-

***Ocimum graticimum* L.**

dqy % yfc,Il

vU; izpfyr uke

कॉमन या वाइल्ड बेसिल (अंग्रेजी), बुवई, बबरी (हिन्दी), मुंजरिकी, सुरसा, अजगंधिका (संस्कृत), बबुई तुलसी (बंगाली), अजबला, सब्जा (मराठी), उमारी, राजतुलसी (गुजराती), बाबरी, बरूरि (पंजाबी), तिरूनपची, निरूनिकु (तमिल), थुलासी, भूतुलसी (तेलगू), तिरूनित्रू (मलयालम)

igpku

बबुई तुलसी वर्षा एवं रबी ऋतु का बीज जनित प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। इसकी एक अन्य प्रजाति कालीतुलसी या रामतुलसी (*ऑसिमम कैनम लिन.*) भी खरपतवार के रूप में देखी जाती है।

चित्र–46 ccbZ ¼vkfIee xzfVfIee½
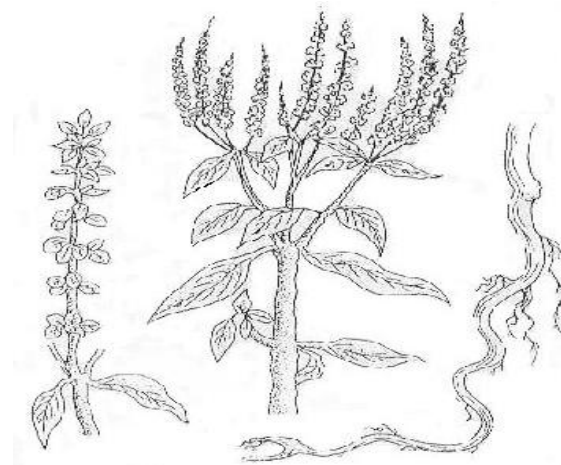
रिहायशी इलाकों के आसपास खाली व परती पड़ी भूमियों, बाग बगीचों, सड़क व रेलपथों के किनारे तथा खाली पड़ी अन्य जगहों पर जंगली या काली तुलसी स्वतः खूब उगती है। घरों में उगायी जाने वाली पूजनीय तुलसी (*ऑसिमम सेंक्टम* लिन.) की अपेक्षा वनतुलसी की गन्ध कपूर की तरह तेज होती है। अतः इसे जानवर भी नहीं खाते। सूखने पर इसकी गन्ध और तीक्ष्ण हो जाती है।

बबुई 50–75 सेमी. ऊँचा व सीधा बढ़ने वाला झाड़ीनुमा शाकीय पौधा है जिसमें पीताभ हरे रंग की रोयें युक्त अनेक शाखायें होती है। तना एवं शाखाओं की गाठों से पत्तियां जोड़े में निकलती हैं जो 5–6 सेमी. लम्बी, किनारों पर दांतेदार, अण्डाकर या भालाकार तथा गहरी हरी होती हैं। शाखाओं एवं टहनियों की सीमाक्ष पर पुष्प 8–15 सेमी. लम्बी मंजरी में लगते हैं। वृन्तविहीन छोटे एवं गुलाबी सफेद व हल्के बैंगनी पुष्प घने जोड़ों में लगते हैं। पुष्प के चिपके हुए दलचक्र बढ़कर छोटे–छोटे अण्डाकार फलों में परिवर्तित हो जाते हैं जो पकने पर काले–भूरे होते हैं। फल (बीजकोष) में छोटे–छोटे काले रंग के चार बीज निकलते हैं। बीजों को पानी में भिगोने पर लुआब (म्युसिलेज) बनता है।

vk"k/kh; mi;kx

जंगली तुलसी का पूरा पौधा औषधीय रूप से उपयोगी है। इसकी पत्तियों में उड़नशील पीताभ व सुगन्धित तेल 'यूजीनॉल' तथा तना में 'कैल्सियम आक्जेलेट' रसायन पाया जाता है। इसका उड़नशील तेल ठण्डा होने पर जम जाता है जिसे बर्बरीकपूर (बेसिल कम्फूर) कहते हैं। तेल में 'आसिमिन' नामक विशेष रसायन पाया जाता है। बीजों को भिगोकर लुआबदार पदार्थ प्राप्त किया जाता है। इसका पौधा सुगन्धित, उत्तेजक, शीतल, तीक्ष्ण, विदाही, अग्निप्रदीपक, रूक्ष तथा पित्तकारक होता है। यह कफ विकार, वातविकार, रक्तविकार, विषविकार, कृमि तथा खाज–खुजली को नष्ट करने वाला है। इसकी स्वेदकारी, कफोत्सारी तथा ज्वरनाशी पत्तियों का अर्क या काढ़ा नाक से खून गिरने, खांसी, जुकाम, मूत्रावरोध, श्वासनली शोथ आदि में भी बहुत उपयोगी है। दाद–खाज एवं अन्य चर्म विकारों में पत्तियों का अर्क डालने से फायदा होता है। मसूडों की सड़न तथा पुराने व दुर्गन्धित घावों को धोने के लिए पौधे का क्वाथ प्रयोग करने से शीघ्र आराम मिलता है। बच्चों में उदरविकार तथा मलेरिया बुखार होने पर जड़ों का

अर्क शहद के साथ देना चाहिए। गले में सूजन एवं सांस लेने में कठिनाई होने पर इसका प्रलेप हितकारी होता है।

बबुई के पुष्प एवं बीज उद्दीपक, मूत्रवर्धक, शांतिकर, कब्जनाशक, कामोत्तेजक तथा पौष्टिक होते हैं। बच्चों में अतिसार, उदरकृमि तथा खांसी में बीजों का चूर्ण शहद के साथ देना चाहिए। बीजों के सिलसिले पदार्थ को आंखों में लगाने से ज्योति बढ़ती है। बवासीर, वृक्क विकार, सूजाक तथा कब्जियत में बीजों की चाय बनाकर पीने से आशातीत लाभ होता है। फूल आने के बाद बबुई का सूखा पौधा घर के अन्दर छत पर टांगने से उसकी तीक्ष्ण गन्ध के कारण मच्छर व विषैले कीट भी नजदीक नहीं आते।

—o—

48

fruifr;k ;k ve:y

vkDtfyl dkfudykVk fy-

***Oxalis corniculata* L.**

dy % vkDtfyMlh

vU; ipfyr uke

इण्डियन सोरेल, येलोवुड सोरेल (अंग्रेजी), चुकत्रिपत्ति (संस्कृत), चक्रीकरसा (बंगाली)

igpku

यह नम एवं अर्द्धछायादार स्थानों में भूस्तारी कन्दीय जड़ से पनपने वाला बहुवर्षीय शाकीय खरपतवार है। बाग–बगीचों एवं उपजाऊ नम भूमियों में बीज से रबी ऋतु में खूब पनपता है जिसमें जनवरी–मार्च में गुलाबी–पीले रंग के छोटे–छोटे फूल आते हैं।
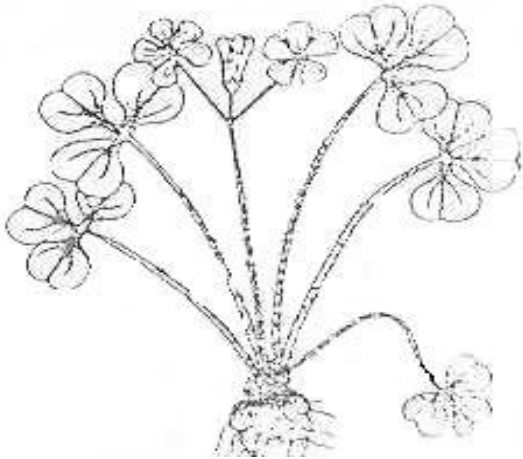
चित्र–47 fruifr;k ¼vkDtfyl dkfudykVk½

भूमि के सहारे बढ़ने वाले इस शाकीय पौधे के भूस्तारी तना में 10–30 सेमी. लम्बे एवं रोयेंदार पर्णवृन्त वाली 5–7 पत्तियां भूमिगत कन्दीय जड़ से निकलती हैं। इसका कन्दीय मूलवृन्त (बल्ब) लट्टू या उल्टे शंकु की तरह होता है जिसमें पतली जड़ों के सहारे 50–70 छोटी–छोटी प्रकन्दिकायें (बल्बिल्स) लगी रहती हैं जो अगले मौसम में नये पौधे के रूप में पनपती हैं। लगभग एक सेमी. व्यास की एकांतर संयुक्त पत्ती में हल्के हरे रंग के तीन हृदयाकार पत्रक होते हैं। प्रकन्द के केन्द्र से लम्बे डण्ठल पर पीले–गुलाबी रंग के कीप के आकार वाले दो पुष्प निकलते हैं जिनका व्यास 1–1.5 सेमी. तक होता है। फली (कैप्सूल) लगभग एक सेमी. लम्बी, बेलनाकार एवं हल्की धूसर भूरी होती है जिसमें अनेक छोटे–छोटे बीज निकलते हैं। यह अत्यधिक पानी सोखने वाला खरपतवार है अतः इसके आसपास की जमीन सूख जाती है।

vk"k/kh; mi;ksx

इसकी पत्तियों में 'आक्जेलिक एसिड' तथा 'वैनिलिक एसिड' की प्रचुरता होती है जबकि परागकणों एवं बीज में 'पपावरीन' व 'मारफीन' पायी जाती है। इसकी पत्तियां शीतल, दाह प्रशमक, क्षुदावर्धक, पाचनाग्नि उद्दीपक तथा विटामिन–सी से भरपूर होती हैं। ताजी पत्तियों की सब्जी खाने से पाचन एवं भूख बढ़ती है। धतूरा का विषैला प्रभाव कम करने के लिए पत्तियों का अर्क सेवन करना चाहिए। मलेरिया ज्वर, अतिसार, उदरपित्त तथा स्कर्वी रोग में पत्तियों का क्वाथ बहुत लाभदायक होता है। गुदा सिकुड़ने व चटकने तथा आंत्रशोथ में पत्तियों का अर्क आरोग्यकारी होता है। आंख की कार्निया की अपारदर्शिता, मस्सा, गोखरू तथा त्वचा की अन्य अपवृद्धियों में पत्तियों का प्रलेप (पॉल्टिस) लगाने से शीघ्र फायदा होता है। त्वचा में रूखापन, लाल चकत्ते एवं चटखन होने पर पत्तियों का अर्क घी के साथ मलना चाहिए। इसके पुष्प एवं बीज मदकारी होते हैं। फोड़ा –फुन्सी एवं अन्य चर्मविकारों में जड़ (प्रकन्द) का प्रलेप हितकर होता है।

49

gjey ;k ejejk

i`xkue gjeyk fy-

***Peganum harmala* L.**

dqy % :Vklh

vU; ikpfyr uke

सीरियन रियू, वाइल्ड रियू (अंग्रेजी), गन्ध्या (संस्कृत), इस्बन्द (बंगाली), हरमर (गुजराती), हरमला (पंजाबी, मराठी), सिमायल वनाई, सिमाहया (तमिल), सिमगोरान्टी (तेलगू)

igpku

यह 30–90 सेमी. ऊँची छोटी झाड़ीनुमा बहुवर्षीय जंगली पौधा है जो उत्तरी एवं उत्तर–पश्चिमी भारत से लेकर दक्षिण भारत के शुष्क मैदानी क्षेत्रों में पाया जाता है।
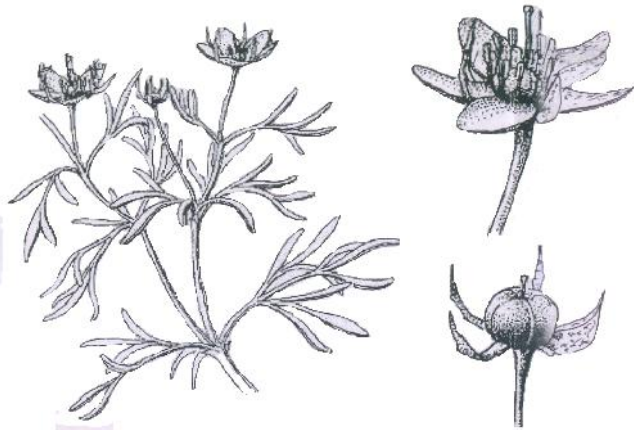
चित्र–48 gjey ¼i`xkue gjeyk½

इसकी पत्तियां छोटी–छोटी पालियों में विभक्त एवं 5–8 सेमी. लम्बी होती है। पत्तियों के अक्ष से एकल रूप में निकलने वाले सफेद पुष्प 2–3 सेमी. आकार के होते हैं। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) गोलाकार, 5–8 मिमी0 लम्बी एवं गहरी धारियों वाली होती है। इसमें 2.5–5 मिमी. लम्बे भूरे रंग के बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी जड़ तथा बीजों में 'हर्मीन', 'हर्मलीन', 'हर्मेलॉल' एवं 'पेगानीन' नामक क्षाराभ पाये जाते हैं। इसका पौधा कामोत्तेजक, गर्मपातक, फीताकृमिनाशक, आर्तव प्रवर्तक एवं मोहजनक मदकारी होता है। जड़ की लेई (पेस्ट) सरसों के तेल के साथ सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं। पत्तियों का क्वाथ गठियावात के दर्द में बहुत हितकर है। फूलों एवं तना की छाल का प्रलेप हृदयोत्तेजना शांत करता है। इसके बीज औषधीय गुणों से भरपूर होते है। ये मदकारी, दर्दनाशक, निद्राकारी, कामोत्तेजक, कृमिनाशक, आर्तवजनक, ज्वरनाशक एवं दुग्ध वर्धक होते हैं। बीजों का क्वाथ दमा, हिस्टीरिया, पेटदर्द व ऐंठन, पीलिया, ज्वर, मूत्र एवं माहवारी में रूकावट, वातविकार, वृक्क एवं पित्ताशय की पथरी एवं मांस पेशियों के वातीय दर्द में आरोग्यकारी है। बीजों का चूर्ण फांकने से फीताकृमि दस्त के साथ बाहर निकल जाते हैं। स्त्रियों में मासिक स्राव बढ़ाने एवं गर्भपात कराने के लिए बीज बहुत उपयोगी हैं। ज्यादा मात्रा में बीजों का प्रयोग मदकारी व जहरीला प्रभाव छोड़ता हैं और मतिभ्रम की स्थिति आ सकती है। इनका नियंत्रित मात्रा में सेवन स्नायुतंत्र, कामशक्ति एवं मस्तिष्क को उत्तेजित करता है। इसके क्वाथ से कुल्ला एवं गरारा करने से स्वर यंत्र विकार (लैरिंजाइटिस) में आरोग्य मिलता है।

—o—

50 gtkjnkuk ;k Hkw&vkaoyk

Qkby¦UFkl fu:jh fy-

***Phyllanthus niruri* L.**

dqy % ;qQkfcZ,lh

vU; iapfyr uke

एग वूमेन, सीडअण्डरलीफ (अंग्रेजी), जर–आमला, हुलहुल (हिन्दी), भू–अमलकी (संस्कृत), भूईअमला (बंगाली), किझक्कईनेलि (मलयालम), किलक्केनलि (तमिल), नेलवुसरी (तेलगू)

igpku

हजारदाना बरसात में बीज से पनपने वाला एकवर्षीय शाकीय खरपतवार है जो जाड़ों में भी खूब देखा जाता है। ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के उपजाऊ खेतों एवं खाली पड़ी भूमियों में यह खूब उगता है। यह 15–60 सेमी. ऊँचाई तक बिल्कुल सीधा बढ़ता है।
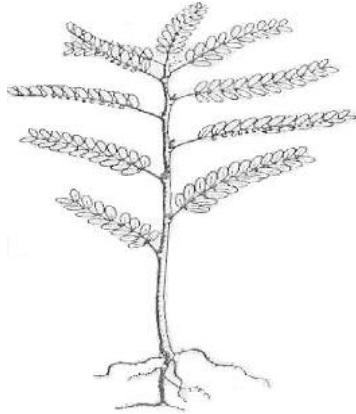
चित्र–49 gtkjnkuk ¼Qkby¦UFkl fu:jh½

आंवले की तरह की संयुक्त पंत्तियां दीर्घाकार, झिल्लीदार पतली, हल्की

हरी,छोटी एवं 5–8 मिमी. लम्बी होती हैं और लम्बी सींक (शिरा) पर दो कतारों में लगी रहती हैं। पत्तियों की निचली सतह पर महीन रोयें तथा आधार पर दो कंटक (स्टिपुल) होते हैं। प्रत्येक छोटी पत्ती (लीफलेट) के पीछे की तरफ अक्ष से हल्के सफेद रंग के लगभग 0.5 मिमी. आकार के छोटे–छोटे पुष्प एकल रूप में लगते हैं। प्रत्येक पत्रक के अक्ष के विपरीत नीचे की ओर लगभग 2 मिमी. व्यास के हरे–गोल फल (कैप्सूल) एक कतार में आंवले की तरह लगते हैं। प्रत्येक संपुटिका (कैप्सूल) तीन भागों में बंटी होती है। एक पौधे से हजारों फल व बीज उत्पन्न होते हैं।

vkS"k/kh; mi;ksx

इसकी हरी एवं शुष्क पत्तियों व शाखाओं में कषैला कड़ुवा पदार्थ 'फाइलेन्थिन' एवं 'हाइपोफाइलेन्थिन' पाया जाता है। इनमें 'कैल्सियम आक्जेलेट' की प्रचुर मात्रा मिलती है। जड़ में 'सैपोनिन' रसायन होता है। पूरा पौधा स्तम्भक, पित्तस्रावक, मूत्रवर्धक, मृदुरेचक, पाचक, कटुपौष्टिक तथा अवरोधनाशक होता है। जड़ एवं पत्तियों का ताजा कटुअर्क कामला (पीलिया) की रामबाण औषधि है। पेट दर्द, ड्राप्सी, सुजाक, कब्जियत, मंदाग्नि, अतिसार एवं पेचिस में इसका काढ़ा पीना बहुत हितकर है। छाल का अर्क मूत्रवर्धक एवं मृदुरेचक होता है। जड़ का क्वाथ पीलिया–ज्वरनाशक, दुग्ध स्राव वर्धक तथा स्त्रियों में अत्यधिक मासिक स्राव रोकने वाला होता है। जले–कटे, खरोंच, सूजन, चर्म रोग, अल्सर, घमौरी आदि में पत्तियों का प्रलेप लगाना चाहिए। फलों एवं बीजों का सफेद अर्क (दूध) चर्मविकार एवं सूजन में लगाने से शीघ्र आरोग्य मिलता है। आंख आने पर घी के साथ पत्तियों का अर्क लगाना चाहिए।

—o—

51 dqYQk ;k cM+k uksfu;k

ikpiykdk vkyjifl vk fy-

***Portulaca oleracea* L.**

diy % ikpiydlh

vU; ipfyr uke

कामन पर्सलेन (अंग्रेजी), बड़ी लूनिया, कुरफा (हिन्दी), सलूनक (संस्कृत) ढ़ोलिका (पंजाबी)

igpku

यह वर्षा एवं गर्मी ऋतु में बीज व तना से पनपने वाला बहुवर्षीय खरपतवार है। यह भूमि के सहारे बढ़ने वाला मांसल पौधा उपजाऊ खेतों एवं परती भूमियों में बरसात में खूब उगता है और अपनी तीव्र बढ़वार से भूमि को पूरी तरह ढ़क लेता है। इसकी दूसरी प्रजाति *पो. क्वाड्रीफोलिया* लिन. (कुरखा, लघु लोनिका या छोटा नुनिया) भी उपजाऊ खेतों एवं घरों की कच्ची अट्टालिकाओं में खूब उगती है। इनकी पत्तियों में खट्टापन होने के कारण बच्चे इन्हें खूब खाते हैं।

चित्र–50 ukfu;k ¼ikpiykdk vkyjifl;k½
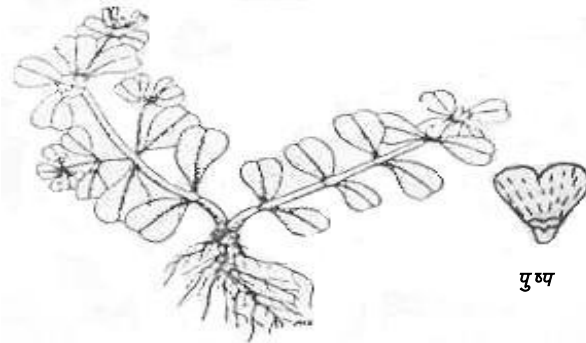
तना मुलायम, मांसल–गूदेदार, अत्यधिक शाखित एवं भूमि पर चटाई की

तरह बिछा रहता है। मांसल शाखायें लालाभ–बैंगनी होती हैं जो 30 सेमी. तक लम्बी बढ़ती है। पर्ण वृन्त रहित मांसल पत्तियां तना में एक दूसरे के विपरीत निकलती हैं और शाखाओं के अग्रभाग पर गुच्छे के रूप में घनी हो जाती हैं। साधारण पत्तियां 0.5–3.0 सेमी. लम्बी व 0.5 से 2 सेमी. चौड़ी, गूदेदार, चमकीली, किनारों पर चिकनी होती हैं जिनकी नोंक गोलाकार चौड़ी होती है। छोटी नुनिया में नुकीली पत्तियों के अक्ष एवं तना की गांठों पर छोटे–छोटे महीन–सफेद रोयें पाये जाते हैं एवं एक पुष्प में चार गुलाबी या पीली पंखुड़ियां होती हैं। कुल्फा के पुष्पवृन्त विहीन पीले रंग के फूल पत्तियों के अक्ष से एकल रूप में आते हैं और टहनी के अग्रस्थ भाग पर गुच्छे के रूप में लगते हैं। फली (कैप्सूल) छोटी होती है और लम्बवत फटती है जिसमें अनेक छोटे–छोटे बीज होते हैं। यह नम एवं सिंचित क्षेत्रों में ज्यादा पनपता है। इसकी जड़ काट देने पर भी तना कई सप्ताह जीवित रहता है और नम भूमि के सम्पर्क में आने पर नये पौधे के रूप में पनपता है। इसके बड़े और रंग–बिरंगे फूल वाली किस्में अलंकृत उद्यानों में सुन्दर फूलों के लिए उगायी जाती है।

vk"k/kh; mi;kx

इसका शाकीय पौधा विटामिन–सी से भरपूर, दाहशमक एवं आरोग्यकारी होता है। स्कर्वीरोग, दर्द भरे कठिन मूत्रण, यकृत विकार एवं वृक्क, मूत्राशय व फेफड़ों के रोग तथा श्वांस व फुफ्फुस नलिकाओं से रक्त स्राव में यह बहुत लाभप्रद है। इसका प्रलेप (पॉल्टिस) जले–कटे, तप्त द्रव दाह एवं अन्य त्वचा रोगों में बहुत हितकर है। पत्तियां पौष्टिक, स्तम्भक, मूत्रवर्धक, मार्दवकर एवं दाह प्रशमक होती हैं। दर्द भरे जटिल मूत्रण एवं स्कर्वी रोग होने पर इनका काढ़ा तथा खून फटने पर अर्क लेना बहुत फायदेमन्द है। कनपटी में गर्मी एवं दर्द भगाने तथा कोमलता लाने के लिए पत्तियों का प्रलेप हितकर है। घमोरियों की चुभनभरी, गर्मी से छुटकारा पाने के लिए तना का अर्क लगाना चाहिए। इसके बीज मूत्रवर्धक, पौष्टिक, स्तम्भक एवं शांतिप्रदायक होते हैं और दर्दभरी तीव्र पेचिस एवं आंवयुक्त अतिसार में बहुत लाभप्रद होते हैं। पूरे पौधे की तरह बीजों का प्रलेप या काढ़ा भी अति आरोग्यकारी होता है।

—o—

ckcph ;k dq"Bukf'kuh

lkjfy;k dkjkbyhQkfy;k fy-

***Psoralia corylifolia* L.**

dqy % yX;wfeukslh ¼ifify;kuklh½

vU; izpfyr uke

बाबची सीड्स (अंग्रेजी), बकूची, सुगन्ध कन्टक (संस्कृत), लताकस्तूरी (बंगाली), बवाची (मराठी), बाबची (पंजाबी), बवाकी (गुजराती), कार्पो–करीशी (तमिल), कालगिन्जा (तेलगू)

igpku

यह एकवर्षीय शाकीय पौधा सम्पूर्ण भारतवर्ष में सड़कों व रेलपथों के किनारे तथा खाली पड़ी एवं परती भूमियों में जंगली रूप में खूब उगता है।
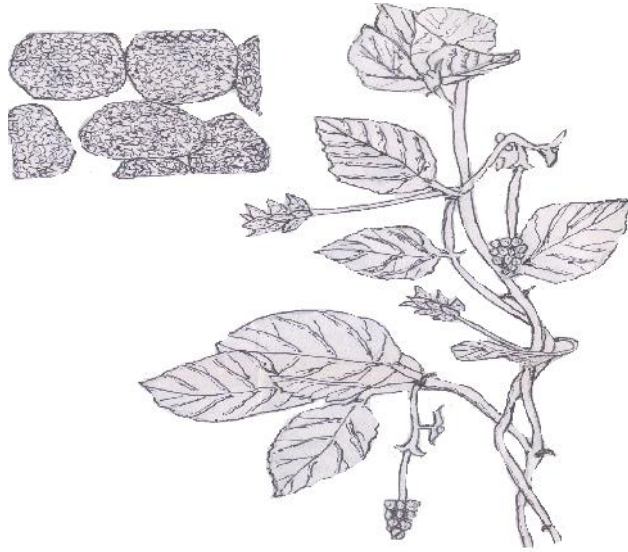
चित्र–51 ckcph ¼lkjfy;k dkjkbyhQkfy;k½

अत्यधिक शाखाओं युक्त मुलायम तना 100–125 सेमी0 ऊंचाई तक बढ़ता है। तना एवं शाखाओं पर खांचे पाये जाते है। जो छोटी–छोटी ग्रन्थियों एवं रोमों से ढ़के रहते हैं। डण्ठल युक्त साधारण गोल व हल्की हरी पत्तियों तथा डण्ठल में दोनों सतहों पर रोयेंदार काले रंग की छोटी–छोटी ग्रन्थियां होती हैं जिनमें सुगन्धित तैलीय पदार्थ होता है। लगभग 2.5–5 सेमी. लम्बे व रोयेंदार पुष्पवृन्त वाले पीताभ–बैंगनी रंग के फूल पत्ती के अक्ष से 10–30 की संख्या में गुच्छे में आते हैं जिसमें काले रंग का एक बीज निकलता है। इसका प्रवर्धन बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;ksx

बकूची के बीज औषधीय गुण वाले होते हैं। बीजों में तेल निकलता है जिसमें 'सोरेलिन' नामक रसायन पाया जाता है। पत्तियों का अर्क डायरिया तथा जड़ की दातून दांत–मसूड़ों के लिए फायदेमन्द होती है। सर्पदंश एवं बिच्छू के डंक मारने पर जड़ का प्रलेप लगाना हितकर है। इसके बीजों का क्वाथ मूत्रवर्धक, स्वेदजनक, कमोत्तेजक, कृमिहारी तथा मृदुरेचक होने के साथ लैप्रोसी, ल्यूकोडर्मा एवं अन्य चर्म विकारों में बहुत उपयोगी है। कुष्ठ, सफेद दाग एवं अन्य चर्म रोग होने पर बीजों को पीसकर इसका प्रलेप दिन में 3–4 बार लगाना चाहिए। जहरीले कीड़ों, बिच्छू एवं सांप के काटने पर इनका प्रलेप एवं काढ़ा विष का असर कम करता है। इसके तेल में जीवाणुनाशी गुण होते है। बीजों का ओलिओ रेजिन एवं तेल वैसलीन या दूध में मिलाकर लैप्रोसी एवं ल्यूकोडर्मा में स्थानीय रूप में लगाने से शीघ्र फायदा होता है।

—o—

53

dqaxbZ ;k cfj;kjh

flMk dkfMQkfy;k fy-

***Sida cardifolia* L.**

dqy % ekyoklh

vU; izpfyr uke

कन्ट्री मैलो (अंग्रेजी), खरैंटी, बरयाल (हिन्दी), जयन्ती, ब्रेला (संस्कृत), कुंगी, बाला (बंगाली), खरेंट (पंजाबी), केट्टूरम (मलायलम), नील टुट्टी (तमिल), चिरूबेंदा (तेलगू), चिकाणा (मराठी), बेडियानला (उड़िया), बालदाना (गुजराती)

igpku

यह पूरे भारतवर्ष में बंजर व खाली पड़ी भमियों एवं जंगलों में उगने वाला एकवर्षीय या द्विवर्षीय खरपतवार है। यह उष्ण एवं उपोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में अधिक उगता है।

चित्र–52 cfj;kjh ¼flMk dkfMQkfy;k½
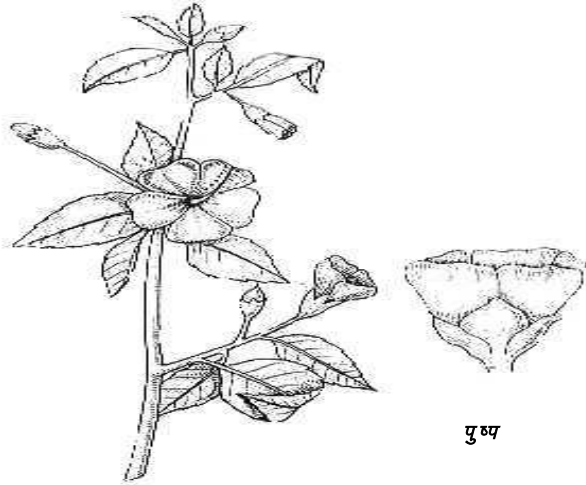
यह अत्यधिक शाखित, सीधा एवं झाड़ीनुमा जंगली पौधा है जिसमें पूरे पौधे पर छोटे–छोटे मुलायम रोयें पाये जाते हैं। पत्तियां ह्रदयाकार, मोटी, 2.5–5 सेमी0 लम्बी व 3–3.5 सेमी0 चौड़ी होती हैं जो अग्र भाग पर ज्यादा चौड़ी एवं किनारों पर गोल दांतेदार होती हैं। पत्ती की दोनों सतहों पर घने–मुलायम रोयें होते हैं तथा पर्णवृन्त 4–5 सेमी0 लम्बा होता है। छोटे पुष्पवृन्त युक्त पीले रंग के फूल एकल या छोटे गुच्छे में लगते हैं। पंखुड़ियां दलचक्रों से दुगुनी लम्बी होती हैं। फल 0.5 से 1.0 सेमी0 व्यास का गोलाकार एवं ऊपर चपटा होता है जिसमें शीर्ष पर गेहूं के बाल सदृश्य दो पतली–नुकीली संरचनायें होती हैं। 7–10 भागों में विभक्त फल झुर्रीदार एवं पीछे गहरी धारियों युक्त होता है और पूरा फल वक्राकार–मजबूत रोमों से ढ़का होता है। फल में काले रंग के चिकने बीज निकलते है।

vk"k/kh; mi;kx

इसमें 'इफेड्रिन' नामक क्षाराभ पाया जाता है। इसका पूरा पौधा औषधीय होता है। पत्तियां श्लेष्मक होती हैं। बुखार एवं खूनी बवासीर में इनका काढ़ा शांति प्रदायक होता है। फोड़ा एवं व्रण में इनका प्रलेप बांधने से घाव जल्दी भरता है। पूरे पौधे का अर्क या क्वाथ गठिया वात, सूजाक, लिंग ग्रन्थि स्राव एवं ज्वर सम्बन्धी बीमारियों में बहुत उपयोगी है। इसकी टहनियां रेशेदार होती हैं जो दूध के साथ पकाकर खाने से बवासीर में शीघ्र आराम मिलता है।

इसकी जड़ शीतल, ग्राही, ज्वरघ्न, मार्दवकर, ह्रदय व तंत्रिका बल्य, मूत्रवर्धक एवं पुनर्नवीकारक होती हैं। तंत्रिका एवं मूत्र विकार, सूजाक, श्वेत या रक्तप्रदर, खूनी बवासीर, पित्त विकार, मूत्राश्य शोथ, बुखार, नसों में रक्त स्राव एवं मुखीय लकवा होने पर जड़ का पतला गर्म पानी बहुत फायदेमन्द है। इसका अदरक के साथ गाढ़ा क्वाथ पौष्टिक, बल्य, तीव्र स्वेदक, ज्वरहारी, पाचन उद्दीपक एवं मुखीय व अर्द्धकाय पक्षाघात में शीघ्र आरोग्य प्रदान करता है। सिरदर्द के साथ कानों में शोर एवं गर्दन सख्त होने पर जड़ का अर्क हींग के साथ प्रयोग करना चाहिए। जड़ की छाल का चूर्ण दूध एवं शक्कर के साथ लेने से बार–बार तेज मूत्रण, सूजाक, पुरानी पेचिस, तंत्रिका विकार एवं महिलाओं के श्वेत प्रदर में तुरन्त फायदा होता है। इसका काढ़ा गर्भवती स्त्री में तनाव, बदनदर्द, ज्वर एवं गर्भपात रोकने में उपयोगी है। गठिया वात, मुखीय एवं अर्द्धकायिक पक्षाघात,

जांघ की पिछली नस में सूजन एवं फीलपांव होने पर इसका अर्क दूध में पकाकर तिल के तेल के साथ मालिश करना चाहिए। फोड़ा व खरोंच मे जड़ का ताजा अर्क लगाने से घाव जल्दी भरता है। जड़ को जिंजिल तेल के साथ पकाकर नवजात शिशु के पूरे शरीर में मालिस करने से प्रसवोपरांत मासपेशियों में खिचाव तथा बाहरी हवा का दुष्प्रभाव कम होता है। इसके बीज कामोत्तेजक, वीर्य वध ाक एवं पौरूष शक्ति वर्धक होते हैं। सूजाक, उदरशूल एवं बिना कोई परिणाम के टट्टी व पेशाब की इच्छा होने पर इनका क्वाथ फायदेमन्द होता है।

—o—

edks; ;k ?kebZ

lkyue ukbxze fy-

***Solanum nigrum* L.**

dy % lkyulh

vU; ipfyr uke

ब्लैकनाइट शेड (अंग्रेजी), काकमाची (संस्कृत), ककमाची (बंगाली), माको, पीलक (पंजाबी), मनटकाली (तमिल), कामान्ची (तेलगू), काचीगिडा (कन्नड)

igpku

मिर्च के पौधे की तरह दिखने वाला यह खरीफ ऋतु का एकवर्षीय खरपतवार है जो उष्ण एवं शीतोष्ण जलवायु में खूब पनपता है। खाली पड़ी नम भूमि, बाग तथा सब्जियों, ज्वार, मक्का, कपास आदि के उपजाऊ खेतों में इसे आसानी से देखा जा सकता है।
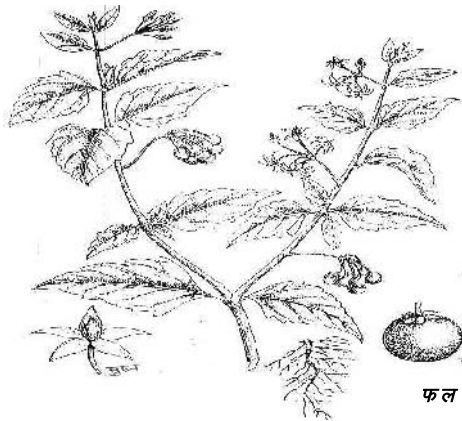
चित्र–53 edk; ¼lkyue ukbxze½

बीज से उगने वाला कांटे रहित यह पौधा 40–60 सेमी0 ऊंचाई तक

सीधा बढ़ता है। पर्णवृन्त युक्त गहरी हरी–चिकनी, अण्डाकार तथा हल्की लहरदार किनारों युक्त पत्तियां मुख्यतः तना एवं शाखाओं से निकलती हैं। पुष्पक्रम सीधा तथा पार्श्वशाखाओं एवं पत्तियों के अक्ष से निकलकर नीचे की ओर छत्रक की तरह लटकता है। इसके ऊपरी छोर पर छोटे–सफेद फूल गुच्छों में लम्बे पुष्प वृन्त पर लगते हैं। सफेद पुष्प के केन्द्र में पीला धब्बा सा दिखता है। मटर के दानों के आकार के लगभग 0.5–1 सेमी0 व्यास के गोल फल (बेरी) शुरू में हल्के हरे तथा बाद में गहरे हरे–काले दिखते हैं। पकने पर फल लाल या पीले रंग के तथा मीठे होते हैं जिन्हे बच्चे खूब खाते हैं। फल का छिलका पारदर्शी होने के कारण अन्दर बीज दिखते हैं। एक पौधे से हजारों बीज उत्पन्न होते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

मकोय के पौधे तथा फलों में 'सोलेनिन' तथा 'सैपोनिन' एल्केलाइड्स पाये जाते हैं। इसका पौधा टॉनिक, स्वेदकारी, मूत्रवर्धक, शांतिकर, कफनाशक, उदरवायु व कब्जनाशक तथा दर्दनाशक के रूप में उपयोगी है। पुरानी खांसी, जलोदर, पीलिया, बुखार, यकृतवृद्धि, बवासीर तथा पेचिस में पौधे का काढ़ा पीना चाहिए। चर्मरोग, अल्सर तथा सोरिआसिस में नये प्ररोहों का शत लगाना हितकर होता है। बवासीर, वृक्क शूल एवं सूजाक में पूरे पौधे का अर्क या क्वाथ फायदेमन्द होता है। इसके फल एवं बीज बलवर्धक, स्वेदकारी, मूत्रवर्धक, क्षुदावर्धक, ज्वरनाशक तथा दस्तावर होते हैं। इन्हें खाने से प्यास व जलन कम होती है तथा भूख बढ़ती है। फलों का अर्क अस्थमा, बुखार, चर्म एवं मूत्र विकारों में उपयोगी है। कच्चे फल मसलकर लगाने से दाद ठीक हो जाता है। आंख आने पर इसका अर्क लाभप्रद होता है।

—o—

55

NksVh HkVdVS;k ;k dVsyh

lkyue tUFkkdkie JkM-

***Solanum xanthocarpum* Schrod.**

dy % lkyulh

vU; ipfyr uke

इण्डियन सोलेनम (अंग्रेजी), रंगाती कंटेरी, रिंगनी (हिन्दी), व्याघ्री, कन्टकारी (संस्कृत), कंटकारी (बंगाली, कन्नड़), कंडियारी, मोकरियाण (पंजाबी), भोयरिंगानी (गुजराती), कटसरीया (असमिया), वृहतीवेंगानी (उड़िया), कण्डंत्तारी (तमिल), नीलमुलाका, चल्लामुलागा (तेलगू), कण्टंकटीरी (मलयालम)

igpku

आलू कुल का भटकटैया खरीफ एवं रबी ऋतु का प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है जो मुख्यतः बीज से पनपता है। इसे खाली पड़ी परती व बंजर भूमि, सड़कों के किनारे तथा ज्वार, बाजरा व मक्का के खेतों में सर्वत्र आसानी से देखा जा सकता है। बडी कंटेरी या गगली भाटा (*सोलेनम इनकेनम* लि.) के गोल अण्डाकार फल छोटे बैंगन के समान दिखते है।
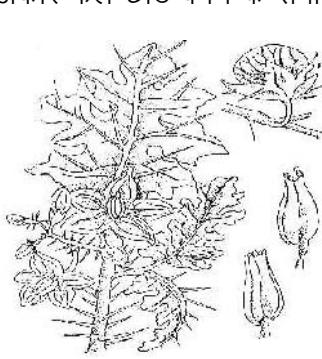
चित्र–54.1 NkVh HkVdV;k ¼lkyue tUFkkdkie½

चित्र–54.2 cMh HkVdV;k ¼lkyue budue½

अत्यधिक शाखित इस पौधे की पुरानी टहनियों तथा पत्तों के डण्ठल पर लगभग एक सेमी0 लम्बे मजबूत व पीले रंग के कांटे पाये जाते हैं। नई टहनियों व पत्तियों पर कठोर रोयें पाये जाते हैं जो बाद में कांटे में परिवर्तित हो जाते हैं। कांटे 1–1.5 सेमी0 लम्बे होते हैं। गहरी कटान तथा कांटेयुक्त पत्तियां लगभग 10 सेमी0 लम्बी होती हैं जिन पर पीले रंग की मोटी व स्पष्ट शिरायें नजर आती है। बिल्कुल बैंगन के फूल की तरह बैंगनी रंग के पुष्प पत्ती के अक्ष के विपरीत एकल या गुच्छे में लगते हैं। इसके फल 1.5 –3 सेमी0 व्यास के गोल, अण्डाकार तथा पीले रंग के होते हैं जिन पर हरी–सफेद धारियां लम्बवत होती हैं। पुष्प के दलचक्र फल से चिपके रहते हैं। गहरे पीले रंग के पके फलों में सफेद–पीले रंग के सैकड़ों बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

यूनानी एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियों में कटेरी को औषधीय गुणों से भरपूर माना गया है। इसमें 'डायोस्जेनिन', 'सोलेकार्पिडीन' एवं 'सोलेनीडीन' नामक क्षाराभ प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। पूरा पौधा कफ निस्सारक, मूत्रवर्धक, दमाहारी, स्तम्भक, स्वेदकारी, ज्वरनाशक तथा कृमिहारी के रूप में उपयोगी है। जड़ का चूर्ण या काढ़ा दमा, पार्श्वशूल, कफ, प्रतिश्याय, बुखार, जलोदर तथा हिचकी जैसे गम्भीर रोगों के लिए उपयुक्त दवा है। जड़ का अर्क शराब के साथ देने से उल्टी आने में बहुत फायदेमन्द है। जड़ व पत्तों का अर्क नाक में टपकाने से नकसीर में राहत मिलती है। पूरा पौधा सुखाकर उसकी राख शहद के साथ चाटने से दमा तथा सीने का दर्द ठीक होता है। इसकी जड़ों का प्रलेप शिश्न की शिथिलता तथा स्त्रियों के स्तनों का ढीला पन दूर करता है। पूरे पौधे का प्रलेप व क्वाथ गठिया वात, सूजाक, जलोदर तथा कण्ठ सूजन में लाभप्रद होता है। ज्वर तथा पेट में पथरी होने पर जड़ों का काढ़ा पीना चाहिए। बच्चों में जीर्णकाय, कफ तथा बुखार होने पर फलों का चूर्ण शहद के साथ देना चाहिए। पुष्पकलियों एवं पुष्पों का अर्क नकसीर, कान दर्द तथा आंखों में पानी आने पर बहुत उपयोगी है। गले में सूजन, ब्रोंकाइटिस, पेशीयदर्द, कानदर्द तथा छाती के दर्द में फलों का काढ़ा बहुत हितकर होता है। श्वासरोग, हिचकी, प्रतिश्याय, यकृतवृद्धि आदि में बीजों का चूर्ण लेना चाहिए। ताजी जड़ों का अर्क दूध के साथ पीने से गर्भपतन रुक जाता है।

56

fo"k[kijk ;k ykylkcquh

V'k;UFkek ekukfxuk fy-

***Trianthema monogyna* L.**

dqy % fQdkbMlh

vU; ipfyr uke

कारपेट वीड (अंग्रेजी), पथरी, गदबनी (हिन्दी), पुनर्नवाई (संस्कृत), विषखपरी (पंजाबी), साबुनी (बंगाली), सतोड़ी (गुजराती), गालीजेरू (तेलगू), सरून्नई (तमिल), मुचुगोनी (कन्नड़), पुण्ढ़ारी घेंटुली (मराठी)

igpku

बीज से पनपने वाला विषखपरा वर्षा ऋतु का प्रमुख एकवर्षीय खरपतवार है। ज्वार, बाजरा, मक्का, आलू आदि के खेतों, सड़क व रेलपथों के किनारे तथा अन्य खाली पड़ी भूमियों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। अपनी अत्यधिक वृद्धि एवं शाखाओं से यह भूमि को पूरी तरह ढ़क लेता है। इसे पथरचटा से अलग पहचानने में कठिनाई होती है।
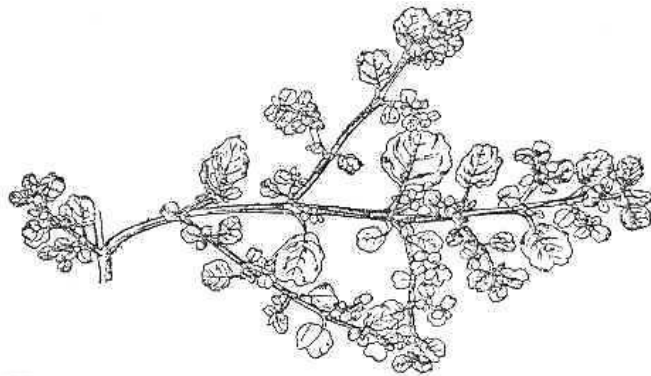
चित्र–55 fo"k[kijk ¼V'k;UFkek ekukfxuk½

इसकी 20–40 सेमी0 लम्बी एवं कोणीय शाखायें भूमि के सहारे चारों ओर दूर तक फैलती हैं। शाखायें एवं पत्तियां मांसल होती हैं। पत्तियां नोंक की तरफ गोलाई लिये हुए 2–4 सेमी. लम्बी, 1.5–2 सेमी. चौड़ी, किनारों पर झुर्रीदार तथा गहरी हरी होती हैं। नीलाभ–सफेद रंग के पुष्प पत्ती के डण्ठल के अक्ष से लम्बे पुष्पवृन्त पर आते हैं। छोटे–छोटे फलों में काले रंग के अनेक वृक्काकार बीज पाये जाते हैं।

vk"k/kh; mi;kx

इसकी जड़ में 'सैपोनिन' तथा पत्तियों में 'पुनर्नवीन' क्षाराभ प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यह मूत्रवर्धक, गर्भपातक तथा सूजनहारी होता है। किडनी व लीवर की सूजन, ड्राप्सी, प्रसव के बाद गर्भाशय शोथ आदि में पत्तियों का अर्क या क्वाथ उपयोगी है। आधा–सीसी सिर दर्द में पत्तियों का अर्क नासा छिद्र में डालने से आराम मिलता है। टेस्टीज में सूजन होने पर पत्तियों का प्रलेप लगाना चाहिए। जड़ों का चूर्ण या काढ़ा गर्भपात कराने, मासिक धर्म नियंत्रित करने, गर्भाशय को सिकोड़ने तथा टेस्टीज की सूजन कम करने में बहुत असरकारी होता है। यह दस्तावर के रूप में भी उपयोगी है।

—०—

57

xks[kq:

fV'cy I V'jfLV'l fy-

***Tribulus terrestris* L.**

d|y % tkbxkfQy:lh

vU; ipfyr uke

पंक्चर वाइन, स्माल कालथ्रॉप्स (अंग्रेजी), गोक्षुरा, गोक्षुरम् (संस्कृत), गोखरू, गोखुरि (बंगाली), गुखरू (गुजराती), कान्ती (राजस्थानी), भखरा, भाखंडा (पंजाबी), नेरून्जी (तमिल), पलेरू मुल्लू (तेलगू), नेगालू (कन्नड़), नेरिन्जिल (मलयालम), लहाना गोखरू (मराठी)।

igpku

यह खरीफ, रबी एवं जायद तीनों मौसमों में बीज से पनपने वाला बहुवर्षीय खरपतवार है जो मुख्यतः समुद्र तल से 3000 मीटर की ऊंचाई पर बंजर, शुष्क एवं परती भूमियों में खूब पनपता है। जमीन पर फैलने वाले इस शाकीय पौधे को वर्ष भर देखा जाता है।
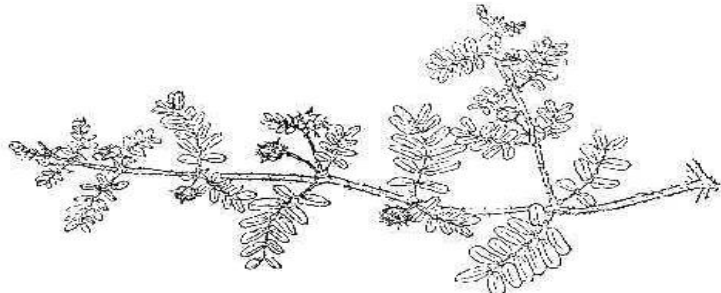
चित्र–56 xk[k: ¼fV'cy I V'jfLV'I½

यह भूमि के समानांतर लम्बा फैलने वाला धूसर रंग का रोयेंदार जंगली शाक है। टहनी में 5–8 सेमी0 लम्बी संयुक्त पत्तियां समान रूप से जोड़े में

विन्यसित होती है। प्रत्येक संयुक्त पत्ती में 8–12 मिमी0 लम्बे, अण्डाकार व रेशमी चिकने पत्रकों (लीफलेट) के 6–7 जोड़े होते हैं। पत्ती के डण्ठल के विपरीत कोण से लगभग 1–1.5 सेमी0 व्यास वाले पीले रंग के पुष्प एकल रूप में आते हैं। मटर के दाने के बराबर बड़ा फल पंचकोणीय एवं काष्ठीय–कठोर होता है जिसकी प्रत्येक पाली में 2–2 नुकीले एवं कठोर कांटे होते हैं। फल का छिलका व कांटे बहुत कठोर होने के कारण दबने पर भी फल नहीं फूटता। इन्ही मजबूत व नुकीले कंटको के कारण इसके फल लोगों के तलवे, कपड़ों एवं वाहनों के टायरों में चुभ जाते हैं और टूटते नहीं।

vk"k/kh; mi;kx

इसका पूरा पौधा औषधीय रूप से उपयोगी है। ताजे पौधे को पानी में घोलने से लिसलिसाहट पैदा होती है। इसका लिसलिसा घोल शीतल, शांतिप्रदायक, बलवर्धक, कामोत्तेजक तथा मूत्रवर्धक होता है। दुर्गन्धित एवं दर्द भरे मूत्र, पुराने सूजाक, पौरूष व शुक्राणु दुर्बलता, स्वप्न दोष एवं मूत्राशय में पथरी पनपने पर इसका चूर्ण या घोल पानी या दूध के साथ सेवन करने से बहुत लाभ होता है। सूजाक व वात व्याधि, प्लीहावृद्धि तथा स्त्रियों में प्रसव के बाद गर्भाशयिक विकारों में पत्तियों का अर्क या चूर्ण दूध व गुड़ के साथ लेना फायदेमन्द होता है। घाव व फोड़ों को धोने तथा मरहम करने के लिए भी इसका अर्क उपयोगी है।

पत्तियों की अपेक्षा इसके फूल एवं फल ज्यादा असरकारी होते हैं। यह शीतल, मूत्रल, कामोत्तेजक, वीर्य स्तम्भक, ऐंठन विदाही, आर्तव जनक (मासिक धर्म खोलने) तथा मर्दानगी विकसित करने वाले होते हैं। पौरूष कमजोरी, स्वप्न दोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता तथा मूत्राशय विकारों में फूल एवं फलों का अर्क या काढ़ा दूध के साथ पीने से शीघ्र फायदा होता है। स्त्रियों में गर्भावस्था या प्रसव के बाद गर्भाशयिक विकार, मूत्रावरोध, मूत्रनली शोथ, सूजन, घाव तथा शक्ति हीनता होने पर फलों का क्वाथ या गुड़ व गुलहठी के साथ इनका चूर्ण सेवन करने से आरोग्य मिलता है। लिंग विकार, नपुंसकता तथा अवरोधित मूत्रण में बीजों का चूर्ण या क्वाथ रोजाना लेना हितकर होता है। फलों का प्रलेप ग्रन्थिवात, सूजाक तथा वृक्क विकारों में बहुत लाभप्रद है।

58

taxyh fi;kt ;k ouI;kth

v thfu;k bf.Mdk dUFk-

***Urginea indica* Kunth.**

dy % fyfy,lh

vU; izpfyr uke

इण्डियन स्क्विल (अंग्रेजी), कोलीकन्डा, घेसुवा (हिन्दी), कोलाकन्द, वन–पलन्डम (संस्कृत), जंगली कन्डा, पटालू (बंगाली), जंगलीकन्दो (गुजराती), रणकन्डा (मराठी), नरिवेन्गायम (तमिल), नक्कावली गड्डा (तेलगू), कन्थांगा (मलयालम)

igpku

यह उत्तरी–पश्चिमी हिमायल से लेकर कोंकण तक सम्पूर्ण भारत में जंगली रूप में उगने वाला एकवर्षीय पौधा है जिसमें प्याज की तरह शल्कीय कन्द बनता है।
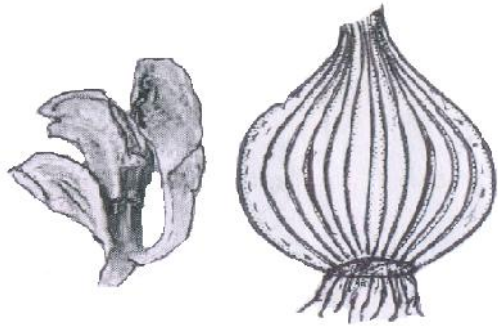
चित्र–57 ouI;kth ¼vthfu;k bf.Mdk½

इसमें प्याज की तरह का भूमिगत शल्कीय कन्द (बल्ब) होता है जो

5–10 सेमी0 व्यास का अण्डाकार तथा हल्का या लालाभ–सफेद रंग का होता है। पत्तियां अनेक, पतली, भालाकार नुकीली एवं 15–45 सेमी0 तक लम्बी होती है। पत्तियां आधार पर 2–3 सेमी. तक चौड़ी होती हैं। लगभग 45–50 सेमी0 लम्बे व मजबूत डण्ठल के ऊपरी छोर पर लम्बे–फैले हुए गुच्छे में पुष्प छत्रक लगते हैं। हल्के भूरे या हरे–सफेद रंग के फूलों के दलचक्र एवं दलपत्र मिलकर लम्बी घंटी के आकार की बन्द संरचना (पेरिएन्थ) बनाते हैं जिसकी नोंक वक्राकार मुड़ी होती है। फल सम्पुटिका (कैप्सूल) त्रिकोशिकीय, 1.5–2 सेमी0 लम्बी तथा दोनों किनारों पर पतली होती है। फली के प्रत्येक कोष में काले रंग के 6–9 चपटे बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;ksx

इसमें 'सिलेरिन–ए और सिलेरिन–बी' नामक दो ग्लुकोसाइड्स पाये जाते हैं। इसका शल्कीय कन्द (बल्ब) कफोत्सारक, उत्तेजक, पाचक, मूत्रवर्धक, आर्तव प्रवर्तक एवं अवरोधनाशक होता है। कन्द का अर्क त्वचा पर लगने से तेज खुजली होती है अतः इसके नये कन्द काटकर सुखाने के पश्चात् ही उपयोग करते हैं। सूखे कन्द का सीरप श्लेष्मक एवं पुराने कास (ब्रोंकाइटिस), अस्थमा, स्त्रियों में मासिक धर्म न होने, हृदय शिथिलता, लेप्रोसी, गठियावात एवं ड्रॉप्सी में बहुत फायदेमन्द है। ज्यादा मात्रा में इसका प्रयोग वमनकारी, तीव्रदस्तावर एवं चरपरा विषैला होता है। श्वासनली में नजला शोथ तथा जलोदर में इसका अर्क शहद के साथ लेना हितकर है। यह शरीर के भीतरी भाग में पथरी, अवरोध एवं चर्मरोगों में भी आरोग्यकारी है। शरीर मे मस्सा एवं गुखरू समाप्त करने के लिए इसके चूर्ण का प्रलेप (पॉल्टिस) बांधना चाहिए।

—○—

59

vlxa/k ;k v'oxa/kk

foFkkfu;k lkEuhQsjk Mwuy-

***Withania somnifera* Dunal.**

dqy % lksysuslh

vU; izpfyr uke

विन्टर चेरी, इण्डियन जिनसेंग (अंग्रेजी), अश्वकंदिका (संस्कृत), अश्वगन्धा (बंगाली), असगांदी (पंजाबी), अमनगुर, अभिक्किर गदाय (कन्नड़), बाजीगंधा (तेलगू), अमुक्किरम (मलयालम), डोरागुंजा (मराठी), अमुक्कीरा, अश्वगंधाय (तमिल), सीन्थयाना, असन धोता (गुजराती)

igpku

यह बहुवर्षीय खरपतवार भारत के समूचे गर्म क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके शाकीय झाड़ीनुमा 60–125 सेमी0 ऊंचे पौधे सूखे मौसम में ज्यादा पनपते है। सड़क व रेलपथों के किनारे खाली पड़ी भूमियों तथा पुराने बागों में यह खूब दिखता है।

चित्र–58 v'oxa/kk ¼foFkkfu;k lkEuhQsjk½
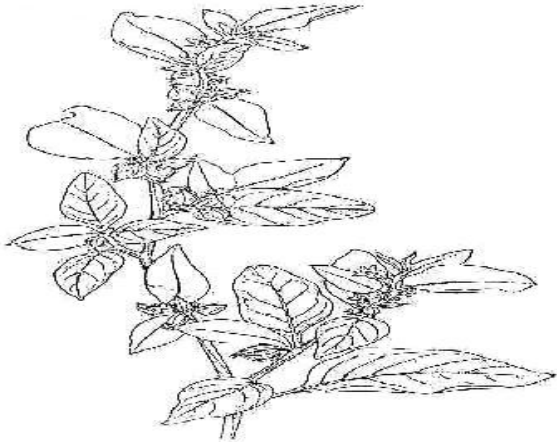
तना एवं शाखायें हल्की हरी तथा सफेद रोमों से ढ़के रहते हैं। जड़ मोटी–मूसलादार होती है। पत्तियां एकांतर, अण्डाकार, नुकीली, लगभग 10 सेमी0 लम्बी एवं मांसल दल वाली होती हैं। इसमें फूल सालभर देखे जा सकते हैं। लगभग एक सेमी0 लम्बे, गोल, द्विलिंगी एवं पीताभ हरे रंग के फूल पत्तियों के अक्ष से 20–25 की संख्या में गुच्छे में आते हैं। दल चक्रों के आपस में जुड़े होने के कारण फूल हरे रंग के फल की तरह दिखते हैं। फल (बेरी) लगभग 6 मिमी0 व्यास के गोल, लाल एवं चिकने होते हैं जो झिल्लीदार दल चक्रों से ढ़के रहते है। फल में पीले रंग के चपटे बीज निकलते हैं।

vk"k/kh; mi;ksx

इसके पत्ते, फल, बीज एवं मूसलादार सूखी जड़ औषधीय गुण वाले होते हैं। इसकी जड़ में 'सोम्नीफेरिन' 'विथाफिरिन' एवं 'विदानिनाइन' नामक क्रियाशील क्षाराभ पाये जाते हैं। पत्तियों का कटु अर्क या क्वाथ उदर कृमि निकालने एवं बुखार में बहुत असरकारी होता है। दुःखी आंख, खाज–खुजली, फोड़ा, कानदर्द, अल्सर तथा हथेली व तलवों की सूजन में पत्तियों का अर्क या पत्ती एवं जड़ का आयन्टमेन्ट बनाकर लगाने से बहुत आराम मिलता है। हरी पत्तियों का लेप गांठों व फेफड़ों की सूजन तथा क्षय के उपचार के लिए किया जाता है। फल एवं बीज मूत्रवर्धक तथा निद्राकारी होते हैं। इसकी जड़ शक्तिवर्धक, मूत्रल, वीर्यजनक, कामोत्तेजक, मदकारी, गर्भपातक तथा अवरोध नाशक होती है। सामान्य एवं पौरूष दुर्बलता, वात विकार, पक्षाघात, जोड़ों की सूजन व दर्द, अनियमित रक्तचाप, अपच, मंदाग्नि, सिर चकराने एवं खांसी व हिचकी आने पर जड़ का चूर्ण शहद या दूध के साथ सेवन करना चाहिए। ग्रन्थिवात, अल्सर, सूजन, खरोंच आदि में जड़ के चूर्ण का प्रलेप हितकर होता है। गर्भिणी एंव प्रसूता स्त्री में कमजोरी एवं बदनदर्द, प्रदर तथा गर्भाशय व जननांग से रक्तस्राव होने पर जड़ का चूर्ण गाय के दूध एवं शहद के साथ सेवन से बहुत फायदा मिलता है और प्रसवा के स्तनों में दूध ज्यादा बनता है। इसके नियमित सेवन से मानव मे रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

—o—

60 NksVk xks[k: ;k NksVk Hkks[kjk

tSfUFk;e LVªqefj;e fy-

***Xanthium strumarium* L.**

dqy % dEikWftVh

vU; izpfyr uke

बर–वीड, कॉकिल बर (अंग्रेजी), बिच्छूघास, खगरा, कुत्ताघास (हिन्दी), अरिष्टा (संस्कृत), बनोकारा (बंगाली), सुंगटू (पंजाबी), शंकेश्वर (मराठी), मारूलुटगे (तेलगू), मारलूमुट्टा (तमिल)

igpku

यह खरीफ मौसम में खेतों की पुरानी मेड़ों, परती भूमियों तथा नहरों, नदियो एवं सड़कों व रेलपथों के किनारे बीज से पनपने वाला खरपतवार बहुवर्षीय प्रकृति का होता है।

चित्र–59 NksVk xks[k: ¼tSfUFk;e LVªqefj;e½
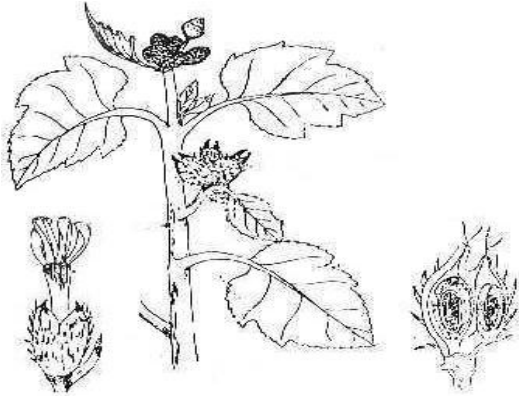
इसका तना 30–90 सेमी0 ऊंचा तथा खुरदुरा होता है। पत्तियां हृदयाकार, त्रिपालीय, कठोर रोमिल तथा किनारों पर दांतेदार होती हैं। एक ही पौधे में नर

एवं द्विलिंगी पुष्प अलग–अलग अक्षों पर आते हैं। पौधे के ऊपरी हिस्से में द्विलिंगी पुष्प आते हैं जो नपुंसक होते हैं। नर पुष्प नलिकाकार एवं हल्के बैंगनी रंग के होते हैं। पौधे के निचले हिस्से में मादा पुष्प लगते हैं। पुष्प में दलपत्रों के स्थान पर दो दलपत्रक होते हैं। प्रत्येक अण्डाशय से दो अण्डाकार फली सम्पुटिकायें बनती हैं जो मजबूत हुकनुमा कांटों से ढ़की होती हैं। फली (एकीन) के ऊपर दो चोंचनुमा कठोर सहपत्रों का आवरण होता है। इसका प्रसारण बीज से होता है।

vk"k/kh; mi;ksx

इसकी पत्तियों में 'आक्जेलिक अम्ल' एवं बीजो में 'जेन्थोस्ट्रुमेरिन' नामक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। इसका पौधा बलवर्धक, ग्राही, मूत्रवर्धक, स्वेदकारी, लालाप्रसेक जनक, शांति प्रदायक, कोमलकारी एवं लसीका ग्रन्थि विकार नाशी होता है। पत्तियों का कटु पौष्टिक टॉनिक मलेरिया बुखार मे बहुत फायदेमन्द होता है। महिलाओं में अनियमित मासिक स्राव, श्वेतप्रदर एवं मूत्रांगो से मवाद निकलने पर पत्तियों का क्वाथ बहुत लाभदायक है। तंत्रिका नसों में दर्दभरा खिंचाव एवं लसीका ग्रन्थियों में सूजन होने पर पत्तियों का चूर्ण फांकना चाहिए। जहरीले कीड़े–मकोड़े के काटने पर ताजी पत्तियों एवं जड़ का अर्क लगाने से विष का प्रभाव समाप्त होता है। फोड़े–फुंसी, दर्दभरी सूजन, पुराने घाव आदि मे पत्ती एवं जड़ का प्रलेप हितकर होता है। इसकी जड़ें तीव्र स्वेदकारी, कटुपौष्टिक, अवरोध नाशक, मूत्रल, मदकारी एवं गर्भपातक गुण वाली होती हैं। गठियावात, क्षय एवं बच्चों में दुर्बलता होने पर जड़ों का क्वाथ हितकर होता है। इसके फल मूत्रवर्धक, पौष्टिक, स्वेदकारी, शांतिप्रदायक एवं शीतल होते हैं। बीज मूत्रवर्धक एवं निद्राकारी होते हैं।

— o —

lUnHkZ lkfgR;

(1) गौर, जी0 एस0 एवं दीपक गंगवार (2003). *औषधीय एवं सुगंधित पौधों की कृषि तकनीक, कानपुर*

(2) चोपड़ा, आर0 एन0; एस0 एन0 नागर एवं आई0 सी0 चोपड़ा (1956). *ग्लोसरी आफ इण्डियन मेडिसिनल प्लांट्स, नई दिल्ली।*

(3) भण्डारी, चन्द्रराज (1957). *वनौषधि चन्द्रोदय,* वाराणसी।

(4) ब्रह्मवर्चस (2003). *वनौषधि* हरिद्वार।

(5) दस्तूर, जे0 एफ0 (1970). *मेडिसिनल प्लान्ट्स आफ इण्डिया एण्ड पाकिस्तान,* मुम्बई।

(6) जैन, एस0 के0 (1981). *ग्लिम्पसेस आफ इण्डियन इथनोबॉटनी,* नई दिल्ली।

(7) जैन, एस0 के0 (1983). *मेडिसिनल प्लांट्स,* नई दिल्ली।

(8) कीर्तिकर, के0 आर0 एवं बी0 डी0 बसु (1935). *इण्डियन मेडिसिनल प्लांट्स,* इलाहाबाद।

(9) महेश्वरी, पी0 एवं उमराव सिंह (1965). *डिक्सनरी ऑफ इकोनॉमिक प्लांट्स इन इण्डिया,* नई दिल्ली।

(10) पाडुआ लुईविना, एस0 डी0; ग्रिगोरिओ सी0 लुगाड एवं जुआन वी0 पांचो (1977). *हैण्डबुक आफ फिलीपीन्स मेडिसिनल प्लांट्स* (भाग–1), लास बानोस, फिलीपीन्स।

(11) सुन्दर राज, डी0 एवं जी0 बालसुब्रमण्यम (1959). *गाइड टु इकोनॉमिक प्लान्ट्स आफ साउथ इण्डिया,* मद्रास।

(12) त्रिवेदी, के0 पी0 (1967). धन्वन्तरि वनौषाधि विशेषांक (भाग–1) अलीगढ़।

(13) कात्यायन, महर्षि अभय (2001). *चमत्कारी जड़ी–बूटियाँ* , आगरा आभार।

(14) राव, वी0 एस0 (1992). *प्रिंसिपिल्स आफ वीड साइन्स.* नई दिल्ली।

(15) सिंह, एस0 एस0 (1991). *प्रिंसिपिल्स एण्ड प्रेक्टिसेस आफ एग्रोनॉमी,* नई दिल्ली।

(16) ओमप्रकाश (1974). *खरपतवार नियंत्रण.* मेरठ।